ज्ञानामृत

फरवरी, 1980
वर्ष 15 ❋ अंक 9
मूल्य 1.75

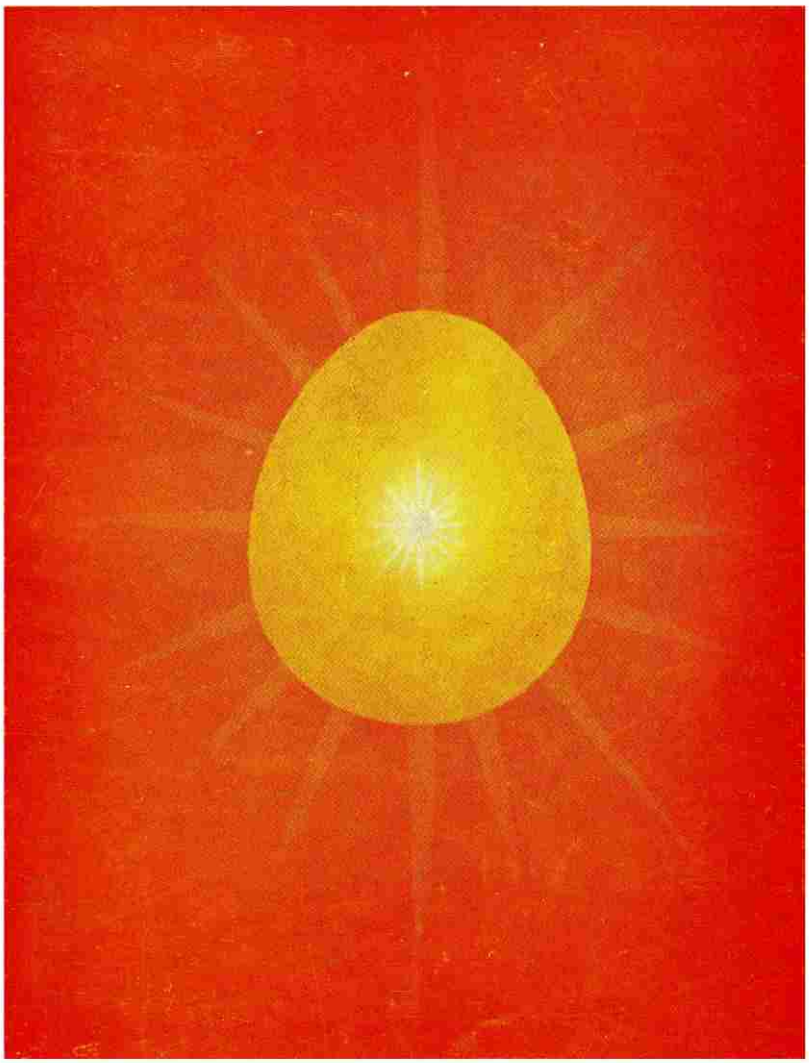

शिव परमात्मा की महिमा

❀ ब्रह्मा, विष्णु और शंकर के भी रचयिता त्रिमूर्ति हैं ❀ सतयुगी राज्य-भाग्य के दाता स्वयं अभोक्ता हैं ❀ नर को श्री नारायण बनाने वाले हैं ❀ सर्व गुणों के सागर और दाता हैं ❀ विश्व के परमपिता, शिक्षक और सतगुरु हैं ❀ प्रजापिता ब्रह्मा के नर रूप में प्रवेश कर गीता ज्ञान दिया ❀ स्थापना, विनाश और पालना करने वाले हैं ❀ ज्ञान सागर, पतित पावन, पवित्रता, सुख-शान्ति आनन्द के सागर हैं।

वर्ष १५ अंक ९ फरवरी १९८० मूल्य १.७५

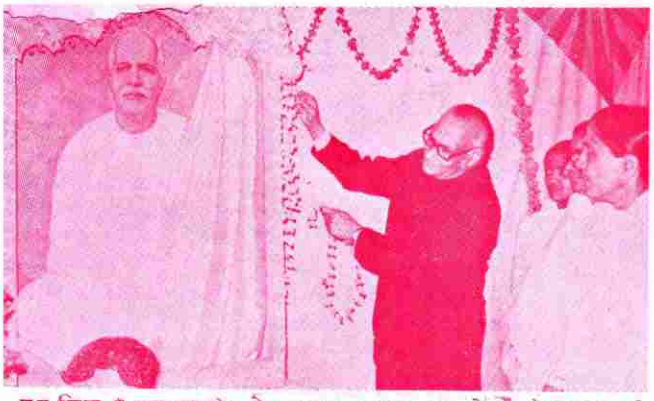

इस चित्र में प्रस आयोग के अध्यक्ष भ्राता पा० के० गोस्वामी नई दिल्ली 'कम्यूनिटी हाल' में मनाये गये 'स्मृति दिवस' के अवसर पर "पिताश्री ब्रह्मा" के चित्र का अनावरण कर रहे हैं।

यह चित्र नई दिल्ली 'कम्यूनिटी हाल' में आयोजित 'पिता श्री स्मृति दिवस' समारोह के अवसर का है जिसमें प्रेस आयोग के चेयरमैन भ्राता पी० के० गोस्वामी, जस्टिस कृष्णाअय्यर तथा अन्य धर्मों के नेता पधारे थे जो मंच पर ब्रह्माकुमारी बहनों के साथ बैठे दिखाई दे रहे हैं।

यह चित्र वाराणसी सेवा केन्द्र द्वारा 'गाँधी भवन हाल' में आयोजित 'स्मृति दिवस समारोह' के अवसर का है। पांतजली योग संस्थान के निर्देशक भ्राता दत्तारावं अपने विचार प्रकट कर रहे हैं तथा मंच पर ब्र० कु० कृष्ण व मधु बैठी हैं।

यह चित्र अम्बाला में मनाय गये 'स्मृति दिवस' समारोह के अवसर का है। सनातन धर्म कालेज के प्रिंसिपल भ्राता आर० पी० बिज (मुख्य अतिथी) मंच पर बैठे हैं तथा ब्र० कु० कृष्णा प्रवचन कर रही हैं।

इस चित्र में नेपाल के भूमि सुधार सहायक मंत्री भ्राता सन्तकुमार चौधरी 'स्मृति दिवस समारोह' के अवसर पर अपने विचार प्रकट कर रहे हैं। उनके साथ सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता वासुदेव शर्मा, राज्य सभा के स्थाई समीति के सदस्य व अन्य भाई बहन बैठे हैं।

यह चित्र सिकन्दराबाद में मनाये गये 'स्मृति दिवस' समारोह के अवसर का है। मंच पर आंध्र प्रदेश विधान सभा के स्पीकर के साथ वहाँ के बहन-भाई बैठे हैं।

←

'अव्यक्त दिवस समारोह' के अवसर पर कटक में ब्र० कु० कमलेश प्रवचन कर रही हैं तथा मंच पर न्यायधीश कुञ्ज-बिहारी पण्डा तथा उसकी धर्म पत्नी के साथ अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें बैठी हैं।

अमृत-सूची

१.	त्योहारों में श्रेष्ठ—शिवरात्रि (सम्पादकीय)	१	
२.	शिव, ब्रह्मा, और शिवरात्रि	५	
३.	भारत देश की महिमा महान (गीत)	७	
४.	जिसका साथी है भगवान	८	
५.	नूतन वर्ष का अभिनन्दन	१०	
६.	हम उड़ के चले जाएँ, उस प्यारे से वतन में (गीत)	११	
७.	अद्वैतवादियों की उलझन	१२	
८.	सेवा समाचार (चित्रों में)	१४	
९.	जब मैंने उनसे भेंट की	१७	
१०.	यूँ हिम्मत मत हारो तुम (कविता)	१९	
११.	ब्रह्मा भोजन	२०	
१२.	विश्व-शान्ति	२२	
१३.	मुझे बचा लो (कविता)	२३	
१४.	कांचन मृग	२४	
१५.	मानव की प्यास	२६	
१६.	ज्ञान-मार्ग में चार का महत्त्व	२७	
१७.	सोलह कला सम्पूर्ण बनने की युक्तियाँ	२८	
१८.	अपराधी कौन (नाटक)	२९	
१९.	सेवा समाचार (चित्रों में)	३५	
२०.	मेरे जीवन का सुहावना लक्ष्य कभी विचलित न होने पाये	३६	
२१.	वाराणसी में नेपाल नरेश एवं महाराना से प्रजापिता ब्र० कु० ई० वि० विद्यालय के प्रतिनिधि मण्डल की भेंट	३९	
२२.	एक बार की बात	४१	
२३.	बारहमासी	४३	
२४.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	४५	

सम्पादकीय

त्योहारों में श्रेष्ठ--शिवरात्रि

वर्तमान युग समाचार, प्रसार और प्रचार युग है। आज इतनी अधिक संख्या में समाचार पत्र और पत्रिकाएँ हैं कि विश्व के कोने-कोने का ही नहीं बल्कि आकाश मण्डल में होने वाले वृत्तान्तों का भी झट-से समाचार मिल जाता है। यह युग प्रसार युग भी है। रेडियो, टेलीविज़न, सेटेलाइट, टेलेक्स, टेलोप्रिन्टर आदि के द्वारा झट से सन्देश अथवा समाचार प्रसारित किया जा सकता है। इसी प्रकार यह प्रचार युग भी है। हरेक वस्तु का व्यापारी और हरेक संस्था, अनेक साधनों से अपनी वस्तु अथवा अपने विचार का प्रचार करते हैं।

सब समाचार परन्तु परमात्मा का समाचार नहीं

परन्तु यह कैसी विडम्बना है कि इतने प्रचुर, विविध एवं सशक्त साधन उपलब्ध होने पर भी मनुष्य को अन्य सभी बातों का समाचार तो मिलता है किन्तु कहीं भी परमपिता परमात्मा का सुबोध परिचय नहीं मिलता। आज "कौन क्या है ?"(Who is who ?) इस विषय पर डायरेक्टरियाँ (Directories) छपी हुई हैं जिनमें सभी विशेष, महान अथवा प्रभावशाली व्यक्तियों के नाम और उनका संक्षिप्त परिचय दिया गया है परन्तु कहीं भी सबसे विशेष, सब से महान्, सब से अधिक प्रभावशाली अथवा अत्यन्त विशिष्ट (Top most V. I. P.) परमपिता परमात्मा के बारे में तो कुछ भी उल्लेख नहीं है। टेलीफ़ोन डायरेक्टरियों में हर नगर के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों का नाम और पता दिया हुआ है परन्तु परमात्मा का नाम और पता तो किसी भी शहर की डायरेक्टरी में नहीं है। आग (Fire) पुलिस (Police) इत्यादि आवश्यक सेवाओं के टेलीफ़ोन नं० सर्वप्रथम दिये हुए हैं परन्तु काम, क्रोध की आग बुझाने वाले

दुःख तथा अशान्ति से रक्षा करने वाले परमपिता परमात्मा से कहाँ और कैसे सम्पर्क किया जाय—इसका तो कहीं भी उल्लेख नहीं है ! स्पष्ट है कि आज जो सूचना, समाचार या शोध-सामग्री है, उसमें परमात्मा का कुछ भी बोध नहीं है।

आज ज्ञानकोष (Encyclopaedias) छापे हुए हैं जिनमें विश्व-भर के सभी विषयों पर सार रूप में विशेषज्ञों ने कुछ लिखा हुआ है और हर भाषा के शब्दकोश (Dictionaries) भी असंख्य मात्रा में छपी हुई हैं परन्तु फिर भी मनुष्य परमात्मा के बारे में अनभिज्ञ है। पशु-पक्षियों, जीव-प्राणियों, वस्तुओं-विषयों पर पुस्तकों के भण्डार भरे पड़े हैं, यहाँ तक कि समुद्र तल पर मिलने वाले पौधों और पत्थरों से लेकर चाँद, मंगल, बृहस्पति तक के बारे में और उस से भी पार तारामण्डल के विषय में भी जानकारी मिलती है किन्तु परमात्मा के बारे में वैसी ही स्पष्ट, विरोध-रहित (Non-Controversial) जानकारी नहीं मिलती। आज कितने ही विषयों पर हज़ारों-लाखों लोग खोज कर रहे हैं परन्तु किसी के पास भी उस प्रभु का, परमप्रिय परमपिता का तो रहस्य उपलब्ध है नहीं। रहस्य-उपलब्धि की बात तो छोड़िये, आज तो विश्व के अनेक देशों में सूचना जन-समूह परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास भी नहीं रखता। इस सब का कारण क्या है ? इतना ज्ञान-भण्डार होते हुए, प्रचार साधन होते हुए भी परमात्मा का ज्ञान अथवा परिचय क्यों नहीं ?

भारत के बाहर के मतों पर विचार

यदि आप भारत से बाहर के देशों और मतों पर विचार करें, वहां तो चर्चा ही कुछ और है। ईसाई लोग कहते हैं कि क्राईस्ट भगवान् का पुत्र था। अच्छा, यदि वह भगवान् का पुत्र था तो भगवान् कौन है और हमारा उससे क्या सम्बन्ध है ? मुसलमान लोग कहते हैं कि मुहम्मद खुदा का रसूल अथवा पैगम्बर है। परन्तु वह खुदा कौन है, कैसा है, कहाँ है, उससे हम कैसे सम्पर्क करें, इस की जानकारी तो कहीं भी नहीं मिलती। भारत तथा विदेशों में बुद्ध धर्म को देखें तो कहते हैं कि बुद्ध से जब भगवान् के बारे में पूछा गया तो उसने उत्तर नहीं दिया। इस विषय पर वह चुप रहा। दूसरी ओर वे कहते हैं कि बुद्ध स्वयं ही भगवान् है।

अविनाशी खण्ड भारत में सनातन धर्म पर विचार

जब हम इस प्रकार विचार करते हैं तो केवल भारत जो विश्व का सर्वप्राचीन खण्ड है, में आदि सनातन धर्म, जो सर्वप्राचीन धर्म है, की ओर हमारा ध्यान जाता है। इस धर्म के जो पूजा-स्थान हैं, वे अतिप्राचीन हैं। उनमें मुख्य रूप से हमें दस-बारह पूजनीय अथवा महिमा-योग्य मूर्तियाँ मिलती हैं। आइये, हम उन पर विचार करें और यह जानने की कोशिश करें कि उनमें से कोई परमपिता परमात्मा की प्रतिमा है या नहीं।

इससे पूर्व हम अपने मन में यह समझ लें कि परमात्मा के बारे में प्रायः लोग चार बातों के बारे में एकमत हैं। (१) **परमात्मा ज्योतिस्वरूप है** (२) **वह जन्म-मरण से न्यारा**, अनादि और अविनाशी, कालातीत है। इसका भाव यह हुआ कि उस प्रकाशस्वरूप परमात्मा का कोई शरीर नहीं है क्योंकि शरीर वाले का आदि और अन्त, जन्म और मरण होता है (३) **वह सभी का माता-पिता है**, कोई माता-पिता नहीं है। इससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि न उसका माता (स्त्री) रूप है, न पिता (पुरुष रूप) और उसकी काया है ही नहीं। जब ऐसा है तो उसकी कोई पत्नी या लौकिक नाते से पुत्र आदि होने का भी प्रश्न नहीं उठता। (४) वह परमपवित्र है, अर्थात निर्विकार है और ज्ञान, शान्ति, आनन्द, प्रेम आदि का सागर तथा दाता है और विश्व का **रचयिता पालक और संहार कराने वाला तथा एक कल्याणकारी है**। वही सदा मुक्ति और युक्ति तथा जीव-मुक्ति का दाता, त्रिलोकीनाथ देवों का देव है।

इन चारों बातों को ध्यान में रखते हुए हम जब ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर—इन तीन पर विचार करते हैं तो हम देखते हैं कि (१) इन्हें ज्योतिस्वरूप या निराकार अर्थात् अशरीरी नहीं कहा जा सकता। दूसरी बात यह है कि पुरुष शरीर वाले इनको माता 'माता' भी नहीं कहा जा सकता। तीसरे, इनके तो क्रमशः स्थापना, विनाश और पालन अलग-अलग कर्त्तव्य हैं, इनमें से किसी के भी तीनों ही कर्त्तव्यनहीं हैं। वे चौथे ये तो देव हैं, 'देवों के देव' नहीं हैं।

इसी प्रकार, जब हम चौथी प्रकार की मूर्तियों— देवी, अम्बा, दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी आदि की मूर्तियों पर ध्यान डालते हैं तो उन्हें आप माता कहें तो भी पिता नहीं कहा जा सकता और 'देवों के देव' तथा प्रकाशस्वरूप, भी नहीं कहा जा सकता। पुनश्च, श्री लक्ष्मी का सम्बन्ध तो श्री नारायण से, पार्वती का सम्बन्ध शंकर से जोड़ा जाता है और सरस्वती को भी ब्रह्मा की पुत्री माना जाता है, अतः इन्हें जगत का रचयिता नहीं कहा जा सकता और परमात्मा तो एक है जबकि ये एक नहीं हैं।

इसके पश्चात यदि हम श्री कृष्ण और श्री राम की प्रतिमाओं पर दृष्टि डालें तो वे भी मर्यादा पुरुषोत्तम तथा दिव्य गुणों से युक्त तो थे परन्तु उनका तो अपना पारिवारिक जीवन था, उनके अपने-अपने पिता तथा शिक्षक आदि भी थे और उन्होंने शारीरिक जन्म लिया तथा देह-त्याग भी किया। उन्हें भी ज्योतिस्वरूप या विश्व का परमपिता या माता नहीं कहा जा सकता।

यदि हनुमान की मूर्ति पर विचार करें तो वे तो श्री राम के सेवक माने जाते हैं, अतः उन्हें भगवान् नहीं कहा जा सकता। यदि गणेश पर विचार करें तो वे भी शिव-सुत ही माने जाते हैं।

इस प्रकार विचार करते-करते आप देखेंगे कि केवल एक ही प्रतिमा ऐसी है जिसे आप अशरीरी (शरीर-रहित) मान सकते हैं और उसे **'ज्योतिर्लिंगम'** भी कहा जाता है, अर्थात न वह पुरुष रूप है, न स्त्री रूप है बल्कि ज्योतिस्वरूप की प्रतिमा है। विश्व को मुक्ति देने वाले परमात्मा की प्रतिमा होने के कारण उसे **'मुक्तेश्वर'** भी कहा जाता है, तीनों लोकों का नाथ होने के कारण **'त्रिभुवनेश्वर'** भी और कालातीत होने के कारण **'महाकालेश्वर'** भी **'बिन्दुरूप'** होने के कारण उसे ही **निराकार** भी कहा जा सकता है और उसे ही **माता-पिता** भी कहा जा सकता है क्योंकि उस का दिव्य ज्योतिरूप है। उसके दिव्य नाम **'शिव'** से ही स्पष्ट है कि वह **'कल्याणकारी'** है। वही ब्रह्मा, विष्णु और शंकर-त्रिदेव के रचयिता अर्थात् देवों के देव भी हैं क्योंकि अमर देवों के भी नाथ होने के कारण वे **'अमरनाथ'** हैं। पुराणवादी लोग मानते हैं कि वे श्रीराम के भी पूज्य **'रामेश्वर'** और श्रीकृष्ण भी पूज्य **'गोपेश्वर'** हैं। शोध कर्त्ताओं ने देखा है कि इस रूप की प्रतिमाएँ विश्व-भर के लगभग सभी देशों में आज भी मिलती हैं। यही एक **सार्वभौम रूप** है जो हिन्दुओं, मुसलमानों, ईसाइयों, सभी को मान्य हो सकता है क्योंकि आत्मा ज्योतिस्वरूप, बिन्दु रूप है तो अवश्य ही आत्माओं के परमपिता का भी ऐसा ही दिव्य रूप होगा।

परन्तु खेद की बात है कि आज इस शिव-पिण्डी का ठीक परिचय न होने के कारण कुछ लोग शिव और शंकर को एक मानने की भूल करते हैं और दूसरे, यह देखते हुए भी कि शिव तो परमपूज्य हैं, शिवोऽहम, अर्थात स्वयं को शिव मानने का पाप अपने सिर पर लेते हैं।

शिव परमधाम-निवासी और गीता ज्ञान दाता

अतः आज इस सत्यता के समाचार के प्रसार और प्रचार की आवश्यकता है कि सभी आत्माओं के सुख और शान्ति के दाता, काम, क्रोधादि अग्नि को बुझाने वाले अथवा इन रोगों को हरने वाले, मुक्ति और जीवन मुक्ति के दाता परमपिता परमात्मा शिव ही हैं जो ज्योतिबिन्दु हैं। गीता में उन्हीं के महावाक्य हैं कि मैं सूर्य, चाँद और तारागण के भी पार परमधाम का वासी हूँ।

आप सोचते होंगे कि गीता-ज्ञान तो श्रीकृष्ण ने दिया था। परन्तु सोचने की बात है कि श्रीकृष्ण तो श्री नारायण ही के बाल्यकाल अथवा किशोरकाल का नाम है परन्तु गीता-ज्ञान देकर नर को नारायण बनाने वाले, 'ज्ञान के सागर', 'देवों के देव' तो एक परमपिता परमात्मा ही हैं। यह विषय विस्तार से समझने के योग्य है कि वही ज्ञान के सागर परमपिता परमात्मा कलियुग के अन्त में धर्म की अति ग्लानि के समय प्रजापिता ब्रह्मा के साधारण मानवी तन में दिव्य प्रवेश करके गीता-ज्ञान द्वारा सतयुगी श्रीकृष्ण अथवा श्री नारायण का सुखमय स्वराज्य स्थापन कराते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा के साधारण तन में अवतरित हुए होने के कारण ही गीता में उनके महावाक्य हैं कि 'लोग मुझे पहचान नहीं सकते' और मुझ अविनाशी को मनुष्य-तन में देख साधारण मानते हैं।

शिवरात्रि वास्तव में उसी परमपिता परमात्मा ही के दिव्य अवतरण की स्मृति दिलाने वाला शुभ

महोत्सव है। त्रिदेव के भी रचयिता, विश्व के परमपिता के दिव्य अवतरण का उत्सव होने के कारण यह सर्वश्रेष्ठ है 'रात्रि' शब्द धर्म-ग्लानि और अज्ञानान्धकार का सूचक है। अब वही समय फिर से चल रहा है। सारे विश्व में परमात्मा के बारे में अज्ञानता है। किसी भी डायरेक्टरी, डिक्शनरी या पुस्तक में परमात्मा का यथा-सत्य बोध नहीं मिलता। आज काम, क्रोधादि विकार तथा आसुरी सम्पदा ही सारे विश्व में फैले हुए हैं। विश्व के महाविनाश के लिये एटम और हाइड्रोजन बम तथा मूसल भी बन चुके हैं। अधर्म के विनाश के साधन एकत्रित होने के साथ, दूसरी ओर, परमपिता शिव प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा फिर से वास्तविक गीता-ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं और उस द्वारा सतयुगी श्रीकृष्ण अथवा श्री नारायण का दैवी स्वराज्य स्थापन कर रहे हैं। यह कार्य पिछले ४३-४४ वर्षों से चल रहा है और निकट भविष्य में सम्पूर्ण होने वाला है। आपको हम परमपिता परमात्मा के दिव्य अवतरण की तथा साथ-साथ श्री कृष्ण के आगामी स्वराज्य की (पेशगी) कोटि-कोटि वधाइयां देते हुए ईश्वरीय निमन्त्रण देते हैं कि आप भी परमपिता परमात्मा के उस अनमोल ज्ञान-ख़ज़ाने तथा सहज राज योग का लाभ लें तथा सम्पूर्ण पवित्रता, सुख-शान्ति का ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार लें। परन्तु याद रहे कि आने वाले महाविनाश से पूर्व 'अब नहीं तो कभी नहीं।'

यह चित्र भावनगर में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम का है। सर्वोच्च न्यायलय के न्यायधीश भ्राता कृष्ण-अय्यर अपने विचार रख रहे हैं। साथ में डिस्ट्रिक्ट सेशन जज व अन्य बहन भाई बैठे हैं।

इस चित्र में नेपाल के भूतपूर्व सहायक मंत्री भ्राता सन्तकुमार चौधरी 'स्मृति दिवस समारोह' के अवसर पर अपने विचार प्रकट कर रहे हैं। उनके साथ सर्वोच्च न्यायालय के न्यायधीश भ्राता वासुदेव शर्मा, राज्य सभा की स्थाई समिति का सदस्य व अन्य बहन-भाई बैठे हैं।

इस चित्र में ब्र० कु० राज नवा शहर में आयोजित 'बाल वर्ष समारोह' में उपस्थित अतिथियों को ईश्वरीय साहित्य भेंट कर रही हैं।

शिव, ब्रह्मा और शिवरात्रि

ब्र० कु० सुधा, दिल्ली.

भारत के प्राचीन संस्कृत साहित्य में लिङ्ग शब्द का प्रयोग ९९.९९% प्रतीक अथवा चिह्न के अर्थ में ही हुआ है। अतः शिवलिङ्ग से शिव के प्रतीक अथवा 'शिव-प्रतिमा' ही का बोध होता है। परन्तु जिन्होंने पृथ्वी का उत्खनन किया है अथवा पुराने खण्डरात या भग्नावशेषों का अध्ययन किया है, उन्हें पाश्चात्य देशों में, जैसे कि रोम में और उसके आसपास के देशों में कुछ वाम मार्गीय पूजा के प्रतीक भी मिले हैं। पाश्चात्य विद्वान वेस्ट्रोप और केनेडी इत्यादि ने अपनी पुस्तकों में यह मत प्रकट किया कि आयरलेण्ड, इंग्लेण्ड, ग्रीस, रोम, असीरिया, अमेरिका, जर्मनी आदि में वाममार्गी लोग थे। वहाँ जो प्रतीक मिलते हैं, उनकी आकृति शिवलिङ्ग से भिन्न है। वहाँ के कुछ लोग पत्थर की उस आकृति के सामने बैठकर टोना-टोटका करते थे। इन विद्वानों के लेखों को प्रामाणिक मानकर भारत के प्रसिद्ध विद्वान गोपीनाथ राव ने भी यह मान लिया कि शिवलिङ्ग की पूजा वाम-मार्गीय है। उन्होंने इस बात को एक ओर ही रख लिया कि भारत में जो प्राचीन शिवलिङ्ग मिलते हैं, उनकी आकृति उपरोक्त पाश्चात्य देशों के प्रतीकों से भिन्न है और यहाँ जो शिव- पूजा होती है, उसका जो विधि-विधान है उसमें अश्लील भावना की कहीं आशंका भी नहीं है। भारतीय सभ्यता और संस्कार का तो आधार ही इन्द्रिय-संयम और ब्रह्मचर्य है।

शिवलिङ्ग के बारे में भ्रान्ति

वास्तव में हमारे विचार में शिवलिङ्ग की पूजा को अश्लील अथवा वाम-मार्गीय मानने के दो कारण हैं। एक तो इसमें लिङ्ग शब्द का प्रयोग है। सभी प्राचीन संस्कृत शब्द कोष कहते हैं कि लिङ्ग शब्द का अर्थ 'प्रतीक' है। दक्षिण भारत में तो आज तक भी शिवलिङ्ग शब्द शिव-प्रतिमा ही के अर्थ में प्रयोग होता है और वहाँ लिङ्ग शब्द को अश्लीलता या वाम-मार्ग के साथ बिल्कुल ही नहीं जोड़ा जाता। बल्कि वहाँ तो आज भी अनेक लोगों के नाम 'लिङ्गराज,' 'लिङ्गस्वामी' आदि होते हैं। उत्तर भारत में 'लिङ्ग' शब्द कहीं-कहीं सारे शरीर के लिये और कहीं पुरुष के शरीर-भाग के लिये प्रयोग होता है। जैसे शिष्ट लोग 'संडास' 'टट्टीखाना', 'पायखाना' आदि शब्दों का प्रयोग न करके 'शौचालय' शब्द का प्रयोग करते हैं और अंग्रेज़ी में भी 'लेट्रीन' (Latrine), यूरीनल (Urinal) आदि शब्दों का व्यवहार न करके 'टायलेट्स्' (Toilets), डब्ल्यु० सी० (W.C.) या 'एमेनिटोस्' (Amenites) आदि शब्दों का प्रयोग करते हैं, वैसे ही चूंकि यह शब्द प्रतीक का अर्थ लिये हुए है और यह इन्द्रिय पुरुष की विशेष है, इसलिये शिष्ट लोगों ने पुरुष के इस शरीर भाग के लिये केवल 'इन्द्रिय' शब्द या 'लिङ्ग' शब्द का प्रयोग करना शुरू कर दिया जिससे आगे चलकर लोगों में भ्रान्ति उत्पन्न हो गयी।

दूसरा कारण यह है कि चित्रकारों ने शिव को पुरुष रूप में चित्रित करना शुरू किया अथवा 'शिव' और 'शंकर' को एक मान लिया। चित्रकारों को यह भाव व्यक्त करने थे कि शिव ज्ञान-चक्षु वाले हैं, वे 'धर्म' आरुढ़ अथवा स्वधर्म-स्थित हैं, वे त्रिताप को हरने वाले हैं वे ज्ञान-गंगा धारण किये हुए हैं, आदि-आदि; इन सभी भावों को चित्रित करने के लिये उन्होंने शिव को पुरुष रूप देकर, मस्तक में तीसरा नेत्र दे दिया, बैल पर उनकी सवारी दिखाकर उन्हें धर्म-स्थित अंकित किया, उनके हाथ में त्रिशूल देकर उन्हें त्रिताप-हारी (हर-हर) प्रगट किया और सिर पर गंगा चित्रित करके उन्हें 'गंगाधर' व्यक्त किया। फिर शिवलिङ्ग को इसी शंकर का प्रतीक मानकर वाम-मार्गीय पूजा मान लिया! अतः ये मानव मात्र की अज्ञानता ही है कि उन्होंने ऐसा किया।

शिवलिङ्ग शिव ही का प्रतीक

वस्तुः प्राचीन अनेक ग्रन्थों में 'लिङ्ग' शब्द का अर्थ स्पष्ट किया हुआ है। उदाहरण के तौर पर कश्मीर के प्रसिद्ध संस्कृत-विद्वान अभिनव गुप्त ने

तन्त्रलोक में स्पष्ट कहा है—

लिङ्ग शब्देन विद्वांसः सृष्टि संहारकारणम् ।
लयादागमनात् चाहुर्भावानां पदमव्ययम् ॥

अर्थात विद्वान कहते हैं कि लिङ्ग शब्द से सृष्टि के संहार और उत्पत्ति का बोध होता है।'

इसी प्रकार अन्यत्र कहा गया है कि जो सृष्टि का संहार कराता है और पुनः उसकी सृष्टि कराता है, उसे लिङ्ग कहते हैं—

लयं गच्छन्ति भूतानि संहारे निखिलं यतः ।
सृष्टि काले पुनः सृष्टिस्तस्माल्लिङ्गमुदाहृतम् ॥

एक जगह तो स्पष्ट ही कहा गया है कि परे से परे जो परमात्मा है, वही लिङ्ग है—

परात्परं परमात्मकलिङ्गम् (लिङ्गाष्टकस्तोत्रम्)

अतः हमें यह स्पष्ट मालूम होना चाहिये कि शिव-लिङ्ग परमात्मा शिव ही का प्रतीक है और शिवरात्रि परमपिता शिव के प्रजापिता ब्रह्मा के तन में दिव्य अवतरण का वाचक है।

ब्रह्मा के बारे में भ्रान्ति

ऊपर हमने प्राचीन ग्रंथों से उद्धरण देकर स्पष्ट किया है कि लिङ्ग शब्द वास्तव में परमात्मा 'शिव' अथवा उसके प्रतीक का वाचक है और कि उसके विषय में जो लोग वाम-मार्ग की भावना रखते हैं वे भ्रान्ति में हैं। ऐसी ही अनेक भ्रान्तियाँ ब्रह्मा के बारे में हैं। ब्रह्मा की चार मुखों वाली प्रतिमाएँ देखकर लोग समझते हैं कि ब्रह्मा जी चार मुखों वाले थे। परन्तु जिन शास्त्रों को वे मानते हैं, स्वयं उनमें ही 'चार मुखों' की जो व्याख्या की गयी है, उसे समझाने से वे इस भ्रान्ति का शिकार होने से बच सकते हैं। इनके चतुर्मुख की एक व्याख्या इस प्रकार की गयी है—

ऋग्वेदादिप्रभेदेन कृतादियुगभेदतः ।
विप्रादिवर्णभेदेन चतुर्वक्त्रं चतुर्भुजम् ॥

अर्थात ऋग्वेदादि चारों वेद, कृत इत्यादि चारों युग और ब्राह्मणादि चारों वर्णों के प्रतीक इनके चारों मुख और चारों भुजाएँ हैं। स्पष्ट है कि चूँकि ब्रह्मा नाम वाली आत्मा को चारों युगों में इस सृष्टि-मंच पर पार्ट अथवा काम एवं कर्म होता है तथा चूँकि इनके द्वारा दिये गये ज्ञान को धारण करने या न करने के आधार पर ही चार वर्ण बनते हैं, इसलिये ही इनके चार मुख और इनकी चार भुजाएँ दिखाई जाती हैं। पुनश्च, ब्रह्माजी द्वारा परमात्मा शिव ने चार विषय पढ़ाये (१) ईश्वरीय ज्ञान (२) सहज राजयोग (३) दिव्यगुणों की धारणा और (४) ईश्वरीय सेवा। वास्तव में यही चार विद्याएँ ही चार वेद हैं परन्तु बाद में लोगों ने ऋक् आदि ग्रंथों को चार वेद मान लिया और यह समझ लिया कि ब्रह्मा जी ने यही चार वेद पढ़ाये थे !

अन्यत्र ब्रह्मा जी के चार मुखों की व्याख्या करते हुए कहा है—

अरुणादित्यसंकाशं चतुर्वक्त्रं चतुर्मुखम् ।
यतुर्वेदमयं देवं धर्मकामार्थमोक्षदम् ॥

अर्थात ब्रह्मा के बाल सूर्य के समान हैं और चार सिर तथा चार मुख धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के देने वाले हैं। दूसरे शब्दों में हम यों कह सकते हैं कि ब्रह्मा जी द्वारा चारों वरदानों की प्राप्ति होती है इसलिये उन्हें चतुर्मुखी चित्रित किया जाता है।

ब्रह्मा जी के चार हाथों में से एक में पुस्तक, दूसरे में माला, तीसरे में कमण्डल और चौथे में चरुपात्र दिखाया जाता है। पुस्तक वास्तव में 'ज्ञान' का प्रतीक है, 'माला' ईश्वरीय स्मृति का, 'कमण्डल' अमृत का अथवा स्वच्छता एवं पवित्रता का और 'चरुपात्र यज्ञ का अथवा 'स्वाहा' का। इन प्रतीकों से भी स्पष्ट है कि ब्रह्माजी के ज्ञान, पवित्रता, त्याग, तथा ईश्वरीय स्मृति होने के कारण अथवा उन द्वारा इनकी शिक्षा दिये जाने के कारण ही इनके चार हाथ दिखाये जाते हैं। उन द्वारा यह कार्य कराया परमपिता परमात्मा शिव ने ही, यह बात लोगों को ज्ञात नहीं है। वे मानते हैं कि ब्रह्माजी तो देवता हैं, वे मनुष्य रूप में नहीं थे। परन्तु उन्हें मालूम होना चाहिये कि शास्त्रों में शिव के 'पशुपति' नाम की व्याख्या करते हुए पहले तो यह कहा गया है कि सभी जीव पशु हैं और शिव पशुपति हैं और फिर यह कहा गया है कि ब्रह्मा भी 'पशु' हैं।

पशुपतिरहङ्कारावृष्टः; ससारी जीवः स एव पशुः। सर्वज्ञः पन्चकृत्यसम्पन्नः सर्वेश्वर ईश्वः पशुपतिः। के पशव इति पुनः सः तमुवाच जीवाः पशवः उक्ताः। तत्पतित्वात्पशुपतिः।···

अर्थात अहंकार से घिरा हुआ संसारी जीव 'पशु' है। सर्वज्ञ, पन्चकृत्य सम्पन्न, सर्वेश्वर, ईश पशुपति

हैं। कोप पशु है, अतः इसके आधीन जीव पशु है। इन जीवों का स्वामी पशुपति हैं। उनसे पूछा गया कि जीव क्यों पशु है ? तो उन्होंने उत्तर दिया—

तृणाशिनो विवेकहीनाः परप्रेष्याः कृष्यादिकर्मसु-नियुक्तः सकलदुःखसहाः स्वस्वामिनध्यताना गवादयः पशवः। यथा तत्स्वामिन सर्वज्ञ ईशः पशुपतिः॥

अर्थात जिस प्रकार तृण या घास खाने वाले, विवेकहीन, दूसरों से काम में लाये जाने वाले, खेती-बाड़ी के काम में जोते जाने वाले, सब प्रकार का दुःख सहने वाले, अपने स्वामी से बांधे जाने वाले पशु हैं, इसी प्रकार जीव पशु है, और उनका स्वामी—परमात्मा—पशुपति है।

इस प्रकार 'पशु' की व्याख्या करने के बाद अब ब्रह्माजी के बारे में कहा है कि वे भी 'पशु' अर्थात बद्ध जीव हैं—

ब्रह्माद्यास्थावरान्ताश्च पशवः परिकीर्तिताः।
तेषां पतित्वाद्विश्वेषः भवः पशुपतिः स्मृतः॥

अर्थात ब्रह्मा से लेकर अचल वस्तुओं तक सभी पशु हैं। उनका पति होने के कारण तमः प्रधान जीवों को भी पशु कहा गया है। परमात्मा उनके स्वामी होने से पशुपति है।

स्पष्ट है कि प्रजापिता ब्रह्मा भी मुक्ति एवं जीवनमुक्ति प्राप्त करने से पूर्व एक साधारण मनुष्य थे जो अपने कर्मों के बन्धन में बंधे हुए थे और विकारों के आधीन थे और ज्ञान अथवा विवेक से रहित थे। तब परमपिता शिव, जो ही पशुपति हैं, ने उनके तन में दिव्य प्रवेश करके उन द्वारा संसार को चार प्रकार की विद्या दी, उससे चारों वर्ण स्थापित हुए, मनुष्यमात्र को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष मिला और फिर से चतुर्युग का चक्र चला। शिवरात्रि उसी वृत्तान्त की सूचक है।

गीत

भारत देश की महिमा महान

ले० बी. के. मोहनलाल (अमृतसर)

(स्थाई) भारत देश की महिमा महान
इसमें आते शिव भगवान
विश्व का यही है तीर्थ महान
शिव पिता का जन्म स्थान
भारत देश की·····

(१) सतयुग में सोने की चिड़िया
यही भारत कहलाता था
लक्ष्मी नारायण के राज्य में
दूध की नदियां बहाता था
भारत माँ की थी ऊँची शान
इसमें आते शिव भगवान

(२) सुख शांति पवित्रता का
अखुट यहाँ खजाना था
हीरे जवाहरों के महलों वाला
यही स्वर्ग सुहाना था
प्रेम की मुरली की बजती थी तान
इसमें आते शिव भगवान

(३) धर्म भाषा गोरे काले की
थी ना यहाँ पर कोई लड़ाई
मानव तो क्या जानवर भी यहाँ
रहते थे होकर भाई भाई
हर चेहरे पे थी मधुर मुस्कान
इसमें आते शिव भगवान

जिसका साथी है भगवान

ले०—ब्र० कु० आशा (नीमच सेवाकेन्द्र इन्चार्ज)

पथ कितना भी कठिन हो, सैंकड़ो दुर्बलताऐं आवें परन्तु महावीर अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होते, जैसे एक नन्हा सा दीप भयंकर आंधी और तूफ़ान की परवाह किये बिना ही अंधकार से जूझता ही रहता है। यह जीवन भी एक दीप के समान है तो अवश्य ही हमारे सामने भी अनेक प्रकार के माया रूपी आँधी-तूफान तो आवेंगे ही किन्तु निरन्तर इन तूफ़ानों से संघर्ष कर एवं जूझकर ही हम अपने सर्वोत्तम वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। वर्तमान युग के घिनौने और छी-छी वातावरण में, धैर्य और साहस तोड़ देने वाली इन भीषण परिस्थितियों के सम्मुख अगर हम कदम-२ पर पिता परमात्मा (बाप-दादा) को साथी बनाकर कर्म करेंगे तो तूफ़ानों एवं विपरीत परिस्थितियों पर सहज ही विजय प्राप्त कर वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त करने में सफ़ल होंगे।

किन्तु पिता परमात्मा को साथी बनाने के लिए सर्वप्रथम स्वयं को परमात्मा के समक्ष समर्पित कर फिर ही पुरुषार्थ करना है तभी हमें अपने कार्यों में सफ़लता की प्राप्ति होगी। वे करुणा के सागर हैं, प्रेम के सागर हैं तथा ज्ञान के सागर हैं उनके हाथों में अपनी जीवन नौका की पतवार छोड़ देने पर, नौका कदापि, पथभ्रष्ट नहीं हो सकती है, लेकिन इसके लिये आवश्यक है कि हम अपनी तरफ़ से चिन्ता छोड़ कर बाप के श्रेष्ठ कार्य का साधन मात्र बन जायें उसमें हमारा कल्याण ही होगा।

यह बेहद का सृष्टि रूपी नाटक एक बना-बनाया खेल है जिसका प्रत्येक पार्ट हमारे कल्याणार्थ ही है, इसमें संशय उत्पन्न होना व्यर्थ है। अतः हर्षित रह हमें सृष्टि रूपी नाटक के प्रत्येक दृश्य को साक्षी हो देखते रहना चाहिए। परमात्मा पर हमें उतना ही अटूट विश्वास होना चाहिए जितना एक बच्चे का अपनी माँ पर होता है।

बापदादा के हाथों में अपने को छोड़ देने पर दुखद घटनाऐं, सुखद बन जाती हैं। श्राप, वरदान में परिवर्तित हो जाता है और विष, अमृत बन जाता है। जब परमात्मा हमारा जीवन साथी है और हमारी जीवन रूपी नैया को इस विषय वैतरणी नदी से पार ले जाने वाला है तो उसकी इच्छा पर अपने को समर्पित कर देने वाली आत्मा प्रत्येक कार्य में सफ़ल होती है। जिस प्रकार एक मुर्दा पानी पर तैरता है पर जिंदा व्यक्ति डूब जाता है। क्या क्षमता है मुर्दे में? कौन सी विशेषता है उसमें? सिर्फ़ यही कि वह लड़ता नहीं, वरन् नदी में अपने को छोड़ देता है। नदी में स्वयं को समर्पित कर देने के कारण ही मुर्दा तैरता रहता है और नदी से बचने का संघर्ष करने के कारण ही जिंदा व्यक्ति डूब जाता है। तैरने की भी तो यही कला है, एक प्रवीण तैराक मुर्दा बनने की कला जान जाता है वह स्वयं को नदी में साँस रोककर ढीला छोड़ देता है, संघर्ष नहीं करता है, परिणाम स्वरूप वह तैरता रहता है क्योंकि जल सदैव किसी भी वस्तु को ऊपर ही फेंकता है, यदि जल के नीचे जाना हो तो संघर्ष करना पड़ता। भँवर में पड़ने पर यदि कोई व्यक्ति बचने के लिए हाथ पैर पीटता है तो वह अवश्य ही डूब जायेगा, क्योंकि मनुष्य की शक्ति, भँवर की शक्ति के आगे दुर्बल है उससे लड़कर वह थकेगा और डूब जायेगा, किन्तु जो भँवर में अपने को निश्चेष्ट छोड़ देता है, भँवर उसे ऊपर फेंक देता है, वह डूबता नहीं। बस इसी तरह जो सर्व कल्याणकारी, सर्वशक्तिवान परमात्मा पिता के हाथों अपने को समर्पित कर देता है वह निश्चित रूप से सदा विजयी होता ही है।

आज हमारे समक्ष साकार पिता ब्रह्मा उदाहरण है जिन्होंने शिवबाबा के एक संकेत पर ही रंचमात्र भी हिचकिचाहट दिखाये बिना अपना सर्वस्व ईश्वरीय सेवा में समर्पित कर दिया था एवं इतने लम्बे समय के बाद भी उन्हें तनिक भी संशय न उठा। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने कभी भी क्या, क्यों और कैसे? का प्रश्न नहीं उठाया, इतना ही नहीं उनका तो संपूर्ण तन-मन-धन ही ईश्वरीय सेवा में ही समर्पित था। उन्होंने यश, मान-सम्मान की कामना तो क्या अपनी बुद्धि का भी सम-

र्पण कर दिया था। तभी तो सर्वशक्तिवान की शक्ति से वे भी शक्ति सम्पन्न बन गये थे। उस प्रेम सागर की तरंगों से तरंगित होकर वे भी प्रेम स्वरूप बन गये थे तथा उस आनंद के सागर की लहरों में सदा आनंदित रह कर वे लहराते रहते थे।

इसी प्रकार मां सरस्वती का भी हमारे सामने उदाहरण है कि माँ सरस्वती ने भी बाबा के कठिन से कठिन आदेशों पर भी कभी ये नहीं सोचा कि ये कैसे होगा और सदा "जी बाबा" कहा। तभी तो ये दोनों आज दैवी जगत के दैदीप्यमान सितारे बन गये हैं जिनके दिव्य प्रकाशमें पथभ्रष्ट जीवात्माऐं सच्चे पथ का पथिक बन जाते हैं और संशयग्रस्त आत्मायें संशय का निवारण पाकर लक्ष्य तक पहुँच जाती हैं।

तो इसी प्रकार साकार पिता व निराकार पिता को अपना साथी बनाने के लिए पहले स्वयं को बापदादा के समक्ष सर्मपित कर देंगे तो वह हमारा साथी बनकर हमारी नैय्या को पार लगा ही देगा। लगा तो क्या देगा···उसे हमारी नैय्या पार लगानी ही पड़ेगी। हम उसके बन गये तो उसे हमारा बनना ही है।

भक्त लोग सिर्फ़ स्वार्थवश दिखावे के तौर पर भक्ति करते हैं तो भी उन्हें क्षण भंगुर अल्पकालीन प्राप्ति तो वह करा ही देता है। तो अभी तो हमने उसे पुकारा है और वह दुनिया में हमारे लिये ही आया है तो वह क्या नहीं करेगा ? उसे सब कुछ करना पड़ेगा बस हम उसके बन जावें।

(१) जिस प्रकार जड़ सूर्य की किरणों में भी जैसे दो गुण हैं गर्मी व प्रकाश। इसी प्रकार बापदादा को साथी बनाने वाले स्वयं ज्ञान प्रकाश को धारण कर स्वयं का अज्ञान रूपी अंधकार मिटाकर अपनी ज्योति जगाकर अनेक आत्माओं को भी अज्ञानरूपी अंधकार से निकालकर उनकी बुझी हुई ज्योति को जगाने में वह तत्पर रहेगा और साथ ही योग रूपी गर्मी या अग्नि द्वारा स्वयं के पाप कर्म भस्म कर अनेक आत्माओं के पापकर्मों को खत्म कराने में वह सदैव तत्पर रहेगा।

(२) दुनियावाले तो सिर्फ़ कहते कि परमात्मा सर्वव्यापी है किन्तु सर्वव्यापी का कोई अनुभव नहीं करते। हम कहते नहीं हैं किन्तु हम उसका अभी वास्तविक अनुभव करते हैं। बापदादा को साथी बनाकर बड़े से बड़ा कार्य भी ऐसे लगेगा जैसे कुछ है ही नहीं। हर कार्य में सफ़लता चरणों की दासी होगी।

(३) बापदादा जिसका साथी है उसका एक भी संकल्प व्यर्थ नहीं किन्तु समर्थ होगा।

(४) वाचा उसकी शक्तिशाली होगी, उसके मुख से निकला हुआ एक-एक शब्द विश्व कल्याण-कारी सिद्ध होगा।

(५) उसके हर कार्य में त्याग, तपस्या व सेवा दिखाई देगी जिससे उसका स्वरूप सहज राजयोगी व विश्व सेवाधारी का होगा।

(६) उसकी मनसा, वाचा, कर्मणा से बापदादा के समान मधुरता व प्यार झलकेगा।

(७) उसके सामने बड़े से बड़ा विघ्न आवे या माया कैसा भी रूप धारण करके आये फिर भी वो उस पर जीत पा कर मायाजीत कहलायेगा।

नूतन वर्ष का अभिनन्दन

बी० के० सुषमा, कोलाबा, बम्बई

हर नया साल लोगों के मन में नई उमंगें, नया उत्साह नई प्रेरणायें लेकर आता है। लोग नये-नये संकल्प करते हैं। पुरातन सब छोड़ नवीनतम धारण करने की प्रतिज्ञा करते हैं। बीती को बीती कर नये सिरे से पुरुषार्थ में जुटने का प्रयास करते हैं ! दुर्भाग्यवश किसी की बुद्धि में ये प्रेरणा नहीं भी आती तो उसके संगे-साथी उसे प्रेरणा दे उसमें नया उत्साह भर देते हैं।

परन्तु इस कलियुगी दुनिया में हरेक वस्तु पुरानी है। हरेक नया आने वाला दिन इसे और पुराना कर जाता है। सच पूछिये तो नवीनतम के आगमन से पुरातन का ही आभास मिलता है। शिव बाबा ने भी आज से ४३ वर्ष पूर्व ही बता दिया था कि कलियुग में कुछ भी नया नहीं होता क्योंकि यह है ही पतित, पुरानी दुनिया ! हर आने वाले दिनों में सृष्टि के पाप का घड़ा भरता ही जाता है। जब तक अति नहीं होगी अन्त कैसे होगा ? सृष्टि जब तक घोर तमोप्रधान नहीं होगी, तब तक इसका विनाश हो सतयुगी सृष्टि का आगमन कैसे होगा ? बाबा तो बच्चों को आत्मिक उत्थान हेतु नई-नई प्रेरणायें देते ही रहे हैं। बात कुछ वर्षों पूर्व की है। नये साल में हम अव्यक्त बाबा से मिलन मना रहे थे। बाबा बोले—"भले ही मेरे कई बच्चे पुराने हैं, कई नये हैं। परन्तु, पुरुषार्थ में तुम बच्चे अपने को कभी भी पुराना मत समझना वरना पुरुषार्थ ढीला पड़ जायेगा। प्रतिदिन समझो आज का यह दिन मेरे लिए नया शुरू हुआ है तो रोज तुम्हारी चढ़ती कला होती जायेगी।"

सन् १९८० का नया वर्ष भी नयी आशायें व नई सम्भावनायें लेकर आ रहा है। इस वर्ष में पुरुषार्थ की ऊँची सीढ़ी चढ़ने के लिए चार बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है—

(१) कम बोलना (२) धीरे बोलना (३) अनुमान नहीं लगाना और (४) परचिन्तन से परे रहना।

एक कहावत है—"A person speaking more gets less respect." अर्थात् ज्यादा बोलने वाले की बातों का कम महत्व होता है। जितना हो सके हमें कम बोलने व धीरे बोलने का प्रयास करना ही है। प्रायः लोग एक की दो सुनाने का दावा रखते हैं परन्तु क्या ही अच्छा हो यदि अब हम दो सुनकर एक भी सुनाने का दावा न करें। तो निश्चय ही ये अन्तर्मुखता हमारी उन्नति में सहायक सिद्ध होगी। हमें बाबा का ही ज्ञान सुनाना है, इससे सुनने और सुनाने वाले दोनों की उन्नति होगी।

'अनुमान' हमें हनुमान बनने नहीं देता। पुरुषार्थ को ढीला कर देता है। अनुमान लगाने वाला व्यक्ति दूसरों के लिए समस्या तो बनता ही है, खुद के लिए भी एक बड़ी समस्या बन जाता है। एक छोटी राई पहाड़ बन जाती है, तिल का ताड़ बन जाता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि एक फ़ालतू अनुमान का संकल्प स्वयं के साथ सम्पर्क में आने वालों तक को दुःखी कर देता है। काफ़ी समय बीतने के बाद पता चलता है कि बात तो कुछ भी नहीं है, महज एक छोटा-सा अनुमान था, जो वह भी गलत निकला। फिर पछतावा होता है परन्तु तरकश से निकले तीर वापस नहीं लौटते।

'परचिन्तन' भी पुरुषार्थी के लिए कैंसर की बीमारी सदृश है। यह 'स्व' व पर दोनों का पतन कर डालती है। प्रभुचिन्तन कर आत्मा पाप मुक्त होती है परन्तु परचिन्तन से तो और ही पाप युक्त होती जाती है। किसी भी बीती बात को याद करके कुढ़ने के बदले मास्टर क्षमा के सागर का रूप धारण कर लो। बीती बात भूल जायेंगी। दुःखी बात का चिन्तन तो सदैव दुःखी ही करेगा। सुख की बातें सोचो, अच्छे संकल्प खुद के साथ औरों को भी सुखी करेगा। एक चिड़चिड़ा या mood off हुआ व्यक्ति भला दूसरे को क्या सुख देगा। मृत्यु के मोल पर ही अमृत मिलता है, बत्ती जलकर ही प्रकाश देती है। स्वयं का त्याग, बलिदान, सहन ही दूसरों को प्रेरणा

देता है।

आइये, इस नये वर्ष में हम प्रतिज्ञा करें कि बाबा की उम्मीदों के हम सितारे बाबा की उम्मीदों पर पूरा-पूरा, खरा-खरा उतरेंगे। बाबा की शिक्षाओं रूपी माला का सिमरण करेंगे तथा सिमरण के रूप बनेंगे। इस साल को सचमुच नया साल बना देंगे। अन्य आत्माओं की भी शिव बाबा से स्नेह डोरी जोड़ उनका भी भाग्य महान बनाने की अथक सेवा का निश्चय ही सतयुगी सृष्टि को मोड़ पर ला देगा।

इस नये साल में नई उमंग, नया उल्लास, नये संस्कार, नया स्वभाव, दिव्य गुणों की धारणा, नया चार्ट, नई आशायें, शुभ भावनायें, त्याग, शुभ बोल, शुभ कामना का नया संदेश देकर ही नूतन वर्ष का अभिनन्दन कर सकते हैं। तो आइये, हम सभी इस आध्यात्मिक जगत के रहवासी भी इस नये वर्ष में बेकार की छोटी-छोटी बातों को चुटकी में उड़ाकर कुछ नवीनता करने की प्रतिज्ञा शिव बाबा की छत्र-छाया के नीचे खड़े होकर करें और इस नये साल को सचमुच ही नया साल बना दें अर्थात् सारे विश्व को अपनी महान धारणाओं द्वारा महान भाग्य दिखाकर अन्य आत्माओं को भी महान भाग्य बनाने की नई-नई प्रेरणायें दिलायें, तब ही नया साल अर्थात् अपना प्यारा सतयुग इस धरती पर साकार हो जायेगा। और सचमुच वर्तमान समय हम सब के लिए इसी दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है।

गीत

हम उड़ के चले जायें उस प्यारे से वतन में

लें० बी. के. मोहनलाल (अमृतसर)

(स्थाई) हम उड़ के चले जायें
उस प्यारे से वतन में
उस मीठे से वतन में
अव्यक्त वतन में
हम उड़ के चले······

(१) जाना है वहाँ हमको जहां बाप और दादा हैं
बनना है सम्पूर्ण कीया बाबा से वायदा है
जो बाबा से किया था वो वायदा निभायेंगे
हम उड़ के······

(२) यह देह नां याद आये देह धारी नां याद आये
यह पतित पुरानी सी दुनिया भी नां याद आये
याद आये तो बस अपना वो वतन ही याद आये
हम उड़ के······

(३) यह दुनिया पुरानी है इस दुनिया से क्या लेना
वो नगरी हमारी है हमको है वहाँ रहना
हम ज्ञान से सज धज के उस नगरी में जायेंगे
हम उड़ के······

(४) वतन में है ठहरे हुये बाबा हमारे लिए
कर रहे हैं इन्तजार घर ले जाने के लिए
आकारी बन करके घर बाबा के जायेंगे
हम उड़ के चले जायें······

अद्वैतवादियों की उलझन

योगीराज, माउण्ट आबू (मधुबन)

लगभग १५०० वर्ष पूर्व शंकराचार्य ने अद्वैत सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। उनके अनुसार—"सर्वत्र एक ब्रह्म ही व्याप्त है, उसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं, ये भेद भाव अज्ञानता के प्रतीक हैं, ये जो कुछ भी जगत देखने में आता है, मिथ्या है, स्वप्न मात्र है।"

इस बार कुछ महामण्डलेश्वरों से हमारी इन सिद्धान्तों के बारे में चर्चा हुई। हमने पाया - ये विद्वान काफ़ी उलझन में हैं, परन्तु शंकाओं का समाधान ये भी अपने ढंग से कर लेते हैं। उनमें से कुछ एक से हुई चर्चाओं का उल्लेख हम यहाँ करेंगे।

ऋषिकेष कैलास आश्रम के विदुषक महामण्डलेश्वर से हमने पूछा—कि क्या वेद सम्पूर्ण ज्ञान की पुस्तकें हैं, या इनके बाहर भी कुछ रहस्य हो सकते हैं ?

स्वामी जी ने यजुर्वेद का एक मन्त्र पढ़कर सुनाया जिसका अर्थ था कि वेदों में एक लाख मन्त्र हैं। स्वामी जी ने बताया, परन्तु अभी तक केवल अस्सी हज़ार मन्त्र ही प्राप्त हैं।

हमने पूछा—बीस हजार मन्त्र कैसे प्राप्त होंगे ?

ये अभी मालूम नहीं—स्वामी जी ने मुस्कराया। हमने कहा कि इसका अर्थ है कि कुछ आध्यात्मिक रहस्य अभी हमसे छुपे हुए हैं। हाँ—स्वामी जी ने स्वीकार किया।

हमने एक बात कई महामण्डलेश्वरों से पूछी—"क्या कारण है कि हमारे ये वेद, वेदान्त, दर्शन, भक्ति, यज्ञ, इस विश्व में बढ़ते हुए काम को नहीं रोक सके। धर्म प्रचार होता रहा, टीकाएँ होती रहीं, परन्तु मानव का पतन भी होता ही रहा, मनुष्य सब कुछ गँवा बैठा।"

विद्वान लोग हमारे इस प्रश्न को सुनकर चुप रह जाते थे। शायद उन्हें यह मालूम नहीं कि विश्व के पतन का मुख्य कारण ये काम विकार ही है।

जैसे किसी शासक के शासन में अगर भ्रष्टाचार बढ़ता रहे, पतन होता रहे, अव्यवस्था होती रहे। तो क्या उसे श्रेष्ठ, सत्य व सफल शासक कहेंगे ? नहीं फिर भी अगर कोई कहे कि नहीं मेरी श्रद्धा तो उसी शासक में है, तो इसे उसका भोलापन ही कहेंगे। इसी प्रकार इन सभी धार्मिक सिद्धान्तों के बाद भी धर्म का व मानव का पतन ही होता गया है। इससे एक बात अवश्य ही स्पष्ट है—कि हमसे कुछ रहस्य अभी छुपे हुए हैं, जो वेदों, शास्त्रों में नहीं हैं। सत्यता हमसे कुछ दूर है। भले ही वेदों के पुजारी इस बात को स्वीकार न करें, परन्तु यह सत्य है कि सत्य सिद्धान्तों से मानव का पतन नहीं हो सकता।

ये रहस्य कैसे स्पष्ट होंगे ? ज्ञान सागर केवल एक परमात्मा ही है, और अब वह ही इन रहस्यों को स्पष्ट कर रहा है।

हमने एक महामण्डलेश्वर से पूछा—कि केवल वेदों के आधार पर ही भारत में कई वाद प्रचलित हैं, जैसे अद्वैतवाद, द्वैतवाद त्रेतवाद, द्वैताद्वैत वाद, विशिष्यद्वैत वाद। परन्तु सत्य तो एक ही होगा।

स्वामी जी बड़े उदार चित्त वाले व्यक्ति हैं··· बोले—बिल्कुल ठीक, सत्य एक ही है।

हमने पूछा···वो सत्य सिद्धान्त कौन सा है ?

स्वामी जी हँसने लगे,बोले—भई, मुझे तो लगता है कि इनमें सत्य कोई भी नहीं, सत्य कुछ ओर ही है।

स्वामी जी के स्पष्ट बोल सुनकर हमें यह स्पष्ट हुआ कि समझदार विद्वान इन सिद्धान्तों की असत्यता को स्वीकार करने लगे हैं।

अद्वैत सिद्धान्तों के बारे में हुई वार्ताओं का सार कुछ इस प्रकार है

ब्रह्माकुमार—स्वामी जी, जब सर्वत्र एक ही सत्ता है, उसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं, तो अद्वैतवाद को मानने वालों में भी परस्पर ईर्ष्या द्वेष क्यों है ?

स्वामी जी—बेटा यह अज्ञान का प्रतीक है।

ब्रह्माकुमार—परन्तु महाराज, यहाँ तो ज्ञानियों में भी ईर्ष्या है।

स्वामी जी—ईर्ष्या है तो ज्ञान कैसे कहेंगे।

ब्रह्माकुमार—महाराज, यह अज्ञान किसे है ?

स्वामी जी—(सोचकर)···सर्वत्र है ही ब्रह्म··· तो अज्ञान भी उसे ही है।

ब्रह्माकुमार—महाराज···ब्रह्म को अज्ञान !! इतना अनर्थ। ब्रह्म तो सर्वज्ञ है, सम्पूर्ण है, उसे भला अज्ञान कैसे हो सकता है। यह तो ब्रह्म की ग्लानि हो गई, महाराज···

स्वामी जी—(टालने के मूड में)—अरे भाई, ब्रह्म को अज्ञान नहीं होगा, तो और भला किसे होगा !!!

ब्रह्माकुमार—स्वामी जी, सर्वत्र एक ही है, फिर पुनर्जन्म किसका···मुक्ति किसकी। है ही एक फिर तो एक की मुक्ति से सर्व की ही मुक्ति हो जानी चाहिए।

स्वामी—बेटा, ये सब कुछ है नहीं···वास्तव में ये सब भ्रम है।

ब्रह्माकुमार—महाराज, भ्रम होना ही सिद्ध करता है कि वास्तव में दो सत्ताएँ है। भ्रम होता ही दो में है। अगर एक ही वस्तु हो तो भ्रम क्यों होगा ?

स्वामी जी—(हाँ कहकर, चुप हो जाते हैं)

ब्रह्माकुमार—महाराज, जब सर्वत्र एक ही है, तो आप ये क्यों कहते हैं कि नारी को ॐ कहने का भी अधिकार नहीं, और उसे वेद पढ़ने का भी अधिकार नहीं।

स्वामीजी—बेटा, ये व्यवहारिक बातें हैं। व्यवहारिक बातें अलग है और सैद्धान्तिक बातें अलग हैं। व्यवहार में तो सब नियम अपनाने ही पड़ते हैं।

ब्रह्माकुमार—परन्तु महाराज, जो सिद्धान्त व्यवहारिक नहीं, उसे सत्य कैसे माना जाए। एक ओर हम कहें बुरा कर्म न करो और दूसरी ओर कहें कि आत्मा तो निर्लेप है···आत्मा निर्लेप है, तो वह बन्धन में क्यों आई, जो वह मुक्ति चाहती है।

स्वामी जी—बन्धन है कहाँ···ये तो प्रतीत होता है, ये जो कुछ दृश्यमान जगत प्रतीत होता है, ये स्वप्न मात्र है।

आदि शंकराचार्य ने जब मण्डन मिश्र को शास्त्रार्थ में हराया तो उन्होंने सौ पानी के घड़े मँगवाये और कहा कि देखो, इन सभी में सूर्य का प्रतिबिम्ब दीख रहा है। अब घड़े फोड़ दो तो प्रतिबिम्ब सूर्य में लय हो गया। इसी तरह यह विश्व भी प्रतिबिम्ब मात्र है, जो ज्ञान चक्षु प्राप्त हो जाने पर स्वप्न मात्र ही दृष्टि गोचर होता है।

ब्रह्माकुमार—परन्तु महाराज, जैसे घड़ों में सूर्य का प्रतिबिम्ब था। प्रतिबिम्ब अनेक थे, सूर्य एक था।

तो प्रथम तो यह बताइये कि यदि यह विश्व प्रतिबिम्ब मात्र है तो इसका सत्य स्वरूप कहाँ है ? दूसरी बात—सौ घोड़ों में यद्यपि सौ प्रतिबिम्ब थे, परन्तु सभी प्रतिबिम्ब एक जैसे ही, व सूर्य जैसे ही थे।

परन्तु विश्व में तो सर्वथा भिन्नता है।

स्वामी जी—सत्य स्वरूप तो ब्रह्म है···

यहाँ की यह भिन्नता केवल उपाधि भेद के कारण ही है।

ब्रह्माकुमार—सत्य स्वरूप ब्रह्म है तो उसका प्रतिबिम्ब भी वैसा ही होना चाहिए। परन्तु इस विश्व में तो विकार, माया, ईर्ष्या द्वेष, मनमुटाव है, जबकि ब्रह्म में ये नहीं हैं।

रही बात उपाधि भेद की। उपाधि भेद केवल घड़ों में है, उसके प्रतिबिम्ब में नहीं। प्रतिबिम्ब समान हैं। यहाँ भेद केवल बाह्य रूप से ही नहीं बल्कि सभी के विचारों व कर्मों में भी भेद है।

इस प्रकार जगत का मिथ्या या स्वप्न मात्र मानना यथार्थ नहीं।

स्वामी जी—जैसे घटाकाश, मटाकाश, सभी में भेद है, परन्तु आकाश तो सभी में एक ही है।

ब्रह्माकुमार—बिल्कुल ठीक, परन्तु वहाँ सभी घड़ों के आकाश में गुण तो समान हैं, परन्तु यहाँ तो सभी के गुणों में भेद है।

महाराज···ये विशाल विश्व, जिसमें इतने बड़े-बड़े कार्य चल रहे हैं, अनेक खोजें हो रही हैं, हार, जीत, उत्थान, पतन हो रहा है, इसे स्वप्न नहीं माना जा सकता।

यह सिद्धान्त तो केवल इसलिए बनाया गया था ताकि इसमें मनुष्य की आसक्ति न हो। बाकि तो ये विश्व सत्य है और सर्वत्र केवल एक ही ब्रह्म नहीं, बल्कि सभी में भिन्न-भिन्न आत्माएँ हैं।

यह चित्र बालवर्ष के उपलक्ष में इलाहाबाद में आयोजित 'चरित्र निर्माण सम्मेलन' के अवसर का है। मुख्य प्रशासिका ब्र० कु० प्रकाशमणि जी प्रवचन कर रही हैं तथा मंच पर ब्र० कु० सरला, इलाहाबाद मण्डल के आयुक्त भ्राता फजला अहमद खान एवं ब्र० कु० सन्तराम बैठे हैं.

नीचे के चित्र में मोरिशस में दीपावली के अवसर पर आयोजित लक्ष्मी-नारायण की चैतन्य झाँकी दिखाई गई है।

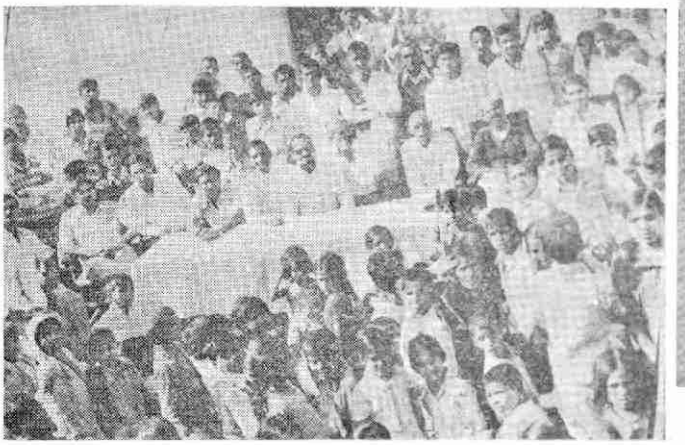

यह चित्र चौमुहाँ (आगरा) में आयोजित 'बाल दिवस समारोह के अवसर का है। इस अवसर पर वहाँ के स्वास्थ्य अधिकारी, विकास अधिकारी, ग्राम प्रधान व अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया ।

सिकन्दराबाद में आयोजित 'बाल दिवस समारोह' को दूरदर्शन द्वारा प्रसारित किया गया था। चित्र में दूरदर्शन के अधिकारियों के साथ वहाँ के भाई-बहन दिखाई दे रहे हैं।

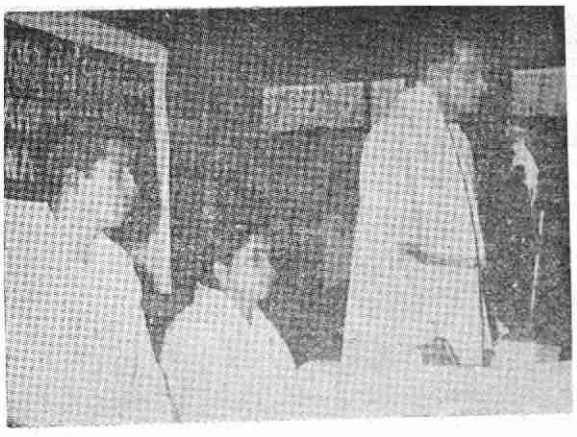

उपर के चित्र में नरसिंह पुर (कटक) में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् शिक्षा विभाग के अधिकारी भ्राता रघुनाथ मिश्र प्रवचन कर रहे हैं।

यह चित्र मुरादाबाद में आयोजित बाल वर्ष समारोह के अवसर का है। ब्र० कु० गंगा बहन मुख्य अतिथी को ईश्वरीय सौगात दे रही है साथ में अन्य बहन भाई खड़े हैं।

यह चित्र लखनऊ के स्टेडियम में आयोजित प्रदर्शनी के अवसर का है। ब्र० कु० रानी तथा ब्र० कु० सुमन काँग्रेस के अध्यक्ष भ्राता नारायण सिंह को चित्रों की व्याख्या दे रही हैं। खुरशेद बाग में स्थित आध्यात्मिक संग्रहालय के अन्य बहन भाई साथ में खड़े हैं।

यह चित्र कानपुर [नयागंज] द्वारा 'बालवर्ष समारोह' के अवसर का है। एंग्लो गुजराती कालेज की प्रिंसिपल बाल उत्थान प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रही हैं। तथा साथ में वहां के बहन भाई खड़े हैं।

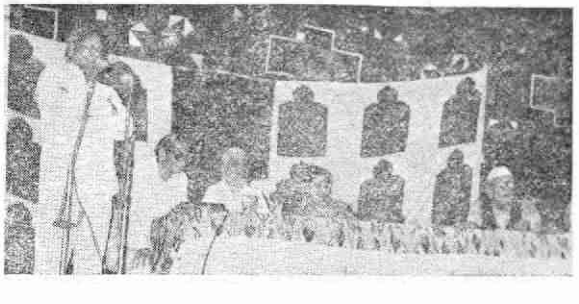

ऊपर का चित्र कानपुर में आयोजित बाल दिवस समारोह के अवसर का है। वहां के जिलाधीश भ्राता मुन्नीलाल जी प्रवचन कर रहे हैं।

उपर का चित्र हलद्वानी में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम का है। ब्र० कु० मधु प्रवचन कर रही हैं तथा साथ में ब्र० कु० जयदेवी एवं द्रौपदी खड़ी हैं

←यह चित्र करनाल तथा भिवानी सेवाकेन्द्रों के भाई बहनों द्वारा चरखी दादरी में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के अवसर का है। भिवानी के अतिरिक्त सहायक आयुक्त प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् वहाँ के भाई बहनों के साथ खड़े हैं।

लखनऊ (पेपरमिल कालोनी) सेवाकेन्द्र द्वारा मित्तई में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रोजेक्टर शो का आयोजन किया गया। चित्र में ब्र० कु० सुमित्रा व अन्य बहन भाई खड़े हैं। →

↑ कोल्हापुर सेवा-केन्द्र द्वारा मीराज में आयोजित राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् वहाँ के नगराध्यक्ष भ्राता एल० आर० भौसले वहाँ के भाई-बहनों के साथ खड़े हैं।

तेजपुर सेवाकेन्द्र द्वारा विश्वनाथ चाराली ग्राम में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् विश्वनाथ कालेज के वाईस प्रिंसिपल के साथ वहाँ के बहन-भाई खड़े हैं।

जब मैंने उनसे भेंट की

योगीराज, मधुबन, माउण्ट आबू

शिव बाबा ने ब्रह्मा मुखारविन्द द्वारा अति श्रेष्ठ ज्ञान हमें इतनी सरल भाषा में दे दिया कि कभी-कभी हम वत्स भी उन ज्ञान रत्नों के महत्व को भूल जाते हैं। परन्तु इस बार अगस्त में सिद्धपुर (गुजरात) के पण्डितों से जब मिलन हुआ तो पाया कि विद्वान किसी निर्णय पर नहीं हैं। सिद्धपुर स्थान भारत वर्ष में मातृ श्राद्ध के लिए प्रसिद्ध है कि यहाँ माता के श्राद्ध कराने से उसकी मुक्ति हो जाती है। मैंने हँसी में एक पंडित से पूछा कि क्या सिद्धपुर के सभी विद्वान पंडितों की मुक्ति हो जाएगी ?

पंडित जी मुस्करा कर रह गये। कहने लगे कि अगर ब्राह्मण अपनी पूर्व वत स्थिति पर आ जाएं तो इस देश का कल्याण हो जाए। परन्तु जब हम अपने दिल पर हाथ रखकर पूछते हैं कि क्या हम ब्राह्मण हैं तो मन रो पड़ता है।

बिना पवित्रता के विद्वता किसी काम की नहीं और उसे पवित्रता के आगे सिर झुकाना ही पड़ता है। अगर मैंने कभी किसी विद्वान से यह पूछ लिया कि क्या आप ब्रह्मचर्य में रहते हैं तो उनका सारा नशा उतर कर धराशायी हो जाता था, उनमें बोलने की भी हिम्मत नहीं रहती थी। हाँ सिद्धपुर के विद्वानों की नम्रता व निरहंकारिता प्रसंशनीय थी। उनमें स्पष्टता भी थी, परन्तु उन्हें भी उलझन वैसी ही थी जैसी सभी को है···जिस बात का उन्हें हल नहीं आता था वे स्पष्ट कह देते थे कि हमने कभी इस पर विचार नहीं किया है।

विभिन्न विषयों पर विभिन्न विद्वानों से चर्चाएँ हुईं। उनमें से कुछ का संक्षिप्त विवरण हम करेंगे।

मैंने सभी से एक बात पूछी कि भारत में इतना पूज्य व श्रेष्ठ आध्यात्मिक ज्ञान होते भी, वेद एवं दर्शनों के बाद भी इसका पतन क्यों है ? पाश्चात्य सभ्यता की ओर बढ़ते हुए झुकाव को हम क्यों नहीं रोक पा रहे हैं। सभी ने भिन्न-भिन्न उत्तर दिये। कइयों ने अँग्रेजों को दोषी ठहराया, कइयों ने पं० जवाहरलाल नेहरू को। परन्तु स्वयं को और स्वयं की दार्शनिक कमजोरियों को दोषी ठहराने का साहस उनमें नहीं था।

इसके अतिरिक्त कई विद्वानों से मैंने ब्रह्मा के बारे में पूछा, किसी के भी सन्तोषजनक उत्तर नहीं थे। इस बारे में स्वयं भी उनके पास कोई स्पष्टता नहीं थी।

अरबों वर्ष ब्रह्मा का दिन और उतनी ही रात्री··· मैंने पूछा वे कहाँ सोते हैं मैं उनसे मिलने का प्रयास करूँगा, वे कहाँ बैठकर रचना करते हैं व कैसे ? क्या अरबों वर्षों की बात काल्पनिक ही नहीं है···क्या अरबों वर्षों का कुछ इतिहास हो सकता है···इन सब बातों का उत्तर सिवाय चुप्पी के और कुछ भी नहीं था। शायद ही उन्होंने कभी इन बातों पर सोचा हो···

एक विद्वान से इस प्रकार बातचीत हुई·····

ब्रह्मा कुमार—मन, बुद्धि, आत्मा की ही शक्तियाँ हैं या उनसे भिन्न हैं ?

विद्वान—अलग है, ये प्रकृतिकृत हैं।

ब्रह्मा कुमार—परन्तु प्रकृति तो जड़ है, मन, बुद्धि, चेतन हैं···

विद्वान—नहीं मन बुद्धि तो जड़ ही हैं। इनके ही गुण हैं सतो, रजो व तमो। आत्मा इन सब गुणों से अतीत है।

ब्रह्मा कुमार—परन्तु प्रकृति जड़ है। जड़ में स्वयं के गुण सतो, रजो, तमो नहीं हो सकते। प्रकृति तो रचना है। रचना तो रचयिता के गुणों से ही प्रभावित होती है। सम्पूर्ण रचयिता की रचना भी सम्पूर्ण ही होती है। तो सतो, रजो, तमो तो आत्मा के गुण होने चाहिए।

दूसरी बात—प्रकृति सतो से रजो या तमो या तमो से सतो कैसे बनती है ?

विद्वान—यह परिवर्तन उसमें स्वयं ही आता है। जब प्रकृति सतो है तो मन बुद्धि भी सतो हैं।

ब्रह्मा कुमार—परन्तु मन बुद्धि में विचार शक्ति कैसे आई ?

विद्वान—आत्मा की उपस्थिति से।

ब्रह्मा कुमार—पंडित जी, कहते हैं भगवान को सृष्टि रचने का संकल्प आया।

विद्वान—हाँ···(श्लोक सुनाता है)

ब्रह्मा कुमार—इससे स्पष्ट है कि परमात्मा में मन है।

विद्वान—हाँ···

ब्रह्मा कुमार—परमात्मा ज्ञान दाता व त्रिकाल-दर्शी है···

विद्वान—सत्य, वह सर्वज्ञ है···उससे कुछ भी छिपा नहीं।

ब्रह्मा कुमार—इससे सिद्ध है कि ईश्वर में बुद्धि भी है।

विद्वान—हाँ···

ब्रह्मा कुमार—तो जबकि परमात्मा में भी मन बुद्धि है तो आत्मा में भी होने चाहिए।

विद्वान—(विचार मुद्रा में)

बात विचारणीय है—इसके लिए हमें आपसे लम्बी वार्तालाप करनी पड़ेगी।

और पुनः मिलने का वायदा करके उन्होंने स्नेह-पूर्वक विदाई ली।

इसी प्रकार एक अन्य विद्वान से सर्वव्यापकता पर वार्तालाप हुई जो इस प्रकार है···

ब्रह्मा कुमार—परमात्मा को शास्त्रों में कहीं प्रकाश स्वरूप, कहीं अगुष्ठाकार व कहीं सूक्ष्माति-सूक्ष्म कहा गया है।

पंडित—हाँ ऐसे वृतांत है।

ब्रह्मा कुमार—तो जबकि उसका स्वरूप है तो उसका रहने का स्थान भी होना चाहिए, वह कहाँ है?

पंडित—वह तो सर्वत्र है·····ये रूप तो उसके प्रतिबिम्ब हैं। ऐसा तो केवल समाधी अवस्था में आभास होता है।

ब्रह्मा कुमार—परन्तु जिसके ये प्रतिबिम्ब हैं वो स्वयं कहाँ है और जबकि उसके इन स्वरूपों का आभास होता है तो उसे सत्य क्यों न माना जाए।

पंडित—शास्त्रों में तो उसे सर्वत्र ही माना है।

ब्रह्मा कुमार—पंडित जी! जहाँ गुणी होता है, वहाँ उसके गुण भी होते हैं। जैसे चेतन आत्मा जब शरीर में है तो उसकी चेतनता की अभिव्यक्ति होती है। इसी प्रकार जब चेतन परमात्मा सर्वत्र है तो उसकी चेतनता सर्वत्र क्यों नहीं। फिर प्रकृति जड़ क्यों है। फिर तो जड़ शब्द भी नहीं होना चाहिए।

पंडित—चेतनता कई प्रकार की हैं। पत्थरों में सुषुप्त चेतनता है, पेड़ पौधों में अर्द्ध चेतनता है व मनुष्यों में सम्पूर्ण चेतनता।

ब्रह्मा कुमार—परन्तु पंडित जी। एक ही परमात्मा की चेतनता में भिन्नता क्यों? आप ये तो कह सकते हैं कि सभी में भिन्न-भिन्न चेतनता के जीव है। परन्तु ये कहना सत्य नहीं कि सभी में भिन्न-भिन्न चेतनता का एक ही परमात्मा है।

पंडित—(निरूत्तर हो जाते है)

ब्रह्मा कुमार—एक और बात पंडित जी···

जैसे स्वभाव का व्यक्ति जहाँ होता है, वैसा ही वातावरण वहाँ बन जाता है। शान्त प्रिय व्यक्ति के घर में शान्ति की वातावरण व क्रोधी के घर में अशान्ति का वातावरण होता है।

पंडित—बिल्कुल सत्य—

ब्रह्मा कुमार—सुना होगा, प्राचीन काल में जब ऋषि मुनी पहाड़ों पर तपस्या किया करते थे तो उनकी शान्ति की लहरें दूर-दूर तक फैल जाया करती थीं, इतना प्रवाह होता था कि शेर भी उस वातावरण में आकर अपनी हिंसक वृत्ति त्याग देता था।

पंडित—परन्तु अब कहां है ऐसे तपस्वी···भाई···

ब्रह्मा कुमार—इसी प्रकार परमात्मा तो शान्ति का सागर है···उसके इस संसार में सर्वत्र होने से कितनी अथाह शान्ति की तरंगें चारों ओर फैलनी चाहिए। फिर संसार में अशान्ति क्यों है?

पंडित—यह तो मनुष्य के अपने पूर्व के कर्मों के कारण ही है।

ब्रह्मा कुमार—परन्तु जब तपस्वियों के प्रवाह में शेर की हिंसक वृत्ति बदल गई तो परमात्मा के श्रेष्ठ प्रवाह में मनुष्य के कर्म क्यों नहीं बदले।

आदि काल से आप देखें···जब मनुष्य के ऊपर पाप नहीं थे, तब से ही परमात्मा सर्वत्र है। फिर ये पाप कर्म क्यों हुए? परमात्मा की उपस्थिति में और पाप···

एक श्रेष्ठ महात्मा की उपस्थिति में भी कोई बुरा कर्म करने का साहस नहीं रख सकता। फिर

भला परमात्मा की उपस्थिति में ये सब क्यों हुआ···

पंडित—भाई वेद वाणी हैं, हमें मानना ही पड़ता है।

ब्रह्मा कुमार—अच्छा पंडित जी आप अपना सत्य अनुभव बतायें कि क्या परमात्मा की सर्व-व्यापकता का आपको कोई अनुभव है ?

पंडित—हाँ···कोई भी बुरा कर्म करने से पहले यह आन्तरिक प्रेरणा आती है कि कोई बुरा कर्म न करो।

ब्रह्माकुमार—सभी मनुष्यों का बस ये एक ही अनुभव है। इसके अतिरिक्त ईश्वर के पास होने का कोई अनुभव मनुष्य को नहीं है।

यह दिव्य प्रेरणा तो आत्मा की है, न कि परमात्मा की।

वास्तव में उसके सर्वत्र होने के कुछ भी प्रमाण या अनुभव नहीं है। क्योंकि विद्वानों को उसके सत्य स्वरूप का ज्ञान नहीं हुआ, और उसके सत्य धाम की अनुभूति नहीं हुई, इसलिए उन्होंने मान लिया कि वह सर्वत्र ही है। परन्तु इससे असीम क्षति हुई। मानव का पतन हुआ।

पंडित—वह कैसे ?

ब्रह्मा कुमार—परमात्मा के रूप व धाम की अविद्या होने के कारण मनुष्य की बुद्धि रूपी तार सर्व-शक्तिवान, शान्ति के सागर परमात्मा के साथ न जुड़ सकी। इसलिए न उसे शान्ति मिली और न श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति। फलस्वरूप आत्मा की शक्ति का ह्रास होता गया, पाप का वेग बढ़ने लगा और पतन हुआ।

दूसरी मुख्य बात—आज तक कोई भी योगी न हो सका, न ही किसी को मुक्ति मिली न किसी को ईश्वरीय मिलन का परम आनन्द ही प्राप्त हुआ।

पंडित—बेटा, ये सब बातें तो ऊपर वाला जाने···(ऊपर उँगली करता है)

ब्रह्मा कुमार—(हँसते हुए) पंडित जी, मनुष्य के सत्य संस्कार तो कहते हैं कि परमात्मा ऊपर है। परन्तु शास्त्रों ने ये गड़बड़ कर दी।

पंडित—हम भी क्या करें, शास्त्रों की बात न मानें तो जाएँ कहाँ···

ब्रह्मा कुमार—जाओ भगवान के पास···वह अब स्वयं आया हुआ है। अगर सत्य ज्ञान चाहिए तो उसी के पास जाओ। इन ब्रह्मा कुमारियों ने किसी शास्त्र से नहीं बल्कि स्वयं ज्ञान-सागर से ही सम्पूर्ण ज्ञान लिया है।

पंडित—वह कैसे ?

ब्रह्मा कुमार—अपनत्व को छोड़ उनकी शरण में जाओ और ईश्वरीय मिलन का परम सुख, प्राप्त करो।

●

यूं हिम्मत मत हारो तुम

ब्रह्मा कुमारी सुलोचना देवी, कुरुक्षेत्र

घर आँगन ही सुनो साथियो हर दम नहीं बुहारो तुम
मन में कितना मैल भरा है यह भी ज़रा निहारो तुम !
काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ ने तुम्हें उम्र-भर मारा है
मार सको तो बाबा के संग इन पाँचों को मारो तुम !
जो-कुछ पहले बो आए थे वह तो अब तक काटा है
लेकिन अब तो पुण्य कमा लो अगला जन्म संवारो तुम !
बाबा की कठिन राह में बेशक चलना मुश्किल है
अगर चाह है राह मिलेगी यों हिम्मत मत हारोतु म !

ब्रह्मा भोजन

ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश, मधुवन, माउन्ट आबू

विश्व परिवर्तन या मानव-परिवर्तन में भोजन का भी मुख्य आधार है। वैसे तो भोजन जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अंग है ही परन्तु सात्विक भोजन अथवा योग-युक्त होकर बनाया और खाया गया भोजन स्थिति को ऊँचा बनाने में बहुत ही सहयोगी बनता है।

"जब तुम्हें योग-युक्त भोजन मिलने लगेगा तो तुम्हारी सर्विस बहुत वृद्धि को प्राप्त होगी"—यह ईश्वरीय महावाक्य सुनकर मैं सोचता था कि क्या योग-युक्त भोजन इतनी महान उपलब्धि कराने वाला है ? मैंने इस पर विचार किया और इसके कारण ढूंढे—

हमारी सर्विस की वृद्धि हमारी स्थिति पर निर्भर करती है, इसमें भेद नहीं है। हमारी पवित्रता की स्थिति सेवा में चार चाँद लगाती है, यह प्रायः देखा गया है। हमारा सरल स्वभाव और सामने की व सहन करने की शक्ति सेवा में विशेष सहयोगी बनती है, यह भी सभी के अनुभव की बात है। जब हम भोजन योग-युक्त होकर बनाते हैं तो हमारी सम्पूर्ण पवित्रता की सूक्ष्म तरंगें भोजन को पवित्र कर देती हैं और उस भोजन के पान से आत्मा भी शुद्ध होती है और हृदय भी शुद्ध होता है अर्थात पवित्रता की स्थिति बढ़ जाती है जिसका प्रभाव हमारी सेवा की गति पर पड़ता है।

भोजन बनाते समय, बनाने वालों के जिस प्रकार के संकल्प होते हैं मानो भोजन उन संकल्पों को ग्रहण कर लेता है और उन्हीं संकल्पों का सूक्ष्म अंश बीज रूप में भोजन ग्रहण करने वालों को पहुँच जाता है और फिर वैसे ही संकल्प उनके मन में प्रकट होते हैं। शीतलचित्त से बनाया हुआ भोजन दूसरों को शीतलता प्रदान करेगा और शान्त स्वरूप में बनाया हुआ भोजन दूसरों को भी शान्ति की अनुभूति कराएगा।

इसी प्रकार भोजन ग्रहण करते समय भी योग युक्त होकर रहना अति आवश्यक है। हम नीचे स्पष्ट करेंगे कि भोजन योग-युक्त होकर बनाने और खाने से क्या-क्या लाभ हैं ?

योग-युक्त होकर भोजन बनाने व खाने से लाभ

❀ योग-युक्त भोजन सारे मस्तिष्क को सर्व-प्रथम प्रभावित करता है। और इसके बाद उसका प्रभाव बुद्धि पर पड़ता है। योग-युक्त भोजन बुद्धि को तीक्ष्ण और दिव्य बना देता है।

जैसे अधिक भोजन करने से सुस्ती आती है, वैसे ही योग-युक्त भोजन हमारी निद्रा को प्रभावित करता है। इससे नींद और स्वप्न दोनों ही सतोप्रधान हो जाते हैं।

❀ योग-युक्त भोजन का प्रभाव हमारे मन पर और साथ-साथ कर्मेन्द्रियों पर भी होता है। इससे पहले मन शीतल होता है और फिर कर्मेन्द्रियाँ। इन्द्रियों की चंचलता और मन के तनाव को योग-युक्त भोजन से सहज ही समाप्त किया जा सकता है।

❀ जब हम भोजन को योग-युक्त होकर ग्रहण करते हैं तो वृत्ति अनासक्त रहती है और सन्तुष्टता की अनुभूति होती है।

❀ कलियुग में प्रकृति भी तमोप्रधान है, इसलिए उससे प्राप्त अन्न और सब्जी भी तमोप्रधान है। हम अपने योग के प्रकम्पनों से उसे सात्विक बनाते हैं। इसलिए वास्तव में योग-युक्त बनाया गया भोजन ही सात्विक भोजन अर्थात ब्रह्मा भोजन है। अगर उसमें कुछ कमी रह जाए तो अगर हम योग-युक्त होकर भोजन करेंगे तो हमें सम्पूर्ण शुद्ध आहार प्राप्त होगा जो मन को प्रभावित करेगा। इससे मन का भटकना बन्द होगा अथवा एकाग्रता शक्ति बढ़ जाएगी।

❀ योग-युक्त भोजन मानो एक औषधि है, जिससे कई शारीरिक रोगों का भी उपचार होता है।

❀ इसके अतिरिक्त यह अनुभव किया गया कि योग-युक्त भोजन ग्रहण करने से मन में स्फूर्ति और उमंग रहती है और याद का प्रवाह बना रहता है और मन में एक स्वाभाविक खुशी और चेतना रहती है।

❀ इन सब के अतिरिक्त भोजन योग-युक्त होकर ग्रहण करने से हम साथ-ही-साथ मनसा सेवा भी कर सकते हैं और इसका प्रभाव दूसरों पर अति सुन्दर होता है।

इस प्रकार ज्ञान-योग के मार्ग के राहियों को भोजन रूपी पेट्रोल शुद्ध लेने के लिए योग-युक्त भोजन करना परमावश्यक है ताकि गाड़ी तीव्र गति से आगे बढ़ सके।

भोजन और ईश्वरीय सेवा

कभी भी किसी पुरुषार्थी को यह नहीं समझना चाहिए कि भोजन बनाना एक साधारण काम है। यह एक बहुत बड़ी ईश्वरीय सेवा है, अगर हम योग-युक्त होकर भोजन बनायें। योग-युक्त भोजन का महत्व यों तो बाबा ने अनेक बार समझाया है, इसे खाने वालों के हृदय शुद्ध हो जाते हैं, आत्मा सुख महसूस करती है–ये तो सदा कहते ही आये हैं। परन्तु योग-युक्त होकर भोजन बनाने से कितनी ऊँची प्रालब्ध बनती है, इस सम्बन्ध में बाबा ने मुझे दो बातें मुख्य रूप से कहीं हैं।

भोजन "योग-युक्त और स्नेहयुक्त" बनाने से उतनी ही प्रालब्ध बनती है जितनी १००० आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश देने से।

दूसरी बात—जो भी आमात्माएँ योग-युक्त भोजन करती हैं और उससे उनके पुरुषार्थ में और पवित्रता में जो भी वृद्धि होती है, उसका कुछ हिस्सा योग-युक्त होकर भोजन बनाने वाले को भी मिलता है।

इससे आप समझ गये होंगे कि योग-युक्त भोजन बनाने से कितनी प्रालब्ध प्राप्त होती है। इसलिए जिन आत्माओं की योग-युक्त स्थिति अच्छी रहती हो उन्हें चाहिए कि वे अपने पवित्र हाथों से भोजन बनाकर सभी को खिलाएँ।

अगर योग-युक्त भोजन नहीं बनाया जाता तो भोजन बनाने वालों के सभी संस्कारों का प्रभाव पड़ता है और जिससे भोजन ग्रहण करने वाली आत्माएँ प्रभावित होती हैं। इसलिए बड़ी भारी ज़िम्मेदारी है उन आत्माओं की, जो भोजन बनाते हैं। उनकी ज़रा सी ग़फलत सभी को ग़फलत में डाल सकती है और वो अपनी योग-युक्त स्थिति द्वारा सभी के संस्कार परिवर्तन करने में विशेष रूप से सहयोगी बन सकते हैं।

बाप-दादा ने एक बार मुझे कहा—योग का स्वाद भोजन में भरते हो ? भोजन में योग का स्वाद भरेंगे तब ही भोजन स्वादिष्ट बनेगा, उससे ही आत्मा को शक्ति प्राप्त होती है।

"पवित्र ब्रह्माभोजन खाकर ही तुम मनुष्य से देवता बनते हो"—शिवबाबा के ये महावाक्य ब्रह्मा भोजन के महत्व को स्पष्ट कर देते हैं। इसलिए ये ब्रह्मा भोजन, जो केवल चारों युगों में केवल एक ही बार प्राप्त होता है और वो भी केवल गिनी-चुनी आत्माओं को ही प्राप्त होता है, इसे इतने ही महत्त्व से स्वीकार करना चाहिए।

ये बात केवल आश्रम में रहने वालों पर ही घटित नहीं होती, बल्कि जो भी गृहस्थ-आश्रम में रहने वाले भाई-बहनें हैं जो पवित्र भोजन ग्रहण करते हैं, वह भी ब्रह्मा भोजन है। और योग-युक्त भोजन अपने परिवार या सम्पर्क वालों को खिलाकर, उनके मन को शुद्ध कर सकते हैं और उन्हें ईश्वरीय आकर्षण में ला सकने हैं या उन्हें अपने और ईश्वरीय सेवा में सहयोगी बना सकते हैं।

आज संसार में अशान्ति और तनाव का एक कारण अशुद्ध, तामसिक और अशुद्ध आत्माओं द्वारा बनाया गया भोजन भी है। अगर मनुष्य अपने भोजन पर ध्यान दें तो उसके मन की अशान्ति दूर हो सकती है और वह सुखी जीवन जी सकता है।

विश्व शान्ति

ब्र० कु० राधा अग्रवाल, लखनऊ

"काश ! मैं लखपती होता तो कितना सुख होता। खुद भी आराम से रहता और दूसरों को भी खिलाता-पिलाता और खुश कर देता। मेरे दरवाज़े से कोई खाली झोली लेकर वापस न जाता। यदि 'माँग' के लिए कोई झोली फैलाता तो उसकी झोली 'माँग' से ज़्यादा भर देता।" ऐसे विचार मेरे मन को झकझोर रहे थे और अचानक एक भूमिका मेरे मानस-पटल पर अपना चित्र अंकित करने लगी। मुझे ऐसा लगा कि दुनिया में चारों तरफ़ मार-काट मची हुई है, बाढ़ और भूकम्प से पीड़ित आत्मायें तड़प रहीं हैं लेकिन सुरक्षा नाम की कोई चीज़ नहीं।

क्या आज इस अशांत विश्व में लखपती बनकर मैं "विश्वशांति" ला सकता हूँ ? मैंने अपने में ही उत्तर पाया—कभी नहीं। तुम कभी नहीं ऐसा कर सकते। क्योंकि मायावी प्रकोप में सभी डसे हैं और वातावरण पूर्ण-रूपेण दूषित हो चुका है। सारा संसार अशांति का शिकार है। विश्व के सारे राष्ट्र आपस में शांति चाहते लेकिन एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर विश्वास ही नहीं करता है। बड़ी-बड़ी सभायें होती हैं, बड़े-बड़े भाषण होते हैं, सम्मेलन भी होते हैं, लेकिन कहावत के अनुसार—"मर्ज़ बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की है, भय और संदेह आपस में बढ़ता ही जाता है और अशांति की उत्पत्ति होती जाती है। एक जाति दूसरी जाति पर, एक देश दूसरे देश पर विश्वास नहीं करता है। अतः विश्व शांति एक समस्या बनकर हमारे सम्मुख खड़ी हो गयी है।

अशांति का कारण

प्रश्न उठता है कि आख़िर इस अशांति के क्या कारण हो सकते हैं ? आज मानव-मानव के खून का प्यासा क्यों है ? यह शिक्षा और संस्कृति की चहुमुखी प्रगति भी सुख देने में निर्बल क्यों बन गयी ? विचार करने पर ज्ञात होता है कि इन सबका कारण है मानव की बुद्धि का दुरुपयोग। हमारे देश में इसी कारण बहुत-से युद्ध हो चुके हैं। प्रथम विश्व युद्ध, द्वितीय विश्व युद्ध की जड़ डालकर ही ख़त्म हुआ। यह बहुत ही भयंकर किस्म के युद्ध थे। आज मानव ने ऐसी लीला रची है कि युद्ध अपना ताण्डव नृत्य सारे विश्व के कोने-कोने में कर रहा है।

मनुष्य की बुद्धि को विज्ञान ने उन्नति पर ले जाने के साथ-साथ क्रूर, असभ्य तथा आलसी बना दिया। एक तरफ़ परमाणविक मशीनों द्वारा बड़े-बड़े कारखाने चलाये जाते हैं, और दूसरी तरफ़ यही विनाश का भी सुलभ साधन है। इस मानव बुद्धि ने नागासाकी हीरोशिमा में हुए बम विस्फ़ोट में क्या करके न दिखाया और आगे क्या करेगी ? यह सोचकर दिल दहल जाता है। पता नहीं यह मानव बुद्धि कहाँ अपना विश्राम स्थान निश्चित करेगी।

आज कितनी दयनीय दशा है। पहले युद्ध यदि होते भी थे तो कुछ समय बाद शांति का वातावरण ला देते थे। लेकिन आज शय्या पर पड़ा रोगी, सोता हुआ मासूम बालक, खेतों में कार्य करता किसान, मजदूरी की टोह में फिरता मज़दूर आदि बम डाल कर नष्ट कर दिये जाते हैं। यह सब आपस का अविश्वास ही तो है। ऐसे युद्धों का ख़तरा कभी समाप्त नहीं होता।

मानव की बुद्धि निरन्तर विनाश की ओर ही अग्रसर है लेकिन फिर भी कौन ध्यान देता है ? एक धनी व्यक्ति और अधिक धनी बनने के लिए गरीब व्यक्तियों का रक्त चूस लेता है। जनता पीड़ित होकर रक्तपात क्रांति कर बैठती है। एक सम्प्रदाय, जाति तथा वर्ण वाले अपने-अपने वर्गों के हित में ही लगे

रहते हैं। वे तो दूसरों का अहित करके भी अपने वर्ग के लोगों का हित करते हैं। भारत और पाकिस्तान का इसी कारण मन-मुटाव चल रहा है। सम्भवतः देखने पर ज्ञात होता है कि मानव को मशीनों ने दरिद्र और आलसी बना दिया है। और वर्ग-संघर्ष उठ खड़े हुए जिससे युद्ध अशांति की जड़ें पड़ जाती हैं। साम्य वाद और साम्राज्यवाद कोशिश करने पर भी विश्व शांति नहीं ला पा रहे हैं। क्योंकि दोनों ही एक-दूसरे पर अविश्वास रखते हैं और खुद की हनक को कायम रखने के लिए अस्त्रों-शस्त्रों की खोज में लगे हुए हैं। उन्हें मालूम होना चाहिए कि अस्त्रों का एक ही उपयोग है, वह है—हिंसा और सर्वनाश।

विश्व शांति कैसे होगी

वास्तव में विश्व शांति के लिए जिन दैवी गुणों—सत्य, दया, अहिंसा, परोपकार, सन्तोष, पारस्परिक विश्वास की धारणा को छोड़ दिया था, वह पुनः वापस लाना पड़ेगा तभी विश्व शांति के लिए सहारा नज़र आयेगा। जब इस प्रकार की अशांति चारों तरफ़ व्याप्त होती है तो ऐसे समय पर स्वयं परम-पिता परमात्मा आकर विश्व शांति का बीड़ा उठाते हैं और विश्व के कोने-कोने में 'विश्व शांति' के झंडे गाड़ देते हैं। आधा कल्प से फैली अशान्ति को क्षणिक समय में परमपिता परमात्मा शांति में बदल देते हैं। अतः "शिवबाबा" के महावाक्य हैं कि जब तक हम विश्व में फैले हुए दूषित वातावरण को नहीं बदलेंगे तब तक 'विश्व शांति' नहीं आ सकती है। अतः सभी एक साथ होकर पहले वातावरण को पवित्र बनायें तो "विश्व शांति" स्वतः आ जायेगी।

कविता

मुझे बचा लो

ब्रह्मा कुमार राजू, गुमला, राँची

हज़ार फीट गहरी खाई से
शिव बाबा की प्यारी बच्ची
चिल्लाती है, "मुझे निकालो,
मैं पवित्रता हूँ, मुझे बचालो।"

"सृष्टि प्रारंभ में जिसके सर पर
चमकती थी ताज बनकर
उसी ने मुझे ठुकरा दिया,
अब उठाकर गले लगा लो
मैं पवित्रता हूँ मुझे बचालो।"

"जब से मुझे जग ने छोड़ा है, देखो !
इसका क्या हाल हो गया है ?
ताज की तो बात परे, टोपी भी उड़ चली,
माया की कमाल हो गयी है,
आह ! तुम्हारी असहय वेदना दूर करूँगी मुझे
अपनालो।
मैं पवित्रता हूँ मुझे बचालो।"

कांचन मृग

ले० ब्रह्माकुमार जनार्दन चौधरी, वर्धा

संगम युग के शुभ समय पर परमपिता शिव परमात्मा ने ब्रह्मा द्वारा ज्ञान दिया कि हम सभी शिव वंशी ब्राह्मणों की दृष्टि, वृत्ति एवं कृति का वृत्तान्त शास्त्रों आदि में दंत कथा के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

इस दंतकथा से हम अच्छी तरह परिचित हैं कि सुवर्णमय कंचुकी धारण किया हुआ एक नयनरम्य मनोहारी कांचन मृग सीता को दृष्टिगोचर हुआ। उसे देखकर सीता जी के मन में एक इच्छा उत्पन्न हुई जिसे छोड़ना बहुत कठिन था। श्रीराम उसकी व्यर्थ की इच्छा का निर्मूलन करने लगे कि यह तो तुम्हारा भ्रम है। ऐसा नयनरम्य, मनोहर, कांचनमय कंचुकी वाला मृग प्रकृति ने पैदा ही नहीं किया। यह मायावी कांचन मृग है। इतना स्पष्ट करने पर भी सीता जी के मन में उजाला नहीं हुआ और आख़िर अन्त में श्रीराम को शिकार करने जाना ही पड़ा। साथ-साथ लघु बन्धु लक्ष्मण को भी मजबूर होकर प्रयत्न करना पड़ा और (माया) रावण का रचा हुआ खेल सफ़ल हुआ जिसका परिणाम आगे प्रस्तुत है।

प्रस्तुत रहस्यमय दन्त कथा के पीछे छिपे हुए रहस्य का भेद इस तरह है। इस आदि, अनादि एवं अविनाशी कल्प के अन्त में परमप्यारे निराकार शिव अर्थात राम हम सभी आत्मा रुपी सीताओं को अपनाकर श्रीमत पर चलने का उद्देश्यपूर्ण कर्त्तव्य कराते हैं जिस श्रीमत द्वारा हम २१ जन्मों की अविनाशी राजाई प्राप्त करते हैं। सदा सुखी, पावन, समृद्धशाली जगत के महान मालिक बन जाते हैं, जहाँ पवित्रता, सुख, शान्ति सदा निवास करते हैं, जहाँ आनन्द, प्रेम, सन्तुष्टता का सदा संचार होता रहता है, हर मुख मण्डल से महानता, सन्तुष्टता प्रदर्शित होती है, सुमधुर दृश्य समृद्धि का प्रतीक दृष्टिगोचर होता है।

हमारे बेहद के कल्याणकारी निराकार शिव बाबा अर्थात श्रीराम ने सारा जगत हमारे स्वाधीन किया। इस सम्पूर्ण धरती पर हमारे राज्य का वरसा प्रदान किया। आसमान पर भी अधिकार प्राप्त करा दिया। सागर को समर्पण करा दिया। प्रकृति को दासी बना दिया। सारे संसार को सुखमय, आनन्दमय, प्रेममय करने हेतु ताज तख्त, और तिलक का प्रदान किया। यथा राजा रानी तथा प्रजा – यह वहीं का गायन है। यह छत्रछाया बेहद बाप की है। जिस छाया में बाप दादा द्वारा मिली पालना का हाथ तथा बेहद की सेवा का साथ अर्थात पवित्रता थी। यह उसी का अभयदान था। निराकारी, निर्विकारी तथा निरहंकारी अर्थात जीवन के उच्चतम स्थिति का सौन्दर्य सम्पन्न प्रकाश वलय का ताज अर्थात पवित्रता का ताज शिव बाबा ने पहनाया था। जिस तरह राजा का चैन, उसी प्रकार प्रजा का भी। प्रजा का सुयोग्य संचालन तथा संरक्षण देने विश्व के कल्याणार्थ निमित्त बनाने, जीवनमुक्त ज़िन्दगी बसाने हेतु विश्व-पिता ने विश्व-महाराजन पद का बहुमूल्य हीरे, मोती रत्नों द्वारा जड़ा हुआ तख्त सृजन किया। अमरत्व की अविस्मरणीय समृति का आत्म तिलक दिया।

समस्त देवताओं का पतन करने के लिए रावण ने पहले कामिनी को कांचनमय रूप धारण की हुई सुर्पनखा को भेजा जिसके कारण समस्त देवताओं का पतन हुआ। इसके साथ-साथ क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार—इन हस्तकों को भी भेजा। इसका प्रमाण आज वर्तमान समय प्रत्यक्ष है। रावण निर्मित कांचन मृग को देख मानव इतना भाव-विभोर हो उठता है। भाव-वश खुद की सुध-बुध भूल जाता है, अन्धा बन जाता है। उसकी कामान्धता उसके

प्राणों पर भी आ जाती है। इतना मन को लुभावना, मन को हरण करने वाला भ्रम होता है। वह मृग काँचन का होता है। न वह सत्य रूप वाला होता है जो इतना मनोहारी तथा मनमोहक हो। ऐसे ही कांचनमय मृग को देख, मानव मानवता को भूल दानव बन दानवता का पार्ट अदा कर रहा है। इसी काम भावना से मित्र मित्रता नहीं बल्कि शत्रु बन कर शत्रुत्व कर रहा है। यही रावण का दूत काम है जो मानव का महाशत्रु है। इसी कामिनी काँचन सुर्पनखा, रावण की बहन का वर्णन शास्त्रों आदि में किया हुआ है। क्रोध भी रावण का मायावी दूसरा रूप है जिसको क्रोधाग्नि कहा जाता है जिसमें हम खुद भी जलते हैं, साथ-साथ दूसरों को भी जलाने के निमित्त बनते हैं। जैसे अग्नि के प्रभाव से पानी भी सूख कर शुष्कता पैदा करता है। रावण ने बहुत ही अच्छा मायावी तथा मेधावी रूप का मानव का तीसरा शत्रु लोभ पैदा किया जिसने घर को घर न रखा बल्कि श्मशान बना दिया। इज्ज़त को इज्ज़त न रखा वल्कि बेइज्ज़त कर दिया। इन्सान को इन्सान के लिए अनजान बना दिया। उसी तरह रावण ने निर्माण किया मोहिनी रूप 'मोह' का जो बहुत ही रॉयल (Royal) होता है परन्तु रियल (Real) नहीं होता है। रावण का सबसे बड़ा हस्त अहंकार है, जिसने अपनी ताकत से समस्त विश्व पर राज्य स्थापित किया हुआ है। यह सभी मानव-मात्र के सिर पर सवार है और सबको कठपुतली की तरह नचाता है। इसने ही मानव को दानव बनाया है। राजाओं-महाराजाओं को सिंहासन से उठाया है। भाई को भाई से अलग कर दिया है। सारे संसार में तबाही मचाने वाला यह अहँकार—काम, क्रोध, लोभ, मोह का जन्मदाता है। अतः अब सोचने की बात यह है कि इन विकारों के वशीभूत किया गया कार्य, जो उस वक्त सुखप्रद लगता है, वास्तव में दुःखप्रद होता है।

पाँचों विकारों के वशीभूत होने से हम सभी आत्माओं रूपी सीताओं ने दुःख अशान्ति को ही पाया। निराकार परमपिता परमात्मा शिव अर्थात् निराकार राम द्वारा मिला हुआ प्रकाश वलयांकित 'ताज' रावण ने छीन लिया। विश्व के कल्याणार्थ संचालन तथा संरक्षण करने के लिए मिले हुए 'तख्त' से रावण ने लात मारकर उठा दिया। और अमर स्मृति के आत्म दीप को बुझा दिया अर्थात आत्म-तिलक को पोंछ डाला। निर्विकारी पावन, श्रेष्ठाचारी देव पद से विकारी, पतित, भ्रष्टाचारी, पद भ्रष्ट मनुष्य बनाया। हीरे तुल्य जीवन से वंचित किया। कौड़ी तुल्य, मोहताज, कंगाल बनाया। दुःख और अशान्ति के आधीन किया। इस अधीनता के कारण आधा कल्प तक भक्तों के रखवाले भगवान को बुलाया। मस्जिदों में ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया, मंदिरों में रात दिन भजन-कीर्तन किये, पूजा-पाठ, जप-तप किये, पत्थर तथा पहाड़ों में ढूँढा, गली-गली में देखा, कई बार गेरुए वस्त्र धारण कर जंगल की राह ली, नंगे पाँव चारों धामों की यात्रा की, खुद को न्योच्छावर भी किया, बलि भी दी फिर भी दुर्गति को पाते रहे, दुःख और अशान्ति जो मन में घर करके बैठी, वह बढ़ती ही रही।

इसलिए अब परमपिता परमात्मा का दिव्य संदेश है कि संगम युग की शुभ बेला अमरत्व का वरदान देने आयी है, इस ही शुभवेला में अपना कल्याण कर लो। जिस रावण ने तुम्हें पतित, भ्रष्टाचारी, कंगाल बनाया है, दुःखी और अशान्त बनाया है, उस मायावी कांचन मृग का अभी अन्त होने वाला है। कलियुगी दुनिया का अन्त अब बहुत ही निकट आ पहुँचा है, सतयुगी पावन स्वर्ग का उदय होने वाला है। अब मुझ निराकार परमात्मा शिव को यथार्थ रीति जानकर याद करो तो तुम २१ जन्मों के लिए स्वर्ग के अखण्ड सुख, शान्ति तथा प्रेममय जगत के मालिक बनोगे। इसलिए अब मेरी श्रीमत पर चल कर मायावी कांचन मृग को पहचान कर, आगे कदम रखो तो सफ़लता तुम्हारा जन्म सिद्ध अधिकार है। 'योगी भव पवित्र भव' के वरदान को धारण कर पतित, दुःखी, अशान्त जीवन को हीरे तुल्य, पावन तथा सुखी जीवन बनाओ, अब कुछ ही समय बाकी है। अब नहीं तो कभी नहीं।

मानव की प्यास

ले० ब्रह्माकुमारी हंसा, नड़ियाद

जीवन को जीवित रखने की औषधि कौनसी ?

आज के मानव-जीवन पर दृष्टिपात किया जाए तो प्राथमिक रीति दुनिया दिन प्रति दिन प्रगति-पथ पर दौड़ रही है, ऐसा महसूस होता है। परन्तु ज़रा सोचा जाए कि इस विकास की दौड़ की मंज़िल कौनसी ? सुख और शान्ति की प्राप्ति कैसे हो ? सवेरे से लेकर रात्रि तक व्यक्ति भाग-दौड़ करता है सुख शान्ति सम्पन्न जीवन बनाने के लक्ष्य से, लेकिन वह है कहाँ, मिले कहाँ से ?

सुख साधनों में नहीं

इन प्रश्नों का उत्तर ढूंढने के लिए अपनी समझ के अनुसार बेचारा अबोध मानव धन की प्राप्ति के पीछे आँख बन्द करके दौड़ रहा है। लगता है शायद स्थूल सम्पत्ति ही उसका जीवन है। हाँ, इसमें कोई संशय नहीं कि धन द्वारा ही व्यक्ति भौतिक साधनों से अपना घर सजा लेता है। एअर कंडीशन उसको गर्मी में शीतलता देता हैं। टी० वी० उसे दूर के दृश्यों को नज़दीक दिखा देता है। और ऐसे तो अनेक साधन उसके जीवन को हरा-भरा करने को तैय्यार हैं। लेकिन इन सुख के साधनों में यह क्षमता नहीं है जो मानव जीवन को सुखी बनावें। क्यों ? क्योंकि साधन शरीर को सुख देते हैं, मन को सुखी व शान्त नहीं बना सकते।

आज हम विदेशियों का भी प्रत्यक्ष प्रमाण देख रहे हैं। औद्योगिकता की पराकाष्ठा पर पहुँचने के पश्चात भी स्वयं को खाली महसूस करते हैं। बहुत अमूल्य साधनों को भोगते हुए भी मन परेशान है तो वास्तविक सुखी जीवन का रहस्य क्या है ?

जड़ यंत्रवाद ने स्थूल सुखों की प्राप्ति के पीछे मानव को अन्धा बनाया है, उसे स्वयं ही मालूम नहीं कि वह किस राह पर जा रहा है। चाहता है अमृत को प्राप्त करूँ, शीतलता मिले, जीवन समृद्ध हो जाये लेकिन अज्ञानता के वश देहाभिमान में डूबकर ज़हर और जलन की तरफ़ भाग रहा है। स्वयं की चाह को पहचाने बगैर दौड़ता हुआ मानव लाचार हो गया है।

आज पाश्चात्य संस्कृति के तौर तरीके से यह नज़र आता है और मनोवैज्ञानिकों ने भी अपना अनुभव बताया है। कितने ही युवक-युवतियाँ और प्रौढ़ भी ऐसे हैं जिनके पास किसी चीज़ की कमी नहीं होती और वे अपनी ज़िन्दगी का अन्त कर लेते हैं—मात्र स्नेह की कमी के कारण। वहाँ की सारी समाज रचना छिन्न-भिन्न होती जा रही है, परिवार विभाजित होते जा रहे हैं। युवावर्ग स्वतन्त्रता के नाम पर स्वच्छन्द बन रहा है। मात्र स्वाद, लोभ तथा वासना की नींव पर बने हुए मानव सम्बन्ध से प्रेम की खुशबु तो दूर रही, समय प्रति समय तिरस्कार घृणा, द्वेष-भावना की दुर्गन्ध आती है। अतएव मानव-मन प्रेम का प्यासा है और इसी कमी के कारण आज का मानव-जीवन वीरान-सा बनता जा रहा है। जहाँ तहाँ विस्फोटकता नज़र आती है तो सुख और सुखी का अन्तर मिटाने की शक्ति स्नेह में है।

सबको प्यार की प्यास

अनुभव कहता है कि प्रेममयी दृष्टि या स्नेह से भरे शब्द व्यक्ति के जीवन को हरा-भरा बनाने के लिए काफी हैं। उसकी कोई भी प्रकार की बीमारी, चाहे तन की हो, मन की या धन की, स्नेह के बल से आधी तो तुरन्त ही दूर हो जाती है। इसीलिए कहा गया है 'Love is life' प्यार ही जीवन है। वर्ना मानव ज़िन्दा होते हुए भी मुर्दे के समान है।

लेकिन सच्चा निःस्वार्थ स्नेह रस कहाँ झरता है ? आज मोहवश मानव अपनी भोगनाओं में डूबता जा रहा है तो शुद्ध स्नेह कहाँ से प्राप्त करें ? मानव जब मानव से ऊब जाता है, विनाशी, क्षणभंगुर सम्बन्धों से थक जाता है तो भागता है ईश्वर की

ओर। पुकारता है 'तू प्यार का सागर है, तेरी एक बूंद के प्यासे हम···'

सचमुच सारे ही विश्व में एक-एक आत्मा परमात्मा प्यार की बूंद का प्यासा है। परन्तु वह ईश्वर कौन ? आज की दुनिया में तो अनेक प्रकार से प्रभु का वर्णन किया गया है तो मन परेशान हो जाता है कि आखिर कहाँ है वह प्यार का सागर ? कहाँ है परमपिता परमात्मा ? धुंधले बन गये मानव जीवन में, अन्धकारमय विश्व में एक दिव्य ज्योति का अवतरण होता है। वह निराकार ज्योतिर्लिङ्गम शिव बाबा ज्ञान रोशनी से मानव जीवन को प्रकाशित कर प्रेम-अमृत पिलाकर जलते हुए मन को परितृप्त करता है।

वह स्वयंभू शिव बाबा सृष्टि मेले में बिछुड़े हुए अपने बच्चों को अपनी सही पहचान देकर दिव्य प्रकाश पंथ की ओर फिर से हाथ पकड़ कर घर वापिस ले जाता है। जब आत्मा को शिव बाबा का सही परिचय मिल जाता है, अनुभूति हो जाती है, तो वह अपने जीवन को शिव बाबा के प्रति कुर्बान कर देता है।

प्रिय वाचक, अगर आप भी ऐसी तृप्ति, शीतलता और सन्तोष प्रदान करने वाले प्रकाश पुंज परमात्मा शिव बाबा को पहचानना चाहते हैं, तो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय से सम्पर्क कीजिये।

ज्ञान मार्ग में 'चार' का महत्व

ब्रह्मा कुमार नारायण जोशी, इन्दौर

बाबा, सुप्रीम टीचर
चार सब्जेक्ट पढ़ाते।
चार युगों का ज्ञान दे,
चक्रवर्ती महाराजा बनाते।
चार सब्जेक्ट पढ़ने वाले,
सदाचारी बन जाते।
जिनमें ये चार नहीं
'बे-चारे' कहलाते।
चार से आ-चार सुधरते
चार से विचार सुधरते
चार के अभाव में सदा
लोग अत्या-चार करते

चार से छूटती है, चोरी,
चार से चढ़ती है खुमारी।
क्या जानने की है, इच्छा तुम्हारी
ज्ञान, योग सेवा, धारणा यह है
अलौकिक पढ़ाई हमारी।
ज्ञान से,
ज्ञान सागर से सम्बन्ध जुटा
योग से,
जन्मों के पाप कर्म मिटा,
दिव्य गुणों की धारणाओं से
अवगुणों का सफ़ाया कर,
वरदान पा, सेवा कर औरों की।

—: o :—

सोलह कला सम्पूर्ण बनने की युक्तियाँ

(ब्र० कु० मिथलेश, भोपाल)

१

सर्व को मित्र बनाने की कला

(अ) सदा औरों के प्रति शुद्ध प्रेम हो।

(ब) अपना स्वभाव मिलनसार हो और दूसरों के संस्कारों तथा स्वभाव से स्वयं को ढालने की योग्यता होनी चाहिए।

(स) हर कर्म सरल बनाना और मन की सच्चाई, सफ़ाई होनी चाहिए।

(द) सर्व को मान्यता देना अर्थात् उपेक्षा किसी की भी न हो। शान्त स्वभाव व मधुरवाणी वाले ही यह बात सहज धारण कर सकेंगे।

(य) जो जितना मिलनसार होगा और सम्पर्क में आने के गुण वाला होगा। वह सर्व को अपना मित्र बना सकेगा।

(र) दूसरों की सेवा के लिये सदा तैयार रहना अतिआवश्यक है। वही अपनी सेवा है—ऐसा समझकर जीवन में चलना।

(ल) दूसरों के लिये अपने सुख-सुविधा का भी त्याग करने के लिये सदा तैयार रहना चाहिये।

(क) दूसरों की आलोचना न करना, अटहास न करना, प्रशंसा करना, उनके अवगुणों को अपने मन तक रखना चाहिये। और गुणों को जगज़ाहिर करना है।

(ख) मीठे बाबा का महावाक्य है कि सर्वकलायें तब प्राप्त हो सकती हैं जब मनसा से पवित्रता, वाचा से निर्मलता, कर्म में निर्विकारिता होगी।

(ग) इस कला को धारण करने के लिये यह सलोगन सदा याद रखना चाहिये 'निन्दा हमारी जो करे मित्र हमारा सो होय।'

(ड) दृष्टि में सम भाव हो।

(२)

दूसरों में परिवर्तन लाने की कला

१--मीठे बाबा के महावाक्य हैं जो सदा अपने को 'ला-मेकर' अर्थात विधायक तथा 'पीस-मेकर' शान्ति स्थापक समझेगा वह औरों में भी परिवर्तन सदाकाल लिये ला सकेगा।

२—दूसरों की खूबियों को देखना और उन खूबियों पर खड़ा करके उनके अच्छे कर्तव्य में लगाना और अच्छाई में प्रवृत्त करके उनकी बुराई को निकालते जाना।

३—यह कला वही धारण कर सकता है जो ओरों को सदा अपने से सदा आगे रखता है।

४—दूसरे की यथोचित सराहना करके वाह-वाह करके औरों को हिम्मत देना तथा आगे बढ़ाने के लिये प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

५—हमें सदा याद रखना है जैसा 'कर्म मैं करूँगा मुझे देखकर और करेंगे'। अर्थात् सदा ईश्वरीय मर्यादा में रहकर और दूसरों को वैसा करने को प्रेरणा देना।

६—बाबा के महावाक्य याद रखें कि किसी की बात को अगर काटना भी है तो पहले यह कहो 'हाँ बहुत अच्छा, क्यों नहीं जरूर होना चाहिए' फिर समझ कर बात करो।

७—औरों की विचारधारा को पलटाने के लिये स्वयं विवेक युक्त व योग युक्त अवस्था में रहते हुए सर्व-कार्य व्यवहार करना है।

७—मीठे बाबा का महावाक्य है बच्चे जब तुम्हारे हर कर्त्तव्य में अलौकिकता होगी तब ही औरों में अलौकिकता ला सकेंगे।

अपराधी कौन ?

लेखक—ब्रह्मा कुमार आनन्द, जालन्धर

पात्र :—

(१) महाराजा, (२) महामंत्री (३) अटोरनी जनरल (४) युवक (५) ढिंढोरची (६) स्वामी सीद्धनन्द (७) योगीराज, (८) गोपी नाथ, (९) महाराज गजानन्द एवं (१०) श्री भवानी शंकर

द्वारपाल एवं काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, की वेशभूषा में पाँच बच्चे।

प्रथम दृश्य

(महाराजा का दरबार का दृश्य। महाराजा सिंहासन पर विराजमान हैं, एक तरफ़ महामंत्री जी, एक ओर गृह सचिव दरबार में बैठे हुए हैं।)

'परदा उठता है'

महाराजा—महामन्त्री जी ! इससे पहले कि राज दरबार की ज़रूरी कार्यवाही शुरू हो तथा नए हुकमनामों का एलान किया जाये, मैं यह जानना चाहूँगा कि राज्य में कानून और शासन व्यवस्था में कहाँ तक सुधार हुआ है, तथा जनता का सामान्य जीवन कैसा चल रहा है ?

महामंत्री—महाराज ! राज्य की तरफ़ से जनता को हर सम्भव सुविधा दी जा रही है, देश में ला एवं आर्डर (Low & Order) बनाए रखने के लिये कानून की सख्ती से पालना की जा रही है। मिलावट तथा जमाखोरी को खत्म करने के लिये स्वास्थ्य विभाग को सख्त हिदायतें जारी कर दी गई हैं। लड़ाई-झगड़ा, खून खराबा, चोरी डकैती पर कंट्रोल के लिये हर मुहल्ले में पुलिस चौंकियां खोल दी गई हैं।

महाराजा—अटोरनी जनरल जी, आप भी बताएँ कि अदालतों की कारवाई कैसे चल रही है, मुकद्दमों में कहाँ तक सुधार हुआ है तथा अपराधियों की संख्या कितनी कम हुई है।

अटोरनी जनरल—महाराज ! अदालतों की कारवाई में सुधार तो हुआ है पर मुकद्दमे तो आगे से ज़्यादा बढ़ते जा रहे हैं। अपराधियों को सख्त से सख्त सजा मिलने के बावजूद भी अपराधी तो बढ़ते ही जा रहे हैं, अदालतों में लटक रहे लाखों केस जल्दी से कैसे निपटाये जायें इस के लिये गिरधारी लाल कमीशन की स्थापना कर दी गई है। जो अपनी रिपोर्ट दो वर्ष के भीतर देगा।

महाराजा—कमीशन तो पहले भी तीन चार बार बिठा चुके हैं। फिर भी ठीक है अच्छा किया है। जनता में संतोष पैदा करने के लिये एक नया कमीशन नियुक्त कर देना राईट (उचित) है।

अटोरनी जनरल—महाराज ! यह सब कुछ तो हमने आप से ही तो सीखा है। आप के अनुभवों को ही तो हम प्रयोग में ला रहे हैं।

महाराजा—महामंत्री जी ! इन सब के इलावा और कौन से नए कदम उठाये गए हैं जिससे जन-जीवन सुख शान्ति सम्पन्न बने। तथा राज्य की आर्थिक और शासन व्यवस्था में सुधार आ रहा हो।

महामंत्री—महाराज ! विद्यार्थियों में अनुशासन हीनता बहुत फैल रहा है क्योंकि बेरोजगारी बहुत बढ़ती जा रही है। इस बात को ध्यान में रखते हुए हर शहर में बेरोजगारी दफ़्तर खोल दिये गए हैं, कारखानेदार और मजदूरों के झगड़े कैसे खत्म हों इसके लिये चन्दालाल कमीशन की नियुक्ति कर दी गई है। इसके इलावा इस बात पर भी सोचा गया है कि शराब पीने से लोगों का छुटकारा कैसे हो, इस के लिये १२५ सदस्यों की एक कमेटी देश में बना दी गई है। जो अपनी सिफारशें तीन साल के अन्दर-अन्दर देगी।

महाराजा—परन्तु तीन साल तो बहुत लम्बा समय है, इससे तो जन समुदाये पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा। दूसरा १२५ सदस्यों की कमेटी तो बहुत बड़ी है, वह तो एक राय पर भी नहीं पहुँच सकती।

महामंत्री—महाराज ! इसी उद्देश्य से ही तो इस कमेटी की स्थापना की गई है। इस समस्या का हल करना राज्य के हित में नहीं है।

महाराजा—यह तो सब ठीक है, इन कमेटियों की स्थापना का एलान समाचार-पत्रों में खूब बढ़ा चढ़ा कर दिया जाये ताकि देश में असंतोष न बढ़े। (अटोरनी जनरल को सम्बोधन करते हुए) जैसा कि पिछले दरबार में हुकम दिया गया था कि मुझे वो सभी आँकड़े बताए जाएं जिससे पता चले

कि देश की शासन व्यवस्था में क्या तबदीली आई है। समृद्धि और शान्ति कहाँ तक बढ़ी है। जनता के जानमाल का सुरक्षा में क्या उन्नति हुई है। लड़ाई झगड़ों में कहाँ तक सुधार हुआ है। आम जनता के स्वास्थ्य सुधार में कहाँ तक सफलता प्राप्त हुई है।

अटोरनी जनरल—महाराज की आज्ञा हो तो इस वर्ष के यथार्थ आँकड़े सुनाऊँ।

महाराजा—हाँ हाँ पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष क्या सुधार हुआ है, सब प्रस्तुत किया जाये।

अटोरनी जनरल—महाराज ! पिछले वर्ष की तुलना में आंकड़े इस प्रकार हैं।

पिछले वर्ष चोरी के केस	१४००	इस वर्ष	१६००
पिछले वर्ष हत्या के केस	१०३५	इस वर्ष	१८१५
पिछले वर्ष डकैती के केस	१००	इस वर्ष	१५०
पिछले वर्ष आत्म हत्या करने वाले	६००	इस वर्ष	९००
पिछले वर्ष पागल होने वाले	७००	इस वर्ष	१७००
पिछले वर्ष कुल दर्ज मुकद्दमें	१०१३२	इस वर्ष	१८३१४
पिछले वर्ष शराब पीकर मरने वाले	५३५	इस वर्ष	९५०
पिछले वर्ष शराब से आमदनी	१० करोड़	इस वर्ष	२८ करोड़
पिछले वर्ष जूआ खेलते पकड़े गए	९००	इस वर्ष	१५००
पिछले वर्ष लाटरी से आमदनी	१८ लाख	इस वर्ष	३८ लाख
पिछले वर्ष विद्यार्थियों द्वारा तोड़फोड़ व आगजनी की घटनाएँ	७००	इस वर्ष	१४००
पिछले वर्ष मज़दूर मिल मालिकों के झगड़े	४००	इस वर्ष	७५०
पिछले वर्ष अवैध बच्चों को जन्म	१२००	इस वर्ष	२२००
पिछले वर्ष अपहरण के केस	१४५०	इस वर्ष	१८५०
पिछले वर्ष खाने पीने की चीजों में मिलावट करते पकड़े गए	९००	इस वर्ष	२९००
पिछले वर्ष रिश्वत लेते रंगे हाथों पकड़े गए	१०००	इस वर्ष	१९००
पिछले वर्ष अस्पतालों में दाख़िल होने वाले रोगी	डेढ़लाख	इस वर्ष	तीन लाख
पिछले वर्ष जनसंख्या में वृद्धि	३ लाख	इस वर्ष	५ लाख

महाराजा—महामंत्री जी ! यदि देश में हालात इस प्रकार बिगड़ते जा रहे हैं, लड़ाई झगड़े मुकद्दमे और अपराध बढ़ते जा रहे हैं तो जगह-जगह पुलिस चौकियां खोलने का राज्य को क्या लाभ पहुँचा, आखिर इन सब समस्याओं का हल क्या है ?

महामंत्री—महाराज विषय चिन्ता का ही है। समस्या दिनोंदिन जटिल होती जा रही है। अपराधों को खत्म कैसे किया जाये। अपराधी कौन है। यह निर्णय करना भी मुश्किल हो रहा है। हज़ारों जूआ खेलने वालों, लड़ाई झगड़े करने वालों और शराब पीने वालों को गिरफ़्तार किया जा चुका है। सैंकड़ों मिलावट करने वाले और रिश्वत लेने वाले जेलों में बन्द कर दिये गए हैं परन्तु अपराध तो बढ़ते ही जा रहे हैं।

अटोरनी जनरल—महाराजा इतना ही नहीं, हम जितनी नई पुलिस चौकियाँ खोलते जा रहे हैं उतने ही गलियों, मुहल्लों और बाज़ारों में अपराध बढ़ते जा रहे हैं। दफ़्तरों में रिश्वत बढ़ रही है तो अस्पतालों में मरीज़। जितनी नई अदालतें खुलती जा रही हैं उससे कहीं ज्यादा मुकद्दमें बढ़ रहे हैं। गावों, शहरों में स्कूल कालेज बढ़ रहे हैं तो बेरोज़गार दफ़्तरों में लम्बी कतारें। जितनी तेज़ी से मोटरें कारें बढ़ रही हैं उससे ज्यादा तेजी से दुर्घटनाएँ बढ़ रही हैं।

महाराजा—अटोरनी जनरल जी ! तुम्हारा इस बारे में क्या विचार है, नई नीतियों और कार्यक्रम का राज्य की अर्थ व्यवस्था तथा सामाजिक दशा पर क्या प्रभाव पड़ा है।

अटोरनी जनरल—महाराज ! महामंत्री जी ठीक ही कह रहे हैं मुझे प्राप्त आंकड़ों के अनुसार—जितना नशाबंदी का प्रचार बढ़ रहा है उतनी शराब की बिक्री बढ़ रही है। जितने टैक्स बढ़ रहे हैं उतना ही टैक्सों की चोरी बढ़ है। जितने जुआरी पकड़े जा रहे हैं उतना ही लाटरी से राज्य की आमदन बढ़ती जा रही हैं। जितने पर्मिट अधिक बांटे जा रहे हैं उतना ही बलैक बढ़ रही है। जितने डिपू ज्यादा खुल रहे हैं उतनी किल्लत बढ़ रही है। दूसरी तरफ जितने धर्म ज्यादा बढ़ते जा रहे हैं उतना ही अधर्म बढ़ता जा रहा है।

महाराजा—हमें अपने राज्य शासन एवं कानून

व्यवस्था में सुधार, समाजिक बुराइयों और कुरीतियों का खात्मा तथा जनता-जनार्दन के चरित्र को अवश्य ऊंचा उठाना है। अपराधियों को ढूंढना चाहिये। इन समस्याओं को पैदा करने वाले अपराधी कौन हैं? इस बाबत देश के विद्वानों की भी राय ली जानी चाहिये।

महामन्त्री—महाराज ! अगर इस बाबत देश में एक महासम्मेलन का आयोजन किया जाये तो कैसा रहेगा ?

महाराजा—आपकी राय बहुत अच्छी है। मैं इससे सहमत हूँ। महामन्त्री जी ! शीघ्र ही देश के प्रसिद्ध विद्वानों का एक विशाल सम्मेलन आयोजित किया जाये। जिसमें एक विचार विमर्श हो कि देश में शान्ति कैसे हो, अपराध कैसे घटें, अपराधी कौन हैं, ताकि उन पर नियन्त्रण किया जा सके, राज्य की ओर से अटोरनी जनरल जी उसमें भाग लेंगे तथा महामन्त्री जी उस सम्मेलन की अध्यक्षता करेंगे।

पर्दा गिरता है

दूसरा दृश्य

(महामन्त्री की अध्यक्षता में सम्मेलन का दृश्य। महामन्त्री जी थोड़ा ऊँचा सिंहासन पर विराजमान हैं तथा उसके दोनों ओर अर्द्धचन्द्र आकार में चारों ओर विद्वान बैठे हैं तथा बाजू में अटोरनी जनरल बैठा है।)

पर्दा उठता है

महामन्त्री—मैं सर्वप्रथम आए हुए सभी गणमान्य महानुभावों का राज्य की ओर से स्वागत करता हूँ तथा सम्मेलन की कारवाई विधिवत आरम्भ करने की अनुमति देता हूँ।

(सभी का सिर हिलाकर स्वागत स्वीकार करना)

महामन्त्री—प्यारे श्रोतागण ! जैसा कि आपको मालूम है कि यह महासम्मेलन महाराजा की आज्ञा के अनुसार आयोजित किया गया है। हमें अत्यन्त प्रसन्नता है किदेश के सुप्रसिद्ध विद्वान एवं वक्तागण इसमें भाग लेने के लिये देश के कोने कोने से पधारे हैं ! सम्मेलन का मुख्य विषय है कि विभिन्न प्रकार के अपराधों को जन्म देने वाले अपराधी कौन हैं, उन्हें ढूंढ़ा जाये तथा इस विषय पर विचार-विमर्श हो। मैं आए, हुए योग्य वक्ताओं से भी यही निवेदन करूँगा कि इस विषय पर अपने तेजस्वी विचार सुनाएं। सर्वप्रथम मैं मंच पर उपस्थित अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्री अभिनव सच्चिदानन्द जी महाराज से निवेदन करता हूं कि वो अपने विचार प्रकट करें।

सच्चिदानन्द—परम श्रद्धायोग्य श्रोतागण ! मेरे विचार में अपराध एक कुवृत्ति है जिसका कारण व्यक्तिगत बुराइयां, सामाजिक रीतिरिवाज और सरकारी नीतियां हैं। इंसान के अन्दर जो गंदी आदतें पैदा हो गई हैं उन्हीं से ही तो समाज का ढांचा दूषित हो गया है, इसलिये सर्वप्रथम हमें इन बुराइयों पर, काबू पाना होगा तभी अपराध कम हो सकेंगे। यही मेरे तुच्छ विचार हैं।

महामन्त्री—अभी मूर्तिमान धर्म आचार्य, महामहोपाध्याय पूज्यपाद योगीराज गोपीनाथ जी महाराज इस विषय पर अपना प्रवचन सुनाएं।

गोपीनाथ—मेरे विचार में पुराणों, उपनिषदों, अरण्यक ग्रन्थों, ब्राह्मण ग्रंथों, सूत्रों, वेदों दर्शनशास्त्रों आदि का अनिवार्य अध्ययन होने के कारण ही मनोबल कमजोर होता जा रहा है। यही मानव के चरित्र पतन का मूल है तथा मेरे विचार में अपराध का मुख्य कारण है।

महामन्त्री—काव्य वेदान्त तीर्थ, वेदान्त आचार्य साहित्य अलंकार गजानन्द जी महाराज जी से विनय है कि अपने विचार सुनाएं !

गजानन्द—मेरे विचार में अपराध एक स्वाभाविक प्रवृति है। जब से सृष्टि चली तब से अपराध चले आ रहे हैं। सतयुग से कलियुग तक अपराध तो चलते ही हैं, जहाँ धर्म होगा वहाँ अधर्म भी होगा, जहां दिन होता वहाँ रात भी आती। इसलिये अपराधियों के प्रति इतना चिन्तित नहीं होना चाहिये। अपराध तो मानवीय स्वभाव का आवश्यक अंग है, एक मनोवैज्ञानिक सत्यता है।

महामन्त्री—अभी मेरा परम श्रद्धेय, महामहिम, विद्यावागीश, विद्या निधि, विद्या वाचस्पति, विद्या मार्तण्ड, अनन्त श्री विभूषित भवानी शंकर जी से अनुरोध है कि वो अपने विचार व्यक्त करें।

भवानीशंकर—मैं नहीं चाहता कि सम्मेलन वादविवाद का विषय बने परन्तु जो मेरे पूर्व वक्ता ने बोला है, वो पाप, भ्रष्टाचार, हिंसा तथा अपराधों को बढ़ाने वाले विचार हैं, उन्होंने समाज के हित को न सोचकर पांडित्य प्रदर्शन और कोरा दर्शन दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है जो समूचे रूप से दूरगामी बुरा प्रभाव डालने वाला है।

गजानन्द—भवानीशंकर जी ! तुम्हें अपने काशी

के विद्वान होने का मान है तो मैं कश्मीर के श्रेष्ठ स्वर्ण ब्राह्मण कुल से हूँ।

भवानीशंकर—मैंने अथर्व वेद का अध्ययन किया है और मैं एक वेदी हूँ।

गजानन्द—तुम्हें एक वेदी होने का अभिमान है तो मैं द्विवेदी हूँ।

गोपीनाथ—तब मैं तो त्रिवेदी हूँ।

सच्चिदानन्द—मैं चतुर्वेदी हूँ।

महामन्त्री—आर्डर-आर्डर! सभी वक्ताओं से अनुरोध है कि मंच के अनुशासन को बनाए रखें, आज्ञा से कोई मत बोले, बारी-बारी सभी अपने विचार बिना सुनाएं ताकि सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया जाये कि दोषी कौन हैं?

अटोरनी जनरल—मेरे विचार में दोषी प्रजा है जो राजा की आज्ञा का पालन रहीं करती।

सच्चिदानन्द—राजा दोषी हैं जो प्रजा की सुरक्षा नहीं करता।

अटोरनी जनरल—धर्म नेता दोषी है जो अन्ध-श्रद्धा और अधर्म फैला रहे हैं।

गोपीनाथ—अधिकारी दोषी हैं जो परिवार पोषण में हैं।

भवानी शंकर—नहीं व्यापारी और कर्मचारी दोषी हैं जिनमें नैतिकता और इमानदारी नहीं।

गजानन्द—नहीं राजनैतिक नेता दोषी हैं जिनमें कोई सिद्धान्त नहीं।

(सभी वक्ताओं का मेंढ़कों की तरह बैठकर ट्रां ट्रां ट्रां करना शुरू कर देना, जोश और क्रोध प्रकट करना)

महामन्त्री—आर्डर! आर्डर! मुझे खेद है कि इस महासम्मेलन में सभी विद्वान एक मत होकर सर्व-सम्मति से निर्णय नहीं कर सके।

(सभी का फिर ट्रां ट्रां करना शुरू करना)

महामन्त्री—तुम्हारी राय सब की अलग-अलग है, ऐसे कैसे पता चले कि अपराधी कौन है, इसलिये आज का सम्मेलन असफल रहा है। सम्मेलन समाप्त करने की घोषणा की जाती है।

(एक दो के प्रति ट्रां ट्रां ट्रां करते हुए सभी विद्वान सब ओर अलग अगल होकर मेंढ़कों की तरह छलांगे लगाते ट्रां ट्रां ट्रां करते मंच पर बिखर जाते हैं तथा मंच से उतर जाते हैं)

(महामन्त्री एवं अटोरनी जनरल बैठें हैं, सभी विद्वान मंच छोड़कर जा चुके हैं तभी महाराजा का प्रवेश)

महाराजा—महामन्त्री जी! कहिये सम्मेलन कैसा रहा। सभी विद्वान किस निष्कर्ष पर पहुँचे। अपराधी कौन है इस बारे में क्या निर्णय लिया है।

महामन्त्री—महाराज! मुझे बहुत दुख के साथ कहना पड़ता है कि सम्मेलन में सभी विद्वानों की राय अलग-अलग थी, उनके परस्पर विचार भेद के कारण किसी एक निर्णय पर नहीं पहुँच सके। इसके विपरीत वो आपस में ही कटाक्ष करने लगे इसलिये सम्मेलन समय से पहले ही खत्म करना जरूरी हो गया।

महाराजा—अटोरनी जनरल जी! इस बारे में आपका क्या विचार है?

अटोरनी जनरल—महाराज! विद्वान तो अपनी विद्वता के घमंड पर ही अड़े रहे। विषय पर निर्णय तो क्या होता वो तो राज्य की शासन, कानून और नीतियों को भी कोसने पर उतारू हो गए। महाराज, मेरे विचार से इस विषय पर जनसमुदाय की राय ली जाये। उनके विवेक और अनुभव का प्रयोग किया जाये, इससे दोहरा लाभ होगा। एक तो समस्या के प्रति महाराज की रूचि से लोग संतोष महसूस करेंगे दूसरा लोकमत आपके हक में आ जायेगा।

महाराजा—यह विचार प्रशंसा योग्य है। महामन्त्री जी। राजशाही की ओर से सारी राजधानी में एलान किया जाये कि राज्य में दुख अशान्ति फैलाने वाले अपराधी कौन हैं, उनको पकड़ कर पेश करनेवालों को व उनके बारे में जानकारी देने वालों को राज्य की ओर से ५००० अशर्फी नकद इनाम दिया जायेगा।

महामन्त्री—जो आज्ञा महाराजा!

पर्दा गिरता है

(तीसरा दृश्य)

(ढिंढोरची की वेश भूषा में सुशोभित, श्रोतागण में से ढोल पीटते हुए मंच पर ढिंढोरची का प्रवेश)

(पर्दा उठता है।)

ढिंढोरची—सुनिये! सुनिये! सुनिये!

मुनियादी सुनना ज़रा गौर से, फिर बात करना
किसी और से, मुनियादी वाला आया है, खबर ताजा
यह लाया है।

(फिर ढोल पीटना)

कृष्ण भी सुने, करीम भी सुने, राम भी सुने
रहीम भी सुने
काशी भी सुने, काबा भी सुने, मंदिर भी सुने
मसजिद भी सुने
महाराज धिराज की ओर से शाही एलान

किया जाता है कि देश के अन्दर दुख, अशान्ति, लड़ाई, झगड़ा, भ्रष्टाचार को बढ़ाने वाले अपराधियों को पकड़ना है, अपराधों को पैदा करने वाले अपराधियों के बारे में जो जानकारी देगा या अपराधियों को जिंदा या मुर्दा पकड़ कर राज दरबार में पेश करेगा। महाराज की तरफ से उन्हें ५००० अशर्फी नकद इनाम दिया जायेगा। इस बाबत राजदरबार इसी मास की पूर्णिमा को लगेगा।

एलान खत्म हुआ।

ढोल पीटते हुए ढिंढोरची का मंच से उतर जाना।

पर्दा गिरता है।

चौथा दृश्य

(राज्य दरबार का दृश्य, महाराजा सिंहासन पर विराजमान हैं उनके दोनों तरफ महामन्त्री एवं अटोरनी जनरल बैठे हैं।)

महाराजा—महामन्त्री शाही एलान के अनुसार कितने लोग अपराधियों को पकड़कर लाये हैं।

महामन्त्री—महाराज ! सारे देश में बार-बार एलान करवाने के बावजूद भी कोई उत्साह जनक परिणाम नहीं निकला। कोई भी अपराधियों को पकड़कर नहीं लाया केवल एक नवयुवक आया है।

महाराजा—उस नवयुवक को दरबार में सम्मान पूर्वक हाजिर किया जाये।

(द्वारपालों के साथ नवयुवक का प्रवेश)

महामन्त्री—नवयुवक ! शाही एलान के मुताबक तुम महाराज के सन्मुख क्या कहना चाहते हो। अपराधियों के बारे में तुम्हारा क्या विचार है ?

नवयुवक—महाराज ! शाही एलान के अनुसार मैं महाराज की सेवा में उपस्थित हुआ हूँ और सरकारी घोषणा के अनुसार संसार में दुख अशान्ति फैलाने वाले सभी अपराधियों को पकड़कर साथ लाया हूँ।

महाराजा—नवयुवक ! उन सभी अपराधियों को भी दरबार में हाजिर किया जाये।

(नवयुवक का थोड़ा मंच से उतरना तथा द्वारपालों सहित काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की वेशभूषा पहने पाँचों हाथों में लोहे की जंजीर बंधे बच्चों सहित पुनः प्रवेश)

महाराजा—नवयुवक ! आदेश यह था कि अपराध फैलाने वाले अपराधियों को दरबार में लाया जाए। यह कौन हैं जिनको तुम साथ लाए हो।

नवयुवक—महाराज ! मैं सचमुच उन सभी अपराधियों को ही यहाँ लाया हूँ जो जन-जन में कलह कलेष को फैलाने वाले, समाज में कुरीतियों को पैदा करने वाले, अनुशासन हीनता, लड़ाई झगड़ा को फैलाने वाले तथा सर्व समस्याओं को जन्म देने वाले हैं।

अटोरनी जनरल—नवयुवक—जिन अपराधियों को ढूंढने के लिये महाराज ने एलान किया था, वो यही अपराधी हैं—यह समझ से बाहर की बात है, तुम्हारे पास इसका क्या स्पष्टीकरण है।

नवयुवक—महाराज ! यदि हम सभी अपने अन्तर्मन की गहराईयों में झाँककर अपराधियों को ढूंढना चाहें तो वो यही पाँचों हैं। इन्हीं से ही मानवीय स्वभाव विकृत हो चुका है यही सब पीड़ाओं को पैदा करने वाले हैं।

महाराजा—क्या इन दुबले पतले पाँचों ने ही सारे राज्य में अशान्ति और असन्तोष फैला रखा है यह कैसे स्वीकार किया जाये।

नवयुवक—महाराज ! देखिये यह काम विकार है जिसके लिये कहा गया है काम सोये या घर में पाँव पसारे वो घर में। गीता में इसे ही महाशत्रु कहा गया है। जन-जन में इसी की आग के कारण चरित्र हीनता, नैतिक दुर्बलता बढ़ती जा रही है तथा मनोबल कमजोर होता जा रहा है। बलात्कार, वेश्यावृति घिनोने अपराधों का यही मूल है। जनसंख्या में वृद्धि और अनुशासन हीनता जैसी भयानक समस्याएँ इसी कारण बढ़ती जा रही हैं।

(क्रोध की ओर संकेत करते हुए)

नवयुवक—महाराज ! देखिये यह है क्रोध विकार। जो भीतर ही भीतर बड़वानल की तरह हृदय की शीतलता में आग लगा देता है। जो ही आज असंख्य आत्माओं में दुख का मूल कारण है जिसके लिये कहा है :

क्रोधी नर के अन्तर में, बिन ईंधन आग है जलती
बड़वानल देखो कैसी है, जल में ही जो पलती।

यह विकार मानव हृदय में सहनशीलता को दग्ध कर देता है। धार्मिक असहिष्णुता, राष्ट्रीय संकीर्णता, साम्प्रदायिक झगड़ों को बल देकर खून की नदियाँ बहाने वाला यही खतरनाक भूत है। इसने कितनी बहिनों के भाई, माताओं के लाल और पत्नियों के शृंगार को छीन लिया।

महाराजा (उत्सुकता वश) बाकी यह तीनों क्या कर रहे हैं।

नवयुवक—महाराज ! देखिये यह लोभ है जो कभी किसी को सुख की नींद नहीं सोने देता खुद भी दुखी तथा दूसरों को भी दुखी करता है इसके लिये ही तो कहा है।

लोभी के हृदय में देखो सदा भूख है पलती
सारा आटा पिस भी जाये तो भी चक्की चलती

मिलावट—जमाखोरी, रिश्वत, भ्रष्टाचार ब्लैक, टेक्सों की चोरी सब इसी के कारण हो रही है मनुष्यों की तृष्णाओं को बढ़ाकर उन्हें सदा भूखे रख कर सुखाता जा रहा है और खुद मोटा होता जा रहा है।

महाराज—यह मोह है। इसकी मीठी-मीठी तोतली बातों पर सब लट्टू हो जाते हैं फिर यह अपना ताना बाना ऐसा मकड़ी-सा बुन लेता है जिसमें सब फंस जाते हैं फिर घर गृहस्थ व समूचे जीवन में दुख अशान्ति की लहरें पैदा कर देता है। जौंक की तरह खून चूसता चला जाता है परन्तु पता नहीं चलने देता। अपना बनाकर सभी को तड़पाता है और वर्षों भर के लिये जीवन में दुख के बीज बो देता है, तभी तो इसके लिये कहा है कि :

अपने ही धागों को बुन बुन मकड़ी जाल बनाती है
मोही जीव सी फंस कर उसमें अपनी जान गंवाती है

अनेक लड़ाई झगड़ों और अपराधों का मूल यह अपना और पराया ही है। जो इस मोह ने ही पैदा किया है।

महाराजा—युवक ! यह जो महाराज के दरबार में अकड़ कर खड़ा है और मूछों को तांव दे रहा है, यह कौन है ?

नवयुवक—महाराज ! यह है अहंकार। यह जितना देखने में छोटा है उतना ही खोटा है। इस ने ऊंच-नीच, छोटा-बड़ा मालिक-मज़दूर, राजा-प्रजा ब्राह्मण शूद्र नाम से मतभेद पैदा कर दिये हैं। मानव की बुद्धि को मुट्ठी में बन्द कर रखा है। पहाड़ की चोटी पर पहुँचे हुए को भी गहरे गड्ढे में गिरा देता है। इसी ने संसार में झूठी शोभा, दिखावा, फैशन, न जाने कितनी बीमारियों को पैदा किया है।

महाराज—निस्सन्देह यही वो अपराधी है जिन्होंने मानवता को दानवता में बदल दिया है।

(महाराजा, महामन्त्री तथा अटोरनी जनरल सभी की सहमति प्रकट करते हुए स्वीकार करना तथा सिर हिलाना)

महाराजा—महामन्त्री जी ! नवयुवक जिन पाँचों अपराधियों को पकड़कर लाया है यथार्थ रूप से ही यही अपराधी महसूस हो रहे हैं। आपका इस बारे में क्या विचार है ?

महामन्त्री—जी महाराज ! नवयुवक ने जो व्याख्या प्रस्तुत की है वही हम सभी के जीवन का अनुभव भी तो है, आज हमने सहस्त्रों लड़ाई-झगड़ा, चोर बाजारी करने वालों को जेल में भरा हुआ है, यदि वो असली अपराधी होते तो अपराध अवश्य कम हो जाते।

महाराज—कहो अटोरनी जनरल तुम्हारा क्या विचार है ?

अटोरनी जनरल—हाँ महाराज ! नवयुवक की यह बात बिलकुल सच्ची जान पड़ती है कि अपराधी हम सभी के अन्दर रहने वाले पाँचों विकार ही हैं, इन्हीं के कारण ही एक तरफ़ शासन और कानून व्यवस्था में बिगाड़ आ रहा है तथा दूसरी ओर व्यक्तिगत एवं सामाजिक बुराइयों की उत्पति हो रही है।

महाराजा—महामन्त्री जी ! निस्संदेह यह युवक सही अपराधियों को पकड़ कर लाया है, राज्य की तरफ से घोषित ५००० अशर्फी का इनाम इस युवक को देकर सम्मानित किया जाये।

(महामन्त्री जी अशर्फीओं भरी थैली राजा से लेकर युवक की ओर लेकर आता है।

महामन्त्री—नवयुवक ! लीजिये महाराजा की ओर से घोषित इनाम। इसे स्वीकारें।

(मंच पर सामने शिव के चित्र का जगना)

नवयुवक—महाराज ! इस इनाम का अधिकारी मैं नहीं, मुझे भी रोशनी देने वाला वो स्वयं परमपिता परमात्मा शिव है। हम सभी को उनका ही आभारी होना चाहिये। उन्हीं के ज्ञान प्रकाश से इन विकारों का अन्त होता है।

(इसी मध्य नृत्य संगीत करते हुए अंधियारे सभी मिट गए गीत पराक्षेप चलता है तथा पाँचों विकार बारी-बारी तड़पते हुए गिरते चले जाते हैं।)

□

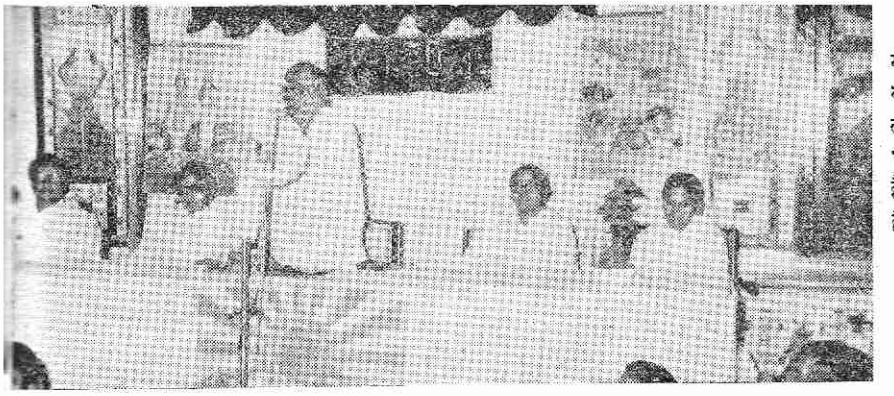

यह चित्र वारंगल सेवा केन्द्र के तृतीय वार्षिकोत्सव के अवसर का है। काकातीय विश्व-विद्यालय के प्राधानाचार्य भ्राता वासुदेवराव जी प्रवचन कर रहे हैं तथा मंच पर वहां के बहन भाई बैठे हैं।

यह चित्र अमरावती में आयोजित 'चरित्र निर्माण प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर का है। मंच पर वहां के प्रसिद्ध व्यापारी बैठे हैं।

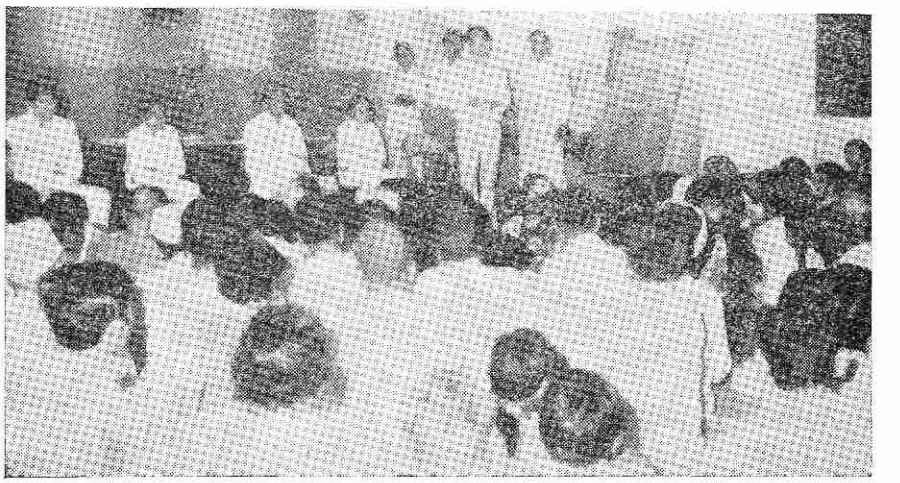

हिम्मतनगर में आयोजित 'बाल उत्थान प्रदर्शनी' के चित्रों की व्याख्या ब्र० कु० ज्योति गुजरात के शिक्षा मंत्री भ्राता नवल भाई शाह व अन्य प्रमुख व्यक्तियों को कर रही हैं।

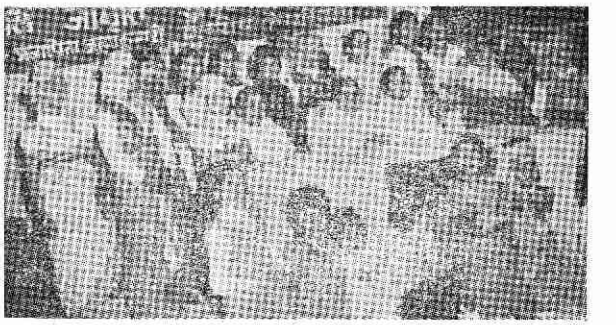

यह चित्र मोगा में आयोजित 'बाल वर्ष समारोह' के अवसर का है। ब्र० कु० राज एवं शुक्ला विजेता बच्चों के साथ दिखाई दे रही हैं।

चित्र में चोपड़ा शहर के मेयर प्रो० अरुणलाल गुजराती प्रदर्शनी का उद्घाटन बटन दबाकर कर रहे हैं। उनके साथ धुलिया सेंटर के बहन-भाई खड़े हैं।

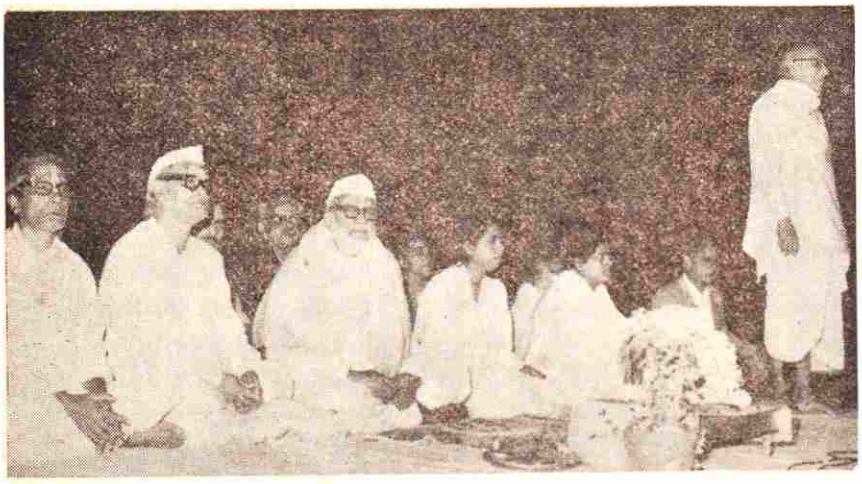

चित्र में कलकत्ता के देवानन्द सरस्वती द्वारा आयोजित गीता जयन्ती समारोह के अवसर पर ब्रह्माकुमारी बहनें प्रवचन कर रही हैं तथा उसका बंगाली में अनुवाद भ्राता रेसोमय भाई कर रहे हैं।

इस चित्र में ब्रह्मपुर के डी० आई० जी० एवं स्टेट बैंक के जनरल मैनेजर राधा कृष्ण मन्दिर में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन दीपक जलाकर कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० नीलम, पार्वती व अन्य भाई खड़े हैं।

चित्र में पण जी (गोवा) सेवा केन्द्र द्वारा कुडाल में आयोजित राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन वहां के कालेज के प्रधानाचार्य कर रहे हैं।

यह चित्र दसुआ में आयोजित 'बाल वर्ष समारोह' के अवसर का है। चित्र में स्कूल के बच्चे बड़े ध्यान पूर्वक ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन सुन रहे हैं।

मेरे जीवन का सुहावना लक्ष्य कभी विचलित न होने पाये

ले० ब्रह्माकुमारी सीता, इटारसी म० प्र०

संसार की वर्तमान स्थिति को देखते हुए हर-एक मनुष्य अपने भविष्य की भिन्न-भिन्न झाँकियाँ निर्माण करता है। कोई अभिनेता बनने में जीवन का श्रेय समझता है तो कोई नेता बनकर जनता को आकर्षित करने में। कोई धनवान बन जीवन का रसपान करना चाहता है तो कोई विद्वान बन अपनी विद्वता की छाप समाज पर छोड़ना चाहता है। कोई वैज्ञानिक बनकर कुछ नई खोज करने को ही जीवन का ध्येय समझता है और फिर कोई इन सब का भी त्याग कर दूर जंगल में एक सुनसान गुफ़ा में बैठकर तपस्या करने में ही आनन्द अनुभव करता है। लेकिन, इन सबके बावजूद भी इन्सान को स्थाई सुख-शान्ति नहीं मिल पाती है। वैसे तो मानव के अन्दर अपार शक्ति निहित है परन्तु उन शक्तियों को उचित रूप से प्रयोग न करने के कारण वह उन शक्तियों से पूर्णरूप से लाभान्वित नहीं हो पाता है। परिणामस्वरूप वह अशान्त एवं दुःखी बना रहता है। अगर आप ध्यानपूर्वक विचार करें तो इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि शक्ति का उचित रूप से उपयोग वह इसीलिये नहीं कर पाता है क्योंकि उसको अपने जीवन का लक्ष्य स्पष्ट नहीं होता है।

लक्ष्य के बिना शक्तियों का ह्रास

नदी का पानी बहता रहता है—कभी इधर तो कभी उधर, जिससे पानी की अथाह शक्ति इधर-उधर बिखर जाने के कारण बेकार होती रहती है। लेकिन अगर कोई लक्ष्य लेकर उसी पानी को एक दिशा में विशेष बांध बनाकर बहाया जाता है तो उससे एक महान विद्युत शक्ति उत्पन्न होती है। अब विद्युत शक्ति को प्राप्त करने का एक लक्ष्य हमारे पास था तभी हम उसे प्राप्त कर पाये। इसी प्रकार हमारे जीवन में भी हमारी अमूल्य शक्तियाँ कभी किसी दिशा में तो कभी किसी दिशा में बिना लक्ष्य के ही लगती रहती हैं। परिणामस्वरूप वे व्यर्थ ही चली जाती हैं और उनसे कोई ठोस प्राप्ति नहीं हो पाती है। परन्तु यदि एक लक्ष्य निर्धारित करके हम अपने जीवन की सम्पूर्ण शक्तियों को उस पर केन्द्रित कर देते हैं तो हमारे जीवन में आशातीत अद्भुत उपलब्धियाँ होती हैं जिससे हम अपने जीवन में उच्चता प्राप्त करके शान्त और सुखी बन जाते हैं। आपने बहुत-से ऐसे मनुष्य देखे होंगे जो जीवन में कोई लक्ष्य न लेकर वैसे ही समय व्यतीत करते चलते हैं। उनका सारा जीवन एक कार्य से दूसरे कार्य और दूसरे कार्य से तीसरे कार्य में ही दौड़ता रहता है, परिणाम यह होता है कि उन्हें सफ़लता नहीं मिलती, एवं वे कार्य से ऊबने लगते हैं। लेकिन जीवन में एक लक्ष्य लेकर बढ़ने से उसके प्रति एक शक्ति जाग्रत होती है, एवं जीवन में सफलता की प्राप्ति होती है।

खाना, पीना और मौज उड़ाना ही जीवन का लक्ष्य नहीं

कुछ लोग समझते हैं कि जीवन का उद्देश्य तो यही है कि जीवन में खूब आनन्द मौज लूटें, अच्छे से अच्छा पहनें, ओढ़ें, एवं खूब धन इकट्ठा करें। परन्तु कोई मनुष्य अपने जीवन में कितना अच्छा पहनता है, कितना अच्छा खाता है इसकी जीवन के अन्दर कोई कीमत नहीं, यही जीवन का सार नहीं, बल्कि कीमत तो इसकी है कि उसने स्वयं को गुणवान बनाकर, दूसरे कितने मनुष्यों को श्रेष्ठ गुणवान एवं आप समान बनाया है। कितनों को अपने जीवन के आदर्शों से प्रभावित किया है। मनुष्य कार्यक्षेत्र रूपी पाठशाला में जीवन का विकास करने का अवसर पाता है। उपरोक्त बातों को यदि आप गहराई से सोचें तो पायेंगे कि जिस कार्य से हमारा जीवन "ऊँच से ऊँच श्रेष्ठाचारी अथवा देवता बन जाये यही हमारे जीवन का लक्ष्य है।

सफलता की प्राप्ति के नुस्खे

जीवन का लक्ष्य निर्धारण कभी भी भावुकता में आकर या शीघ्रता में आकर बिना विचार किये

नहीं करना चाहिये। इसके लिये अति सोच-विचार की आवश्यकता है क्योंकि लक्ष्य ही जीवन का ऐसा पक्ष है जिस पर ही जीवन की सफलता निर्भर करती है। अपना लक्ष्य निर्धारित करने से पहले भले ही आप अपने माता-पिता, मित्रों एवं शुभ चिन्तकों आदि से परामर्श करलें, एवं लक्ष्य से अपने को सन्तुष्ट करलें, फिर उस पर पूर्ण लगन से जुट जाना चाहिये। क्योंकि जीवन-लक्ष्य निर्धारित कर भी लिया परन्तु उसमें पूरी लगन से न लगे अर्थात पूर्णश क्तियों को उस पर केन्द्रित न किया तो भी हम सफ़ल नहीं हो पायेंगे।

जैसे कोई विद्यार्थी एक परीक्षा में सफल होकर और बड़ी परीक्षा की तैयारी में अधिक उत्साह एवं साहस से जुट जाता है वैसे हमने जो दैवीगुणों को धारण कर अवगुणों को निकालने का लक्ष्य रखा है तो इस लक्ष्य पर उमंग-उत्साह से चलते हुये खुशी-खुशी आगे बढ़ें क्योंकि उमंग-उत्साह भी हमारे लक्ष्य पर हमको अटल बनाने का एक आधार है।

इसके पश्चात डगमगाने का एक कारण यह भी होता है कि पुरुषार्थी का हरेक विषय के महत्त्व को अच्छी रीति नहीं समझ पाता है। परिणाम स्वरूप वह ज्ञान में तो तीक्ष्ण हो जाता है किन्तु योग के बिना ज्ञान नीरस और सूक्ष्म अहंकार उत्पन्न करने वाला होता है। ज्ञानी आत्मायें दूसरों का प्यारा बनने की इच्छुक रहती हैं। केवल मार्ग को जान लेने से मंज़िल नहीं मिला करती बल्कि मार्ग को तय करना ही पड़ता है।

ऊंचे ध्येय पर पहुँचने में चाहे हमें देरी लगे अथवा विपरीत परिस्थितियाँ या अपनी ही त्रुटियों के कारण हमें मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ क्यों न आवें पर हमें अपने उद्देश्य को प्राप्त करने का दृढ़ संकल्प कभी नहीं छोड़ना चाहिये।

सबसे मुख्य बात तो यह है कि अपने जीवन के सुहावने लक्ष्य को सदा बनाये रखने के लिये सदा ही अपने ऊपर विश्वास रखें, सशंय न हो। अपनी योग्यता व शक्तियों पर भरोसा रखें। परमात्मा भी उसी की मदद करता है जिसमें कि आत्म विश्वास हो "हिम्मते मर्दा मददे खुदा" अथवा "निश्चय बुद्धि विजयन्ति।" वर्तमान समय मुझे अपने बापदादा का शो करना है। ऐसा सुनहरी जीवन कल्प में एक बार स्वयं भगवान ही आकर बच्चों को प्रदान करते हैं। तो आइये आज से ही ब्राह्मण जीवन का पूरा आनन्द लेने के लिये अपने सुहावने लक्ष्य पर निश्चय रख पूरी ही लगन से पुरुषार्थ करके अपने बाप-दादा का शो करें अथवा देवत्व की प्राप्ति करें।

●

(पृष्ठ ४२ का शेष एक बार की बात)

अभी यह सोचकर बड़ी खुशी होती है कि जिस जादू का वास्तव में लोग शास्त्रों में वर्णन करते हैं, वह ईश्वरीय जादू ही तो था। न कभी सोचा था न कोई संकल्प ही किया था पर सच्चे रूहानी स्नेह के आधार से तो, एक क्षण में ही इस लक्ष्य तक पहुंचने का संकल्प ले लिया।

कहीं आप यह पढ़कर डर न जाना कि यहाँ जाने से जादू होता है, जो एक बार यहाँ चला जाता है वह वापिस नहीं आता है। नहीं-नहीं कभी भूलकर भी ऐसा मत सोचना—पर यह बात अवश्य याद रखना कि जो एक बार यहाँ जाएगा, वह ईश्वरीय जादू अर्थात परमात्मा के प्यार और सच्ची सुख और शान्ति और अनुभूति किए बिना वापिस नहीं आएगा। क्यों, आप सब भी दुनिया में रहते हुए सुख और शांति की प्राप्ति करने का ही तो पुरुषार्थ कर रहे हैं ना—अच्छा तो अवश्य जाना और अपना भी अनुभव **एक बार की बात, जीवन में श्रेष्ठ कमाई की** यादगार के रूप में लिखना—क्यों सभी की पसन्द है ना—

●

वाराणसी में नेपाल नरेश एवं महारानी से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के प्रतिनिधि-मण्डल की भेंट

विगत २२ सितम्बर, ७९ को वाराणसी में नेपाल नरेश महाराजाधिराज ५ वीरेन्द्र वीर विक्रम शाहदेव तथा महारानी ऐश्वर्य राजलक्ष्मी का राजकीय यात्रा पर आगमन हुआ। भारतीय वायुसेना के विशेष विमान से उनके साथ नेपाल के २८ उच्च पद अधिकारी भी थे, जिनमें से भारत स्थित नेपाल के राजदूत भ्राता वेदानन्द झा, काठमाण्डू स्थित भारतीय राजदूत, नेपाल नरेश के रक्षा सचिव, नेपाल के विदेश मंत्री, भारत सरकार के केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री भ्राता के०सी० पन्त आदि-आदि थे।

२. यद्यपि यह उनकी राजकीय यात्रा थी परन्तु वे वाराणसी में मुख्यतः काशी विश्वनाथ मंदिर नेपाली पशुपतिनाथ मंदिर तथा सारनाथ मंदिर के दर्शनार्थ एवं पूजा करने आदि के सम्बन्ध में आए थे। इनकी इस यात्रा का कार्यक्रम भारत सरकार के विदेश विभाग द्वारा दो मास पूर्व ही निश्चित हो चुका था, परन्तु अखबारों में इसकी सूचना इनके आगमन से केवल एक सप्ताह पूर्व ही दी गई। वाराणसी केन्द्र के भाई बहनों को ऐसी प्रेरणा हुई कि नेपाल नरेश और महारानी से मिलकर इनको ईश्वरीय संदेश दिया जाय। अब तक हमारे भाई-बहनों को नेपाल नरेश से व्यक्तिगत रूप से भट करने का अवसर प्राप्त नहीं हो पाया है। अतः नेपाल नरेश के प्रोग्राम के अखबारों में प्रकाशित होते ही हम लोग महाराजा से भेंट करने का समय निर्धारित कराने के लिए पुरुषार्थ करने लगी।

भेंट हेतु प्रयत्न

३. कमिश्नर, आई० जी०, डी० आई० जी०, जिला मजिस्ट्रेट, एस० एस० पी० एवं मजिस्ट्रेट-प्रोटोकोल आदि सभी से सम्पर्क किया गया। उन सभी ने इस मामले में मदद करने में अपनी असमर्थता प्रकट की। उनका कहना था कि यह राजकीय यात्रा है और इसका प्रोग्राम भारत सरकार के विदेश विभाग एवं गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित होकर आया है, इसमें कोई भी रद्दोबदल करना हमारे अधिकार के बाहर है। पूरे एक सप्ताह तक हम सभी इस भेंट का सुअवसर प्राप्त करने के लिए काफ़ी प्रयत्न करते रहे परन्तु कुछ भी सफलता नहीं मिली। एक-दो दिन जब रह गए तो वे हमें सुझाव दे रहे थे कि गृह मंत्रालय से सम्पर्क करें। हमको मालूम हुआ कि वाराणसी स्थित भारत नेपाल मैत्रीसंघ तथा काशी हिन्दू विश्व विद्यालय, नेपाल अध्ययन केन्द्र एवं नेपाली सांस्कृतिक संगठन में भी उनका थोड़े-थोड़े समय का कुछ कार्यक्रम है—हमने इन तीनों संगठनों के अध्यक्ष, मंत्री एवं पदाधिकारियों से सम्पर्क करके नेपाल नरेश के स्वागत कार्यक्रम में हमको भी सम्मिलित करने का अनुरोध किया। कुछ समय तो उन्होंने हमें आशा बन्धाए रखी परन्तु अन्त में इन तीनों संगठनों ने भी मना कर दिया। इन सभी लोगों से बात-चीत करने पर यह निष्कर्ष निकला कि भारत सरकार नेपाल के शाही दम्पति की सुरक्षा के लिए विशेष रूप से चिन्तत है और किसी भी नए संगठन अथवा व्यक्ति को उनसे मिलने की इजाजत नहीं दे रही है क्योंकि नेपाल में और भारत में नेपाल राजतन्त्र के विरोध में आन्दोलन हो रहे हैं।

फिर भी प्रयत्न जारी रहा

४. २१ तारीख को प्रातःकाल जब हमको यह प्रतीत हुआ कि नेपाल नरेश की एडवांस पार्टी में भारत स्थित नेपाली दूतावास के सांस्कृतिक सचिव भ्राता मानिक लाल व्रजाचार्य अपने दल के साथ आए हुए हैं, तो हम उनसे मिलने गए। यद्यपि कोई विशेष उम्मीद नहीं थी क्योंकि नेपाल नरेश के आगमन में केवल २४ घण्टे शेष रह गये थे, तथापि राजकीय वाराणसी होटल में जहाँ शाही मेहमानों को ठहराने की व्यवस्था की गई थी, वहाँ हम पहुँच गए। काफी देर तक वहीं इन्तजार करना पड़ा क्योंकि जिला के सभी अधिकारियों की भ्राता व्रजाचार्य जी के साथ वहाँ मीटिंग हो रही थी। मीटिंग की समाप्ति पर भ्राता व्रजाचार्य जी ने हम लोगों को बुलाया और हमने उनसे आग्रह किया कि

हमको किसी भी तरीके से कम से कम पाँच मिनट का समय नेपाल नरेश से मिलने का अवसर दिलाएँ हमने उनको उनके सभी प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर दिया और साहित्य दिया उन्होंने कहा कि अगर आपने पहले से दूतावास से लिखा-पढ़ी की होती तो आपको कुछ समय महाराज से भेंट करने का मिल सकता था और अभी तो निश्चय पूर्वक नहीं कह सकते कि भेंट हो सकेगी या नहीं। उन्होंने कहा कि सम्भव हुआ तो मैं आपके सम्बन्ध में महाराज जी से बातचीत करूँगा तथा उन्होंने २४ तारीख को प्रातः ११ बजे दोपहर में वाराणसी होटल में बुलाया।

हिम्मते आत्मा मददे परमात्मा

नेपाल नरेश २२ तारीख को आ रहे थे और २४ तारीख को अपराह्न काठमाण्डू चला जाना था, अतः हम लोगों ने सोचा कि २४ तारीख़ की भेंट शायद ही हो सके ! फिर भी कोई चारा नहीं था। हम लोग अपने आश्रम पर वापस आ गए और २४ तारीख़ को निर्धारित समय पर हम चार बहनें बी० के० सुरेन्द्र, बी० के० परनीता (नेपाली), बी० के० प्रेम (नेपाली), बी० के० करुणा (नेपाली), गुप्ता भाई व रामदुलारे जी ईश्वरीय सौगातें श्रीकृष्ण एवं लक्ष्मी नारायण का चित्र (शोभनीक गोल्डन फ्रेम में), झाड़, गोला, त्रिमूर्ति के चित्र (अति सुन्दर एवं शोभनीय काकेट में) तथा सभी प्रमुख साहित्य अति चमकीले व सुन्दर रेपर्स में तथा अन्य ईश्वरीय भेंट की सौग़ातें लेकर वाराणसी होटल में प्रातः ९-३० बजे से ही पहुँच गए तथा मुख्य चेम्बर हाल में सोफ़े पर जाकर विराजमान हुए। हम धवल-धवल वस्त्र-धारियों को देख सभी का ध्यान बरबस हमारे तरफ़ खिच गया। सुरक्षा का इतना व्यापक प्रबन्ध था कि कहीं भी कोई अवाँछनीय व्यक्ति प्रवेश नहीं पा सकता था। इस संदर्भ में यह बात विशेष उल्लेखनीय है कि पुलिस, पी० ए० सी०, प्रदेशीय सी० आई० डी० के अलावा केन्द्रीय गुप्तचर विभाग के अधिकारियों और नेपाली पुलिस के उच्च अधिकारी भी बड़ी संख्या में सादा वेश में सभी जगह तैनात थे। जहाँ-जहाँ महाराजा का कार्यक्रम था, वहाँ-वहाँ का सारा क्षेत्र उनके आने और जाने तक पुलिस द्वारा घेर लिया जाता था। सुरक्षा व्यवस्था एकदम चुस्त और तन्दुरुस्त थी और यह शिव बाबा की ही कमाल थी कि हम लोग बिना किसी रुकावट के होटल के स्वागत कक्ष तक पहुँच गए। हमको तथा हमारी बड़ी-बड़ी सौगातों को देख कर भ्राता ब्रजाचार्य जी दौड़े हुए आए और कहा कि ये क्या लाया है। उन्होंने सभी सौगातों को खोल कर देखा और बोला कि ये सारा ऐरोप्लेन में कैसे जायेगा। ये बहुत बड़ा-बड़ा है। हमने कहा ये ईश्वरीय सौग़ात है और ये परम-पिता परमात्मा शिव की आज्ञानुसार महाराज और महारानी को उपहार स्वरूप भेंट करने लाए हैं। इन्हें तो आपको ले जाना ही होगा। वह कुछ सोच में पड़ गया और थोड़ी देर बाद बोले—आपका मामला तो अभी तक तै ही नहीं हुआ है। फिर हमें सोफ़ापर बैठा कर इन्तज़ार करने को कह कर चले गए। स्वागत कक्ष में हम लोगों के अलावा ज़िले के सभी बड़े पुलिस एवं प्रशासनिक अधिकारी के अलावा वाराणसेय सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय के उपकुलपति, काशी हिन्दू विश्व विद्यालय के उपकुलपति, दैनिक आज के प्रधान सम्पादक भ्राता सत्येन्द्र कुमार जी गुप्त, भारत नेपाल मैत्री संघ के अध्यक्ष डा० गोपाल सिंह नेपाली, नेपाली साँस्कृतिक संगठन के अध्यक्ष भ्राता अनुग्रह गिरि, विश्व हिन्दु परिषद के अध्यक्ष, महाराजकुमार विजयानगरम् एवं उनका परिवार तथा तिब्बत के संसद सदस्य भ्राता एम० सी० नेप्सो एवं मोशेल्मा आदि बैठे हुए थे। लगभग पौने बारह बजे जब इन सभी की भेंट नेपाल नरेश से प्रायः पूरी हो चुकी थी हमको सूचना दी गई कि माहाराज महारानी अभी नदेसर पैलेस में लन्च (Lunch) करने के लिए नीचे आयेंगे, तब आप अपनी सौगातें भेंट कर देना। उनकी भेंट का समय लगभग पूरा होने जा रहा था। परन्तु अभी भी हमारी भेंट निश्चित नहीं हुई थी। हम लोग वहीं पर बाबा की याद में बैठ गये।

नेपाल नरेश से भेंट

लगभग १५ मिनट बीते होंगे एकाएक नेपाल नरेश का प्रेस अटैची भ्राता झा व सांस्कृतिक सचिव भ्राता ब्रजाचार्य जी जल्दी-जल्दी सीढ़ियों से उतरते हमारी तरफ़ आए और कहा—"चलिए, महाराज आपको बुला रहे हैं।" हम लोगों के हृदय में खुशी उमड़ गई कि बाबा का संदेश देने का अवसर मिल

गया है। कक्ष में बैठे अन्य सभी को बहुत आश्चर्य हुआ कि इस समय हमारे प्रतिनिधि मण्डल को नेपाल नरेश ने इतना महत्व कैसे दिया।

महाराज के कक्ष में पहुँचने से पूर्व तीन जगह हमको सुरक्षा सचिव तथा अन्य अधिकारियों के पास ले जाया गया, जहाँ औपचारिक रूप से सौग़ातों को देखा गया। उसके बाद मिलेटरी सेक्रेटरी से कुछ देर बातचीत हुई। सभी हमको देख कर प्रसन्नता का अनुभव करते थे और सौगातों को भी देख करके खुश होते थे। इसके बाद महाराज का निजी सचिव हमको लेने आया और, जैसे ही हम उनके कक्ष में पहुँचे, महाराज और महारानी दोनों जो एक सोफ़ा पर विराजमान थे, मुस्कराते हुए खड़े हो गये और साथ-साथ ही दोनों तरफ़ से हाथ जोड़ कर के मुस्कराते हुए अभिवादन हुआ। नेपाली माता प्रेम ने, जो हमारे डेलीगेशन में थी, नेपाली भाषा में नेपाली परम्परा के अनुसार महारानी महाराज का जयघोष किया। नेपाल नरेश व महारानी ने बड़े आदर से हम सभी को अपने सोफ़े से लगे बराबर के सोफ़े पर बैठ जाने को कहा। महाराज के कक्ष में उनके ए० डी० सी० के अलावा नेपाली दूतावास का आफ़िशियल, कैमरामैन तथा टेलीविज़न यूनिट के अधिकारी भी कार्यरत थे, विशिष्ट मिलने वाले व्यक्तियों एवं सौग़ात भेंट करने वालों का ये लोग टेलिविजन शूटिंग कर रहे थे। हमारे डेलीगेशन के भी तीन चार स्नैप्स (Snaps) लिए गए और टेलीविज़न शूटिंग हुआ। लगभग आधा मिनट तक महाराज महारानी हमारे प्रतिनिधि मण्डल को बड़ी सौम्य मुद्रा में मुस्कराते हुए देख रहे थे और हम लोग भी मुस्कराकर उनको ईश्वरीय दृष्टि दे रहे थे।

ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का परिचय

इसके पश्चात् सुरेन्द्र जी ने विश्व विद्यालय का पूरा परिचय दिया। इस विश्व-विद्यालय की स्थापना से लेकर, उद्देश्य एवं लक्ष्य की पूर्ति के लिए अब तक की हुई विश्व-सेवा का संक्षिप्त विवरण दिया। परमात्मा के अवतरण, आगे आने वाली १००% सतोप्रधान सम्पूर्ण पवित्रता, सुख-शान्ति सम्पन्न दैवी सृष्टि की पुनर्स्थापना का एवं श्रीकृष्ण के शीघ्र शुभ आगमन का मधुर एवं शुभ सन्देश उनको दिया गया। महारानी महाराज बड़े ही प्रसन्न मुद्रा में दत्त चित्त होकर सुनते रहे। भारतवर्ष में कहाँ-कहाँ केन्द्र हैं उन्होंने पूछा। उनको सारी जानकारी दी गई। जब उन्होंको बताया गया कि नेपाल में भी काठमाण्डु, विराटनगर, धरान आदि में भी सेवा-केन्द्र हैं तो उन्हें आश्चर्य हुआ। शायद उन्हें यह जानकारी नहीं थी या स्मृति न रही हो। जब उन्हें यह बताया कि पश्चिम नेपाल में भी अभी हाल में भेरवा, बुटवल, तेनसिंग व पोखरा में भी ईश्वरीय सेवा शुरु कर दी गई है तो महारानी ने खास तौर से पूछा—अच्छा क्या यहाँ पर भी आप लोगों के केन्द्र हैं। इसके पश्चात, झाड़-गोला व त्रिमूर्ति के चित्रों के लिए महाराज से कहा गया कि आप इन चित्रों की काठमाण्डु में अवश्य हमारे अन्य साहित्य के साथ-साथ अवलोकन करें जिसमें निकट भविष्य में आने वाली नई दुनिया—और सतोप्रधान डबल क्राउण्ड, डीटी किंगडम की रूपरेखा का ईश्वरीय ज्ञान एवं दिव्य दृष्टि के आधार पर सचित्र वर्णन किया गया है। महाराज जी ने कहा कि मैं जरूर पढ़ूँगा। श्री लक्ष्मी श्री नारायण के चित्र की तरफ़ इंगित करते हुए बहन जी ने महाराजा व महारानी का ध्यान खिंचवाते हुए याद दिलाया कि ये हमारे भविष्य का लक्ष्य है जिसको ही प्राप्त करने के लिए वर्तमान समय में परमपिता परमात्मा शिव साकार प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित हो कर सहज ईश्वरीय ज्ञान एवँ सहज राजयोग की शिक्षा इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के माध्यम से दे रहें हैं। तदन्तर सभी सौग़ातें महाराज एवं महारानी को भेंट की गई जो उन्होंने बहुत ही श्रद्धा एवं सम्मान के साथ स्वीकार कीं। लगभग १५ मिनट का समय हो चुका था, हम लोगों ने उनसे भावभीनी विदा ली। महाराज व महारानी पुनः उठ खड़े हुए। प्रतिनिधि मण्डल के भाईयों से महाराज जी ने हाथ मिलाया तथा महारानी जी के बिल्कुल समीप जा कर बहनों ने एक सौग़ात उनके हाथ में दी, जो उन्होंने अपने हाथों में स्वीकार की। इस प्रकार आश्चर्यजनक ढंग से बाबा ने कल्प पूर्व के समान नेपाल देश के महाराजा और महारानी से भेंट करने की ईश्वरीय सेवा का अवसर प्रदान कराया।

●

एक बार की बात

संगम के थे वह सुहावने दिन, जब ज्ञान सूर्य स्वतः ही सृष्टि पर अवतरित होकर अपनी पवित्रता, सुख और शान्ति की किरणें बखेर रहा था। परन्तु मैं एक छोटी-सी, नादान बालिका, कलियुगी रंग में रंगी, अपने ही अभिमान में मस्त एक दिन क्रोधवश हो अपनी लौकिक माँ से हठ कर बैठी "कि जहाँ आप ब्रह्माकुमारियों के सत्संग में जाती हो, अब कल से वहां नहीं जाओगी।" माँ यह सुनकर विचारों में सो गई और सोचने लगी कि "यह ठीक प्रकार से ईश्वरीय देन को न जानने के कारण मुझे वहाँ जाने देने से हठ कर रही है, वास्तव में इसका भी दोष नहीं। इसने कुछ सुना ही इस प्रकार का है, परन्तु मैं वहाँ जाना छोड़ दूँ यह मेरे लिए सम्भव नहीं। मैं तो ईश्वरीय प्रेम की जंजीरों में बंध गई हूं। मुझे वहाँ जाने से प्रेम की, सुख की, शांति की अनुभूति होती है, भला मैं इतनी ऊँच प्राप्ति को जो मेरे बचे हुए जीवन की संगनि है—कैसे भुला दूँ?" मुझे याद है वह दिन, जब माँ शिव बाबा की याद में बैठकर, शिव बाबा से मन ही मन मेरे कल्याण के लिए कहने लगी।

चलो देख तो लें

आखिर एक दिन अपने अटल निश्चय के आधार से मुझे भी वहाँ चलने के लिए कहा—'मैं और वहां! नहीं-नहीं, कदापि नहीं जाऊँगी। ये ब्रह्माकुमारियां तो जादू करती हैं, अगर मुझ पर भी जादू हो गया तो क्या होगा? लोग मुझे क्या कहेंगे?' परन्तु दूसरी तरफ़ शायद ईश्वर ने मेरा हाथ पकड़ना ही था। उसी समय एक और विचार मेरे मन में प्रभु के प्रति प्रेम को उत्पन्न करने लगा—'सोचा कल से ही मेरी हायर सेकेण्डरी की परीक्षा प्रारम्भ होने वाली है, अगर न गई तो शायद भगवान् मुझे फ़ेल कर देगा और मेरी सारी भविष्य की उम्मीदों पर पानी फिर जाएगा।'भगवान के प्रति अति कठोर दिल की तो नहीं थी इसलिए सोचा, खैर जाकर देख लेते हैं।

वहां का दिव्य वातावरण

सचमुच मेरा वहां पर जाना और श्रेष्ठ वातावरण की जंजीरों में मेरा बँधना। आश्रम की अलौकिक आभा, बहन का रूहानी स्नेह, उसका मेरे प्रति सखीपन का भाव मेरे मन को मोहित करने लगा। मैं मन ही मन सोचने लगी—कैसे हैं ये गुरु? अब तक तो जो भी गुरु देखे, उनके आगे नत-मस्तक ही हुए उनके चरण ही धोए और ये निःस्वार्थ स्नेही, सच्ची, भगवान की बच्ची, निरहंकारी बन मुझसे अपनेपन से बात कर रही है! कमाल है, हो ना हो, कुछ विशेष ही प्रकार का ज्ञान मालूम पड़ता है। खैर, दस-पन्द्रह मिनट बहन से मुलाकात होने के पश्चात घर वापिस लौटी। पेपर की तैयारी भी करूँ लेकिन आध्यात्मिक बहन से अपनी प्रथम मुलाकात न भूला पाऊँ। खैर रात हुई, सोने के लिए गई। कुछ ही देर के पश्चात् एक श्रीकृष्ण का चित्र (जिसके हाथ में स्वर्ग है, और पैरों के द्वारा नरक को लात मार रहे हैं) मेरे सामने चित्रित हुआ। श्रीकृष्ण जी मेरे से ईशारे के द्वारा यह पूछ रहे हैं "बच्ची, यह स्वर्ग की बादशाही लोगी।" सचमुच इतना सुन्दर स्वर्ग का गोला उनके हाथ में देख मैं कैसे मना करती। शायद आप भी होते तो हाँ किए बिना न रह पाते। खैर सवेरा हुआ, पेपर देने की फिकर से रात का सपना इतना ध्यान में नहीं रहा। परन्तु जब दो-चार दिनों के पश्चात् फिर से आश्रम जाने का अवसर प्राप्त हुआ—तो मैंने वही चित्र आश्रम पर लगा देखा। मन में निश्चय किया कि हो ना हो यही चित्र मैंने उस दिन सपने में देखा था। जब इन्चार्ज बहन ने मुझे वहाँ के लक्ष्य के बारे में बताया तो यह बात भी स्पष्ट हुई कि वास्तव में स्वर्ग की बादशाही अर्थात **लक्ष्मी नारायण जैसा बनना, नर्क के गोले को लात मारना अर्थात दुनिया में रहते कमल-पुष्प-सम बनना।**

जीवन में नयी मोड़

सच में वह दिन और मेरे जीवन का नया दौर।

(शेष पृष्ठ ३८ पर)

"बारहमासी"

ले० ब्रह्माकुमार देवत्त, हिमाचल प्रदेश

जनवरी :—जनवरी जन्म अलौकिक तेरा बन शिव की सन्तान
भारत-भूमि पर अवतरित हुए शिव निज वचन प्रमाण
प्रखर प्रभाव उस शक्ति-स्वरूप का नया सवेरा ला रहा है
अज्ञान-निद्रा में सोई आत्माओं को हिला-हिला कर जगारहा है ॥

फरवरी :—फ़र्ज़ फ़रवरी में रूहानी याद रख, काट मोह के विषम जाल
तू स्वर्ग का राजा था आज बन गया कैसे कंगाल।
लगा लौ उस प्रियतम से कट जायेंगे संकट क्लेश
चेत रे चेत अज्ञानी, अब तो संगम की कुछ ही घड़ियाँ शेष ॥

मार्च :—मार्च रूहानी सेना ने किया, दे दी माया मारीच को चुनौती
उजाला अपनारं ग दिखायेगा; अब "शिवरात्री" पल दो पल की।
मचल रहा स्वर्ग-गमन को हृदय ; पुलकित हो रहे रोम-रोम
माया से मूर्छितों को शीलता दे रहा चेतन सोमनाथ का सोम ॥

अप्रेल :—अप्रेल अति उन्नति विज्ञान की ; मानव विवेक सो रहा है
मूढ़ पहचान नहीं सकता बुराई को ; दुखी होकर रो रहा है।
विषयों की मृग-तृष्णा छोड़ अब श्रेष्ठता की कर क्रान्ति
स्वयं ज्ञान-सागर दे रहे ज्ञान ; मत रख मन में कोई भ्रान्ति ॥

मई :—मई में मौलाई-मस्ती सीखकर बन जा तू हरफ़न-मौला
रूहानियत में मशगूल देख तुझे न विकार करेंगे कोई रौला
विवेक से काम ले क्यों भव-बन्धन में हिचकोले खाता है
निभा ले प्रीत की रीत अब ; देख महाकाल सिर पर मंडराता

जून :—जून में छोड़ जवानी का नशा कब्रिस्तान तुझे बुला रहा है
दीवानापन चमड़ी का तुझे अज्ञान नींद में सुला रहा है।
तन-मन सर्मपण कर दे ; हीरों का मत कर पत्थरों से मोल
इस समय के पुरुषार्थ से प्राप्त हो सकेगा तुझे सिंहासन अडोल ॥

जुलाई :—जहो-जल्लाल नूर का ऐसा दिखा, हार माने तुझसे काल
दिल-तख्त बापका ले, रूहानियत से भरी हो तेरी चाल।
देखो और सुनो भक्त मन्दिरों में तुम्हें पुकार-पुकार बुला रहे हैं
ग़फ़लत में समय न खो देना ; परमात्मा तुम्हें देवी-देवता बना रहे हैं ॥

अगस्त :—अगस्त में अस्त हुआ तेरे दुर्भाग्य का सितारा
सौभाग्य शाली बन लगा नव-निर्माण में तन-मन-धन सारा
आज चाहे तू गुप्त है ; कल प्रकट सरे-आम होगा।
विघ्न-बाधाओं का सामना कर; कल तू ही राम-कृष्ण समान होगा।

सितम्बर :—सितम्बर में छोड़ सितम ढाना ; त्याग सदा के लिए काम कटार
देह-भान को तज ; सबसे कर अलौकिक-प्यार।
अहंकार ने तुझे श्रेष्ठता की चोटी से गिराया है
स्वधर्म, स्वस्थिति भूल ग्रहण किया तूने धर्म पराया है ॥

अक्तूबर :—अक्ल से काम ले दूर कर संस्कारों से टकराना
यही अन्तिम जन्म तेरा फिर नहीं कलियुग में आना।
अनेक जन्मों की साधना सफल हुई अब प्रभु से मिलन मना ले
अतीन्द्रिय सुख के झूले में अब अपने को झुलाले ॥

नवम्बर :—नवम्बर में नम्बर अष्ट रत्नों में तेरा, बन विष्णु के गले का हार
दिव्य गुणों की महक से हो सकता तुझ पर समस्त विश्व बलिहार।
शांख-चक्रादि विष्णु का नहीं ; इसी समय का तेरा यादगार है
भव-बन्धन से मुक्त बने तो दैवी-सिंहासन तेरा त्यार है ॥

दिसम्बर :—दिसम्बर देह भान छोड़ "आत्मा" तेरा असली स्वरूप है
आसुरी मर्यादा और स्वरूप-विस्मृत्ति से बना चेहरा तेरा कुरूप है।
गुँजित हो उठी ज्ञान-मुरली अब दिव्य गुणों का वरदान ले
मन मत से आज तक दुःखी होता रहा ; अब "शिव" की "श्रीमत" मान ले।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

लेखक:—ब्रह्माकुमार सुन्दरलाल की डायरी से

विभिन्न सेवा-केन्द्रों से ईश्वरीय-सेवा के बहुत ही उत्साहवर्धक समाचार मिले हैं। उनका सारांश यहाँ उद्धृत कर रहे हैं :—

सिकन्दराबाद में ज्ञान शंख ध्वनि—सेवा-केन्द्र द्वारा जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया। वहाँ के 'शमशान घाट' पर स्थाई तौर पर एक शिक्षाप्रद प्रदर्शनी 'मृत्यु पर विजय' लगाई गई है जिसका उद्घाटन शमशान घाट के स्वामी कालेवर जी ने किया। इसी प्रकार वहाँ के अस्पतालों में 'आयोजित प्रदर्शनी' द्वारा अनेक मरीजों एवं डॉक्टरों की सेवा की गई। इसके अतिरिक्त वहाँ के अनेक विद्यालयों में भी आयोजित प्रदर्शनी द्वारा अनेक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने लाभ उठाया। सिकन्दराबाद के निकट स्थित 'मिरयाल गूडा' नामक स्थान पर वहां की जनता के अनुरोध पर उपसेवा-केन्द्र खोला गया है जहां प्रतिदिन काफी जिज्ञासु आते रहते हैं।

चन्द्रपुर में बाल वर्ष समारोह—चन्द्रपुर सेवा-केन्द्र की ओर से बालवर्ष समारोह आध्यात्मिक प्रवचनों व सांस्कृतिक कार्यक्रम के रूप से मनाया गया। सभी स्थाई समाचार पत्रों ने इस कार्यक्रम को प्रकाशित किया था जिस कारण अनेकानेक लोगों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। सभी स्कूलों के लगभग १५००० विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने इस अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी से लाभ उठाया।

जगन्नाथपुरी में आध्यात्मिक कार्यक्रम—जगन्नाथपुरी स्थित सेवा-केन्द्र की ओर से तला नयासाही में एक नवीन शाखा का उद्घाटन पहली जनवरी को हुआ जहाँ कई नये जिज्ञासु आते रहते हैं। जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु उड़िया भाषा में "परिचय पत्रिका" का प्रकाशन भी आरम्भ किया है जिसका उद्घाटन ब्रह्माकुमारी निर्मल शान्ता जी ने किया। पिता श्री ब्रह्मा के अव्यक्त होने की स्मृति में भी वहां सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया तथा इस पत्रिका का विशेषांक निकाला गया। इसके अतिरिक्त कुम्भरपाडा, बडासंखा साखी गोपाल, भूवन आदि स्थानों पर भी आयोजित कार्यक्रम बहुत सफल रहे।

नडियाड में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—नडियाड सेवा-केन्द्र की ओर से वहां के विभिन्न स्कूलों में तथा ग्रामों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिसमें अनेकानेक विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं ग्रामवासियों को परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया गया। नडियाड के निकट उत्तरसेडा ग्राम के लायन्स क्लब के निमन्त्रण पर वहाँ 'चरित्र निर्माण प्रदर्शनी' एवं राजयोग शिविर का भी आयोजन किया गया जिससे अनेकानेक लोगों ने लाभ उठाया।

आगरा में राजयोग प्रदर्शनी—आगरा में स्थित सेवा-केन्द्र की ओर से वहां की एक प्रमुख धर्मशाला में एक सप्ताह के लिए राजयोग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन सामाजिक कार्यकर्त्ता भ्राता ओमप्रकाश जी ने किया। इस प्रदर्शनी को हजारों लोगों ने देखा तथा श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने की प्रेरणा बना ली। इस अवसर पर आयोजित राजयोग शिविर एवं फिल्म से भी काफी लोगों ने लाभ उठाया।

नवांशहर म बालवर्ष समारोह—नवांशहर में स्थित सेवा-केन्द्र की ओर से बालवर्ष समारोह के उपलक्ष में 'बाल प्रतियोगिता' एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन वहाँ 'जैन पासरे' में किया गया जिससे विभिन्न स्कूलों एवं कालेजों के हजारों विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने लाभ उठाया।

काठमण्डु (नेपाल) में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—नेपाल (काठमण्डु) में स्थित सेवा-केन्द्र की ओर से जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिनमें से भक्तपुर, हरी सिद्धी, चांगू आदि का नाम उल्लेखनीय है। इस प्रदर्शनी से हजारों लोगों ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त नेपाल नरेश के जन्म दिवस के उपलक्ष में एक मास के लिये 'राजयोग शिविर' का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन सर्वोच्च न्यायालय के न्यायधीश भ्राता वासुदेव शर्मा ने किया। इस अवसर पर वहां के न्यायमंत्री, राज्य सभा के स्थाई सदस्य तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति पधारे थे। इस कार्यक्रम से अनेकानेक

लोगों ने लाभ उठाया। अनेक स्थानों पर आध्यात्मिक 'प्रोजैक्टरशो' भी दिखाया गया जिससे हजारों लोगों को 'परमात्मा शिव' का वास्तविक परिचय दिया गया।

फतेहपुर जेल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचन—फतेहपुर सेवा-केन्द्र की ओर से स्थानीय जेल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनों द्वारा हजारों कैदियों को 'पवित्र और योगी' बनने का ईश्वरीय सन्देश दिया गया तथा उन्हें बुराईयां छोड़कर अच्छे नागरिक बनने की शिक्षा दी गई।

—भावनगर में ज्ञान की गजगोर—भावनगर सेवा-केन्द्र की ओर से निकटवर्ती स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रवचनों, राजयोग-शिविर तथा फिल्मशो का आयोजन किया गया जिससे अनेकानेक आत्माओं को 'परमात्मा शिव' का वास्तविक परिचय दिया गया। इनमें से पालीताना में स्थित 'हाई स्कूल', 'गुरुद्वारा' एवं विनय मन्दिर' तथा 'विद्युत बोर्ड कार्यालय' का नाम उल्लेखनीय है जहां पर आयोजित कार्यक्रम बहुत ही सफल रहे।

वारंगल का तृतीय वार्षिकोत्सव—वारंगल सेवा-केन्द्र के तृतीय वार्षिकोत्सव के उपलक्ष में आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रोजैक्टर शो तथा प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिससे शहर के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने लाभ उठाया। इस अवसर पर आयोजित राजयोग शिविर में भी काफी लोगों ने भाग लिया।

फैजाबाद के निकटवर्ती स्थानों में ज्ञान की गजगोर—फैजाबाद में स्थित सेवा-केन्द्र की ओर से विभिन्न स्थानों पर राजयोग शिविर, प्रदर्शनी प्रभातफेरी तथा प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया। इनमें से गुसाईगंज, माया बाजार, दराबगंज, बीकापुर, बिलवाई, बीबीपुर, अकबरपुर तथा सुरहूरपुर का नाम उल्लेखनीय है।

अहमदाबाद के विभिन्न स्कूलों व कालेजों में बाल उत्थान प्रदर्शनी—अहमदाबाद में स्थित विभिन्न सेवा-केन्द्रों एवं उपसेवा-केन्द्रों द्वारा वहां के अनेक स्कूलों में 'बाल उत्थान प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया जिससे हजारों विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने लाभ उठाया। इनमें कलोल, बापुनगर तथा गांधीनगर एवं कडी में स्थित गीता पाठशालाओं का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त मनी नगर में स्थित सेवा-केन्द्र की ओर से वहां की कोरपोरेशन द्वारा आयोजित 'बाल वर्ष समारोह व मेला' में एक विशाल पण्डाल में 'बाल उत्थान प्रदर्शनी' लगाई गई जिसे लाखों लोगों ने देखा और 'परमात्मा शिव' का वास्तविक परिचय प्राप्त किया।

धुलिया के निकटवर्ती स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी—धुलिया सेवा-केन्द्र की ओर से चोपड़ा नगर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया। इस अवसर पर आयोजित राजयोग शिविर में भी अनेक आत्माओं ने भाग लिया।

ग्वालियर में 'बाल उत्थान प्रदर्शनी'—ग्वालियर में सरकार द्वारा आयोजित 'मेले' में वहां के सेवा-केन्द्र द्वारा 'बाल उत्थान प्रदर्शनी' लगाई गई थी जिसका उद्घाटन मध्यप्रदेश के उद्योग मंत्री भ्राता कैलाश जोशी ने किया। इस प्रदर्शनी को लाखों लोगों ने देखा तथा इसका विस्तृत समाचार स्थानीय 'स्वदेश' समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ।

ब्रह्मपुर के राधास्वामी मन्दिर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी—ब्रह्मपुर सेवा-केन्द्र की ओर से वहां के राधा स्वामी मन्दिर के प्रांगण में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन वहां के डी० आई० जी० भ्राता अन्नताचारी ने किया। इस प्रदर्शनी को हजारों भक्तों एवं विशिष्ट व्यक्तियों ने देखा और 'परमात्मा शिव' का वास्तविक परिचय प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त वहां के अनेक स्कूलों में प्रवचनों का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा।

हंगण घाट (बम्बई) में गीता-जयन्ती समारोह—हंगण घाट के गीता मन्दिर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन स्वतन्त्रता सेनानी बहन घटबाई जी ने किया। इस प्रदर्शनी को हजारों लोगों ने देखा और लाभ उठाया। इस अवसर पर राजयोग शिविर और आध्यात्मिक प्रवचनों का कार्यक्रम भी बड़ा सफल रहा।

नासिक में आध्यात्मिक प्रदर्शनी—नासिक में स्थित सेवा-केन्द्र की ओर से वहां के प्रमुख स्थान 'मुक्ति धाम' में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन वहां की नगरपालिका के अध्यक्ष ने किया। इस प्रदर्शनी को हजारों लोगों ने देखा और लाभ उठाया।

बम्बई (मुलन्द) सेवा-केन्द्र द्वारा बालवर्ष समारोह—बम्बई (मुलन्द) सेवा-केन्द्र की ओर से वहां के प्रसिद्ध 'सेवा हंग हाल' में 'बाल उत्थान प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया तथा शहर के प्रमुख भागों से एक विशाल 'बाल रैली' निकाली गई। इस अवसर पर आयोजित 'बाल उत्थान सम्मेलन', निबन्ध प्रतियोगिता तथा 'कला स्पर्धा' में भी अनेक स्कूलों के विद्यार्थियों ने भाग लिया तथा विजेता बच्चों को पुरस्कार वितरित किया गया। शहर के कई प्रतिष्ठित व्यक्ति भी इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

बड़ौदा में मानव एकता आध्यात्मिक मेला एवं 'राजयोग शिविर'—बड़ौदा सेवा-केन्द्र की ओर से वहां के प्रमुख स्थान पर 'मानव एकता मेला' तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन वहाँ की जिला पंचायत के प्रमुख ने किया। इस मेले को लगभग २०,००० लोगों ने देखा और श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने की प्रेरणा ली। मेले का समाचार वहाँ के सभी समाचार पत्रों में भी प्रकाशित हुआ जिनमें से "लोक सत्ता", "बड़ौदा समाचार" तथा 'इण्डियन एक्सप्रैस' का नाम उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त निकटवर्ती चिकोदरा, पादरा व वाडी और नानी आदि स्थानों पर आयोजित कार्यक्रम भी बहुत ही सफल रहे।

दिल्ली एवं नई दिल्ली सेवा-केन्द्रों द्वारा पिताश्री स्मृति दिवस समारोह—दिल्ली एवं नई दिल्ली के सेवा-केन्द्रों द्वारा पिता श्री ब्रह्मा के अव्यक्त होने के उपलक्ष में ११वां 'स्मृति दिवस समारोह' नई दिल्ली के एक विशाल हाल में मनाया गया। इस अवसर पर 'पिता श्री' के चित्र का अनावरण प्रैस आयोग के चेयरमैन न्यायमूर्ति पी० के० गोस्वामी जी ने किया तथा सर्वोच्च न्यायालय के न्यायधीश भ्राता कृष्णा अय्यर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। अनेक धर्मों के 'नेता' व 'महिमा संगठन' के अधिकारी भी पधारे थे जिन्होंने 'पिताश्री' के सम्मान में अपनी श्रद्धांजली अर्पित की। इस दिन सभी सेवा-केन्द्रों पर विशेष योगअभ्यास का कार्यक्रम भी रहा। दैनिक समाचार पत्र "नवभारत टाईम्स", "हिन्दुस्तान टाईम्स" तथा "इन्डियन ऐक्सप्रेस" के प्रथम पृष्ठ पर 'पिताश्री ब्रह्मा' व शिव बाबा की फोटो सहित 'जीवन कहानी' व शिक्षाएं प्रकाशित की गई। हजारों लोगों को ईश्वरीय सन्देश एवं शिक्षाओं के 'फोल्डर' भी बांटे गये। इसके अतिरिक्त 'अन्तर्राष्ट्रीय राजयोग दिवस' भी सभी सेवा-केन्द्रों पर बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

सम्बलपुर में बालवर्ष समारोह—सम्बलपुर के विभिन्न स्कूलों में 'बालवर्ष' के अन्तर्गत ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए जिसमें विद्यार्थियों को चरित्र-निर्माण की शिक्षा दी तथा परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया गया। इसके अतिरिक्त निकटवर्ती ग्राम छिपलीयाँ में विश्व नव-निर्माण प्रर्दशनी द्वारा अनेकानेक आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

मैनपुरी में बाल चरित्र-निर्माण प्रदर्शनी—मैनपुरी सेवा केन्द्र की ओर से वहां के विभिन्न कालेजों एवं स्कूलों में बाल 'चरित्र-निर्माण प्रर्दशनी' का आयोजन किया गया जिससे अनेकानेक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने लाभ उठाया इनमें से 'रामचन्द्र कन्या इन्टर कालेज', डी० ए० वी० इन्टर कालेज, 'चित्रगुप्त इन्टर कालेज', 'जवाहरलाल नेहरु स्मारक इन्टर कालेज' का नाम उल्लेखनीय है।

ऊन्ना में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम—ऊन्ना उप-सेवा केन्द्र की ओर से 'बालवर्ष' के उपलक्ष में वहाँ के जंजघट में आध्यात्मिक प्रवचनों, शिक्षाप्रद नाटक, गीत व कविताओं का कार्यक्रम हुआ जिससे सभी वर्ग के हजारों लोगों ने लाभ उठाया। बच्चों ने इस कार्यक्रम में विशेष रुची ली।

भीलवाड़ा में बाल-चरित्र उत्थान सप्ताह—भीलवाडा में बालवर्ष के उपलक्ष में एक सप्ताह के आध्यात्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया जिसका उद्घाटन भूतपूर्व संसद सदस्य भ्राता रूपलाल सोमानी ने किया। इस अवसर पर आयोजित 'बाल प्रतियोगिता में विजेता बच्चों को पुरस्कार भी वितरित किया गया। स्थानीय समाचार पत्रों में भी इस कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण प्रकाशित हुआ।

मुरादाबाद में आध्यात्मिक कार्यक्रम—मुरादाबाद सेवा केन्द्र की ओर से वहां के टाउनहाल में बालवर्ष समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर शहर के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों के अतिरिक्त विभिन्न स्कूलों के लगभग २५० विद्यार्थी एवं शिक्षक भी उपस्थित थे जिन्होंने सारे कार्यक्रम

की बहुत सराहना की।

कानपुर (नयागंज) द्वारा बाल वर्ष समारोह—कानपुर (नयागंज) सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ के जुहारीदेवी गर्ल्स इन्टर कालेज तथा डिगरी कालेज में बाल-उत्थान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे हज़ारों विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने लाभ उठाया।

पणजी (गोवा) के निकटवर्ती स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी—पणजी (गोवा) में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रोजैक्टर शो एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया जिससे सभी वर्ग के हज़ारों लोगों ने लाभ उठाया। यह प्रदर्शनी सावलवाडी के विहल मन्दिर', 'कुड्डाल शहर के टोपीवाला वाचनालय' तथा 'बेगुली नामक शहर के रामेश्वर मन्दिर' के प्रांगण में की गई थी। इस कार्यक्रम से अनेक कालेजों के विद्यार्थियों व शिक्षकों ने भी लाभ उठाया।

छिबरामऊ (फ़रुखाबाद) में बाल रैली एवं वक्तव्य स्पर्धा—फ़रुखाबाद में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से छिबरामऊ के हीरालाल इन्टर कालेज के प्रांगण में एक बाल रैली एवं वक़्तव्य स्पर्धा का आयोजन किया गया जिसमें अनेक कालेजों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। विजेता बच्चों को पुरस्कार भी वितरित किया गया।

जगन्नाथपुरी एवं चाँदपुर में बाल वर्ष समारोह—पुरी में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से विभिन्न स्थानों पर बाल रैली का आयोजन किया गया जिसमें कई स्कूलों के बच्चों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त चांदपुर तथा पुरी के स्कूलों में बाल-उत्थान प्रदर्शनी व प्रोजैक्टर शो का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा।

श्री गंगानगर में बाल वष समारोह—श्री गंगानगर सेवा केन्द्र द्वारा वहाँ के विभिन्न स्कूलों में 'बाल उत्थान प्रदर्शनी' एवं प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिससे हज़ारों विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने लाभ-उठाया इस अवसर पर आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में विजेता बच्चों को पुरस्कार भी दिया गया तथा शहर के मुख्य भागों से एक 'बाल रैली' भी निकाली गई।

कोटा में चरित्र-निर्माण प्रदर्शनी—कोटा की जनता को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु वहाँ की विज्ञान-नगर कालोनी में राजयोग एवं चरित्र-निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन नगर विकासन्यास के अध्यक्ष भ्राता हरिकुमार औदित्य जी ने किया। प्रदर्शनी को सभी वर्ग के हज़ारों लोगों ने देखा और इससे श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने की प्रेरणा ली।

सोलन के निकटवर्ती स्थानों पर ज्ञान की गजगोर—सोलन सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ के निकटवर्ती ग्रामों स्पाटू, कुनिहार तथा कुठार में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे हज़ारों लोगों ने लाभ-उठाया।

जालन्धर में बाल वर्ष समारोह—जालन्धर सेवा केन्द्र की ओर से बालवर्ष के उपलक्ष में आध्यात्मिक प्रवचनों, भाषण प्रतियोगिता, एवं शिक्षाप्रद नाटकों का सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया जिससे अनेक स्कूलों के विद्यार्थियों ने लाभ-उठाया।

होशियारपुर में बालवर्ष समारोह—होशियारपुर के ऊधमसिंह पार्क में सार्वजनिक प्रवचनों गीतों एवं नाटकों का कार्यक्रम हुआ तथा बाल-उत्थान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसे शहर के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों के अतिरिक्त अनेक स्कूलों के बच्चों एवं शिक्षकों ने देखा और लाभ उठाया।

बंगलौर में बाल वर्ष समारोह—बंगलौर (मरियप्पा एवं नील मंगला) में स्थित सेवा केन्द्रों की ओर से बाल वर्ष के उपलक्ष में 'बाल रेली' एवं 'बाल 'उत्थान प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न स्कूलों के हज़ारों बच्चों ने भाग लिया। इस अवसर पर बच्चों को 'वक़्तव्य स्पर्धा' का आयोजन भी किया गया तथा विजेता बच्चों को पुरस्कार दिया गया।

बम्बई (गोरे गाँव) में 'बाल उत्थान प्रदर्शनी एवं अन्य कार्यक्रम—बम्बई (गोरे गाँव) सेवा केन्द्र की ओर से प्रमुख भागों से बाल वर्ष के उपलक्ष में शिक्षा प्रद झाकियाँ एवं शोभा यात्रा निकाली गई। इस अवसर पर बाल उत्थान प्रदर्शनी व वक्तव्य स्पर्धा का भी आयोजन किया गया तथा विजेता बच्चों को पुरस्कार भी दिया गया। □

जगदीश चन्द्र हसीजा, सम्पादक, एवं प्रकाशक, १५१ ई, कमला नगर, दिल्ली ने गगन प्रिंटर्स, कृष्ण नगर, दिल्ली-५१ से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D (D) 178

यह चित्र दतियाना (पटना) में आयोजित टीचरस ट्रेनिंग क्लास का है। ब्र० कु० निर्मल शान्ता व अन्य बहनों के साथ विभिन्न स्थानों से आई हुई कन्याएँ दिखाई दे रही हैं।

इस चित्र में पालिताना में आयोजित राजयोग शिविर का उद्घाटन करने के पश्चात वहाँ की नगर पालिका के प्रमुख भ्राता नारायण भाई प्रवचन कर रहे हैं। मंच पर डिप्टी कलेक्टर व ब्र० कु० भारती, गीता एवं गोविन्द भाई बैठे हैं।

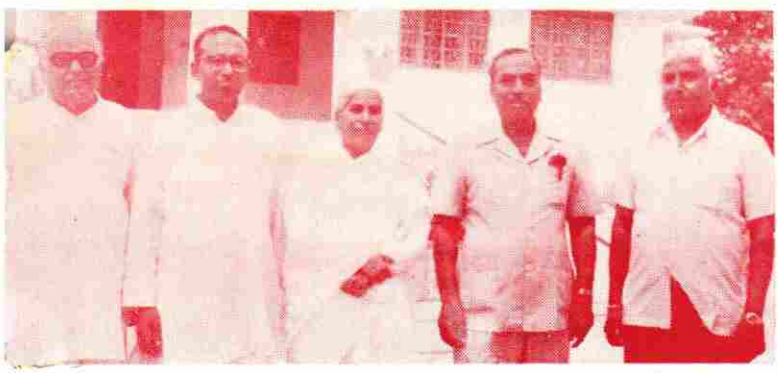

चित्र में 'हिन्दुस्तान समाचार' के जनरल मैनेजर भ्राता बालेश्वर प्रसाद तथा सिरोही के सम्वाददाता आबू में 'राजयोग शिविर' करने के पश्चात् ब्र० कु० मनोहर इन्द्रा, ब्र० कु० जी के साथ खड़े हैं।

नीचे के चित्र में मुक्तिधाम (नासिक) में प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् वहां के नगराध्यक्ष भ्राता अप्पा साहेब अपने विचार लिख रहे हैं।

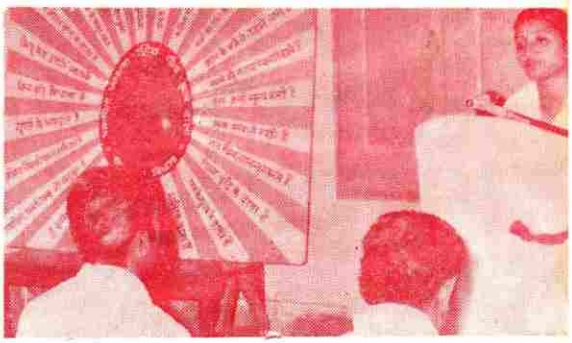

चित्र में रोहतक एवं झज्झर सेवा केन्द्रों द्वारा बानेपूर ग्राम में आयोजित प्रदर्शनी को समझाने के पश्चात वहाँ के सरपंच को ब्र० कु० आभा तथा अनोखी ईश्वरीय साहित्य भेंट कर रही हैं।

यह चित्र बम्बई (घाटकूपर) सेवा केन्द्र द्वारा हिंगण घाट के गीता मन्दिर में आयोजित प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह के अवसर का है। ब्रह्माकुमारी बहन प्रवचन कर रही है।

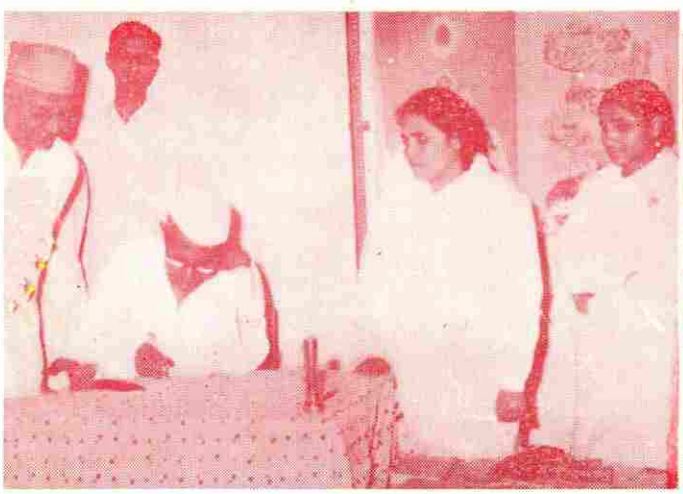

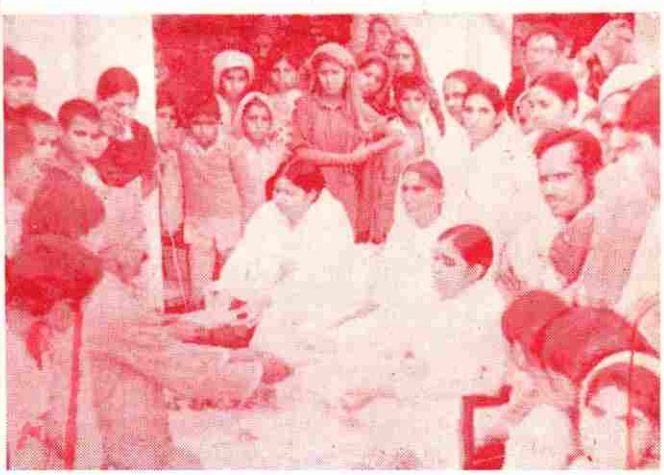

Regd. No. 10563/95-D(D)

यह चित्र बम्बई (गामदेवी) सेवा केन्द्र द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय बालवर्ष समारोह के अवसर पर निकाली गई शान्ति-यात्रा के अवसर का है। विभिन्न स्कूलों के बच्चों का ग्रुप हाथ में बैनर्स व झण्डा लिये हुए दिखाई दे रहे हैं।

पुरी में 'उड़िया पत्रिका' का उद्घाटन करने के पश्चात् ब्र० कु० निर्मलशान्ता जी वहां के बहन-भाईयों के साथ दिखाई दे रही है। →

दसुआ में आयोजित बाल वर्ष समारोह में ब्र० कु० राज जी प्रवचन कर रही हैं। साथ में ब्र० कु० शुक्ला एवं ज्ञानी जी बैठी हैं। ↓

यह चित्र पालनपुर में आयोजित 'बाल उत्थान प्रदर्शनी' के उद्घाटन समारोह के अवसर का है। ब्र० कु० सरला प्रवचन कर रही हैं। मंच पर वहां के सिविल सर्जन, व अन्य बहन भाई बैठे हैं। ↓

'ग्वालियर मेले' में आयोजित 'बाल उत्थान प्रदर्शनी' का उद्घाटन करने के पश्चात् मध्यप्रदेश सरकार के विद्युत एवं उद्योगमंत्री भ्राता कैलाशचन्द जोशी वहां के बहन-भाईयों के साथ खड़े हैं।